॥ ओ३म् ॥

आर्य भजनोपदेशक

व्यक्तित्व एवं कृतित्व



युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

-: प्रकाशक :-
वैदिक मिशन
मुम्बई



आदर्श आर्य दम्पती

स्व. श्री जवाहरलालजी आर्य एवं श्रीमती दुर्गादेवी आर्या



2·3

॥ ओ३म् ॥

आर्य भजनोपदेशक

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

• लेखक •

डा. भवानीलाल भारतीय

सुश्री नन्दिता शास्त्री





• सम्पादक •

डा. सोमदेव शास्त्री

प्रकाशक

वैदिक मिशन मुंबई

प्रथम संस्करण　　२००९　　मूल्य

प्रति १०००　　५० रुपये

प्राप्ति स्थान

- **सोमदेव शास्त्री**
  अध्यक्ष - वैदिक मिशन मुम्बई
  ३०९ मिल्टन अपार्टमेन्ट,
  जुहू कोलिवाड़ा, मुम्बई -४०० ०४९.
  चलभाष : ९८६९९६६८१३०

- **श्री नरेशदत्त आर्य**
  मन्त्री आर्य भजनोपदेशक परिषद
  ग्राम-बहादरपुर, जि. बिजनौर (उ.प्र.)
  चलभाष : ९४११४२८३१२

- **स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती**
  ११९ गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली - ४९.
  चलभाष : ९८६८८५५१५५

प्रथम संस्करण
विक्रम संवत् २०६५
सन् २००९

मुद्रक :-
निराला मुद्रक
१४० साने गुरुजी मार्ग,
मुम्बई-४०० ०११.
दूरभाष : ९३२२५९५८४७

अनुक्रमणिका



उपदेशकों की दशा

शीष पर बिस्तर और बगल में छतरी लगी,
एक हाथ बैग दूजे बालटी संभाली है।
दिन गया धक-धक में रात गई बक-बक में,
कभी है अपच और कभी पेट खाली है।
जंगल में सलूना और सड़क पै दशहरा मना,
मोटर में होली और रेल में दिवाली है।
पुत्र मरा सावन में और पत्र मिला फागुन में,
'ठाकुर' इन उपदेशकों की दशा भी निराली है ।।

- ठाकुर कवि

सम्पादकीय ......

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में आर्य भजनोपदेशकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वैदिक मान्यताओं को सुमधुर गीतों-भजनों के द्वारा महानगरों से लेकर छोटे छोटे ग्रामों में पहुँचाने का श्लाघनीय प्रयास भजनोपदेशकों ने किया है। भजनोपदेशकों की सुमधुर संगीत स्वर-लहरी से आकर्षित होकर अबाल वृद्ध पठित-अपठित, धनी-निर्धन सभी वैदिक मन्तव्यों को सुनने के लिये एकत्रित हो जाते रहे हैं। भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों को जन जन तक पहुँचाने में भजनोपदेशक सफल रहे हैं। वैदिक धर्म के प्रचार में भजनोपदेशकों ने बहुविध कष्ट उठाये हैं। प्रचारार्थ बाहर रहने के कारण परिवार की ओर ध्यान नहीं दे पाते जिससे उनके पारिवारिक जीवन में विघ्न भी आते हैं किन्तु ये महानुभाव अपने घर को उजाड़ कर दूसरों के घर को बनाने में दिन रात प्रयत्नशील रहते हैं। इनकी होली-दीवाली बसों में, या बस स्टैंण्ड पर, रेल्वे स्टेशन पर या रेल में यात्रा करते करते व्यतीत होती है। इनकी स्थिति का वर्णन करते हुए **ठाकुर कवि** ने ठीक ही लिखा है -

दिन गया धक धक में, रात गई बक बक में।
मोटर में होली और रेल में दिवाली है॥
पुत्र मरा सावन में और पत्र मिला फागुन में।
ठाकुर इन उपदेशकों की दशा भी निराली है॥

भजनोपदेशकों के तप-त्याग और समर्पित जीवन के प्रति समूचा आर्य जगत् इनका ऋणी रहेगा। इनके उपकारों के प्रति नतमस्तक होने की दृष्टि से मैंने आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् शताधिक पुस्तकों के लेखक श्रद्धेय डा. भवानीलाल जी भारतीय से कुछ भजनोपदेशकों का इतिवृत्त लिखने के लिये निवेदन किया। मेरे निवेदन को स्वीकार करके डा. भारतीय जी ने मेहता अमीचन्द से लेकर स्वामी स्वरूपानन्दजी पर्यन्त ग्यारह भजनोपदेशकों का जीवन परिचय लिखा। शेष स्वामी शंकरानन्दजी से लेकर कु. वीरेन्द्रजी वीर पर्यन्त शेष१९ भजनोपदेशकों का संक्षिप्त परिचय मैंने विविध पुस्तकों से लेकर लिखा है। इनके परिचय के साथ इनके प्रसिद्ध भजन भी दिये है। शेष १७६ भजनोपदेशकों के नाम पतादि दिया है जो दिवंगत हो गये हैं। इनके नामों का संकलन करने में श्रद्धेय ओम्प्रकाशजी वर्मा यमुनानगर (हरि.) ने बहुत परिश्रम किया। इन भजनोपदेशकों के नाम में कहीं त्रुटि, या न्यूनाधिकता न हो जाय इसलिये इसकी जानकारी के लिये यह नामावली मैंने श्री

बेगराज जी आर्य, श्री सत्यपालजी पथिक, श्री मामचन्दजी आर्य, श्री सत्यपालजी मधुर, स्वामी प्रणवानन्दजी आदि को देखने के लिये भेजा तथा सभी की ओर से संशोधित होने पर इसे आकारादि क्रम से दिया है फिर भी यदि कुछ नाम छूट गये हो या कोई त्रुटि रह गयी हो तो पाठकों द्वारा सूचित करने पर इसे ठीक कर दिया जायेगा।

दिवंगत भजनोपदेशकों की नामावली के पश्चात् इस समय कितने आर्य भजनोपदेशक/भजनोपदेशिका, भजन गायक और गायिका तथा भजनोपदेशकों के सहयोगी (ढोलक और तबला वादक) हैं, इनका नाम-पता-दूरभाषादि भी दिया है। इस कार्य में श्री नरेशदत्तजी आर्य ने बहुत बड़ा सहयोग किया है।

इतना सब कुछ होने पर इसके प्रकाशन के व्यय की चिन्ता थी। मैं आर्य समाज सिलीगुड़ी के वार्षिकोत्सव (९ से ११ जनवरी २००९) पर सिलीगुड़ी गया (वहां पर मैंने आर्य समाज सिलीगुड़ी के मन्त्री श्री सत्येन्द्रजी आर्य (पुत्र स्व. श्री जवाहरलालजी आर्य) और इनके बड़े भाई श्री सुभाषजी आर्य एवं श्री आनन्दजी आर्य (मन्त्री आर्य समाज बड़ा बाजार कलकत्ता) से प्रकाशन के विषय में चर्चा की। इन्होंने मुझे आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त करते हुए अपने परिवार की ओर प्रकाशन व्यय की व्यवस्था कर दी। इसके लिये इनका मैं बहुत आभारी हूँ। इस परिवार का मेरे प्रति बहुत ही आत्मीय स्नेहभाव है। आर्य भजनोपदेशकों के प्रति मैं कुछ कर सकूं इसके लिये मुझे श्री चौ. मित्रसेनजी (रोहतक) स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा) स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली) ने मुझे बहुत ही प्रोत्साहित किया और सहयोग प्रदान किया।

मैं श्रद्धेय डा. भवानीलालजी भारतीय, श्री ओम्प्रकाशजी वर्मा, स्वा. धर्मानन्दजी, स्वा. प्रणवानन्दजी, चौं. मित्रसेनजी एवं श्री आनन्दजी आर्य (पुत्र स्व. श्री जवाहरलालजी आर्य) और इनके चारों भाई तथा श्री दीनदयाल गुप्त प्रधान आर्य समाज बड़ा बाजार कोलकाता का बहुत अनुगृहीत हूँ, इन सभी के स्नेह-सहयोग और प्रोत्साहन के फलस्वरूप यह पुस्तक आपके हाथों में है। मानव स्वभाव जन्य इसमें कोई न्यूनता रह गयी हो तो प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि अवगत करावें जिससे अगले संस्करण में ठीक किया जा सके।

विदुषामनुचर

- सोमदेव शास्त्री

अध्यक्ष - वैदिक मिशन मुम्बई

प्राक्कथन

प्रबुद्ध वैदिक विद्वान् डा. सोमदेवजी शास्त्री की प्रेरणा से दिवंगत आर्य भजनोपदेशकों के संक्षिप्त इतिवृत्त की यह प्रथम किस्त पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। इसमें विवेचित ऋषि दयानन्द के समकालीन भक्त अमीचंद मेहता, महात्मा कालूराम योगी तथा पं. बस्तीराम तीनों आर्य समाज के प्रारम्भ कालीन तथा स्वामीजी के सम्पर्क में आये भजनोपदेशकों के साथ साथ बीसवीं शताब्दी के लगभग प्रथम दशक में जन्मे आठ अन्य भजनोपदेशकों के जीवन एवं कार्य की एक संक्षिप्त रूपरेखा दी गई है। भविष्य में इस पुस्तकमाला के कुछ अन्य पुष्प भी भेंट किये जायेंगे । इन ग्यारह भजनोपदेशकों में काव्यरचना की शक्ति सर्वत्र दिखाई देती है। काव्य प्रणयन की उनकी प्रतिभा का भी आकलन किया गया है।

वस्तुत: वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को दिग्दिगन्त व्यापी बनाने में भजनोपदेशकों की गायन तथा काव्यकला भूमिका को यद्यपि समझा तो गया है किन्तु इन प्रतिभा सम्पन्न प्रचारकों के इतिवृत्त संरक्षण की ओर हमनें ध्यान नहीं दिया।

न केवल नगरों अपितु भारत की धड़कन तुल्य ग्रामों तक वैदिक संदेश को पहुंचाने वाले इन भजनोपदेशकों के कृतित्व का मूल्यांकन सहज नहीं है। सरल, लोकग्राह्य तथा जनमत को प्रमुदित करनेवाली अपनी व्याख्यान और गायन शैली से न केवल जन साधारण अपितु महात्मा गांधी जैसे विश्वपूज्य महापुरुष को मुग्ध कर देनेवाले (देखे कुं. सुखलाल का वृत्तान्त) इस गायक प्रचारक वर्ग ने देश, धर्म, राष्ट्रीयता तथा संस्कृति को नवजीवन देने में जो योगदान दिया है वह भुलाने की वस्तु नहीं है।

प्रस्तुत कृति में जिन भजनोपदेशकों का जीवन एवं कार्यवृत्त संकलित किया गया है वह कालक्रम से है, यद्यपि कुछ की जन्म तिथियां लेखक के ज्ञान में नहीं आई। आशा है धर्मप्रचारकों के इस कर्तृत्व से परिचित होकर भारत में वैदिक धर्म के महाजागरण में गायन के माध्यम से जनजागरण का जो महत् अनुष्ठान सम्पन्न हुआ, उसकी यत्किञ्चित झलक पाठकों को मिल सकेगी।

– भवानीलाल भारतीय

कार्तिक पूर्णिमा २०६५

शान्तिनिकेतन, ३/५ शंकर कालोनी श्री गंगानगर, राजस्थान

आदर्श आर्य दम्पती



स्व. श्री जवाहरलालजी आर्य एवं श्रीमती दुर्गादेवी आर्या

स्व. श्री जवाहरलालजी आर्य का जन्म सन् १९२४ में हरियाणा के देवराला गाँव में एक संभ्रान्त आर्य समाजी अग्रवाल परिवार में हुआ था। आठ वर्ष की अल्पायु में पिता के स्वर्गवास के कारण पितृतुल्य बड़े भाई श्री गोविन्दराम जी आर्य ने इनका पालन-पोषण किया। आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर गोविन्दराम जी आर्य का आर्य समाजी बनने के कारण इनका पूरा परिवार महर्षि दयानन्द का निष्ठावान् अनुयायी बन गया। अपनी शिक्षा देवराला, भिवानी एवं पिलानी में पूर्ण करके ये व्यवसाय के लिए सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल) आ गये। परमात्मा की दया से उन्होंने व्यापार में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की और अपना व्यापार सिलीगुड़ी के साथ-साथ कोलकाता तक फैलाया। आकर्षक व्यक्तित्व और मेधा-बुद्धि के धनी स्वर्गीय जवाहरलाल जी आर्य गंभीर तथा विचारवान् व्यक्ति थे। स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के प्रति उनकी पूर्ण आस्था थी। इस कारण सन् १९६३ में उन्होंने अपने विशेष प्रयास और स्थानीय लोगों के सहयोग से सिलीगुड़ी आर्य समाज की स्थापना की तथा स्व.श्री जवाहरलालजी आर्य सिलीगुड़ी आर्य समाज के कोषाध्यक्ष, मन्त्री एवं प्रधान के पदों पर रहते हुए आर्य समाज के स्थापना काल से सेवा करते रहे।

उनके प्रत्येक प्रयास में उनके सिद्धान्तों के अनुकूल समर्पित उनकी पत्नी स्वर्गीया दुर्गादेवी आर्या का पूर्ण सहयोग रहा करता था। कोमल हृदया दुर्गा देवी जी धर्म परायणा होने के साथ-साथ दान-दया भाव की धनी थी। उनसे किसी का कष्ट देखा नहीं जाता था और वे यथासम्भव जरुरतमन्दों की सहायता करती रहती थी। पति की मृत्यु के पश्चात् श्रीमती दुर्गादेवी ने परिवार का संचालन बहुत ही कुशलता से किया जिसका परिणाम था कि उनके पांचों पुत्रों का संयुक्त परिवार काफी वर्षों तक यथावत् चलता रहा कहीं भी आर्थिक सहायता का मां का आदेश पांचो पुत्र स्वीकार करने में सोचते नहीं थे। इस आर्य दम्पती ने अपना पूरा जीवन वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल बनाया। इनके आदर्श पूर्ण जीवन-यापन के कारण इनके परिवार के सभी सदस्य भी वैदिक मिशन के पक्के अनुयायी बन गये। परिवार का जो भी सदस्य जहाँ भी है वहीं वेद प्रचार कार्य करने में लगा हुआ है। आर्य दम्पती ने आर्य समाज और विशेष कर सिलीगुड़ी आर्य समाज को अपना पूर्ण जीवन लगाकर सींचा है। आर्य जगत् के बहुत से गुरुकुलों में इनके द्वारा आर्थिक सहायता दी गयी, कई विद्वान् एवं प्रचारक उनके द्वारा दी गई छात्रवृत्ति के कारण अपना विद्याध्ययन पूरा कर पाए। स्वर्गीय जवाहरलाल जी एवं स्वर्गीया दुर्गादेवी जी ईश्वर के प्रति अटूट आस्था रखते थे। दैनिक सन्ध्या एवं यज्ञ उन दोनों के जीवन का अभिन्न अंग था। उनका यह आदर्श उनके पांचों पुत्रों (आनन्दजी आर्य, सुभाषजी आर्य, अशोकजी आर्य, रवीन्द्रजी आर्य तथा सत्येन्द्रजी आर्य) ने भी अपनाया हुआ है।

अपने पूज्य माता-पिता के आदर्शों का अनुसरण करते हुए श्री आनन्दजी आर्य एवं इनके सभी भाइयों ने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का श्लाघनीय कार्य किया है।

विनीत,

- सोमदेव शास्त्री

"वैदिक मिशन मुम्बई" का संक्षिप्त कार्य-विवरण

विगत चार वर्षों से 'वैदिक मिशन मुम्बई' वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के कार्यों में संलग्न है। अंग्रेजी पठित व्यक्तियों को संस्कृत भाषा का शिक्षण तथा वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान देना इस मिशन का उद्देश्य रहा है। पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा घर बैठे हुए व्यक्ति वैदिक मान्यताओं का हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में ज्ञान प्राप्त कर सके इसके लिए यह संस्था प्रयत्नशील है।

वैदिक मान्यताओं के प्रचार हेतु वैदिक मिशन की ओर से सन् २००६ में 'वेद-गोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें **"वेदों में सामाजिक संगठन और याज्ञिक प्रक्रिया"** विषय पर शोधपत्र पढ़े गये और उसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

सन् २००७ में **"अखिल भारतीय आर्य पुरोहित सम्मेलन"** का आयोजन किया गया जिसमें लगभग १०० पुरोहितों ने भाग लिया जिसमें याज्ञिक प्रक्रिया में एकरूपता हो इस विषय पर विचार मन्थन हुआ। **'सार्वदेशिक धर्मार्य सभा'** द्वारा निर्धारित याज्ञिक प्रक्रिया को समस्त आर्य समाजें पूर्ण रूपसे अपनाएं यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया।

सन् २००८ में आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें ६२ उपदेशकों ने भाग लिया। भजनोपदेशकों का संगठन **"आर्य भजनोपदेशक परिषद्"** का गठन किया गया । इस अवसर पर गाये गये भजनों की कैसेट व सी.डी. भी तैयार की गयी। इस कार्यक्रम का सफल संचालन वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डा. सोमदेव शास्त्री जी ने किया।

१४-१५ मार्च २००८ को **'आर्य महिला उपदेशिका सम्मेलन'** किया गया। जिसमें 'नारी उत्थान में ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का योगदान' इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया तथा डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित पुस्तक "आर्य भजनोपदेशक व्यक्तित्व और कृतित्व" का विमोचन किया गया।

उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त यह मिशन प्रतिवर्ष विद्वानों का अभिनन्दन भी करता रहा है। सन् २००६ में श्री दीनानाथ शास्त्री और उनकी पत्नी श्रीमती गायत्री देवी (अमेठी) को ग्यारह हजार रुपये से सम्मानित किया।

सन् २००७ में पुरोहित सम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) का दो लाख पचास हजार रुपये से अभिनन्दन किया गया।

सन् २००८ में भजनोपदेशक सम्मेलन क अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. बेगराज जी आर्य और श्री पं. बृजपाल जी कर्मठ का पन्द्रह-पन्द्रह हजार रुपये से अभिनन्दन किया गया।

सन् २००९ में पं. ताराचन्द जी वैदिक तोप (नारनौल, हरियाणा) का ग्यारह हजार रुपये देकर अभिनन्दन किया गया। इस प्रकार यह 'वैदिक मिशन मुम्बई' वैदिक प्रचार एवं प्रसार के कार्य में सदा अग्रसर है।

संदीप आर्य

मन्त्री - वैदिक मिशन मुम्बई

भजनोपदेशक सम्मेलन (२९-३० मार्च २००८) सफलतापूर्वक सम्पन्न

प्रस्तुतकर्ता - डा. कुशलदेव शास्त्री

''महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने वेदभाष्य में अध्यापक और उपदेशक के लिए जो अनिवार्य कर्तव्य बताया है, वह यह है कि इन दोनों को बादलों के समान यत्र-तत्र-सर्वत्र ज्ञानामृत की वर्षा करनी चाहिए। योगी से भी अधिक उपदेशक की यह जिम्मेदारी है क्योंकि योगी केवल अपने जीवन का मालिक होता है, जब कि उपदेशक अपने साथ अपनी जनता जनार्दन के भी चरित्र का निर्माता होता है। मेरी दृष्टि में आर्य समाज के उत्थान में उपदेशक का शत प्रतिशत योगदान है, तो भजनोपदेशक का १२५ प्रतिशत योगदान है।

मुझे हमारे इन भजनोपदेशकों पर केवल प्रचारक होने के नाते गर्व नहीं है अपितु इनमें वेद आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति जो अनन्य निष्ठा और तड़प है, उसके कारण मैं गौरव का अनुभव करता हूँ। भजनोपदेशक बादलों के समान ज्ञानामृत की वर्षा करते रहे। उपरोक्त सारगर्भित विचार **स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती** (संचालक-गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली) ने वैदिक मिशन मुंबई द्वारा आर्य समाज काकड़वाड़ी में आयोजित भजनोपदेशक सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अभिव्यक्त किए।

उक्त समारोह के विशिष्ट अतिथि थे सर्वश्री मिठाईलाल सिंहजी (मुंबई), विट्ठलराव जी आर्य (हैदराबाद) आचार्य दयासागर जी (छत्तीसगढ़), दीनदयाल जी गुप्त (कोलकाता) सुरेशजी अग्रवाल (गुजरात)। स्वागत वक्तव्य वैदिक मिशन मुंबई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी शास्त्री ने तथा उद्घाटन भाषण आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी ने दिया। समारोह को लोकप्रिय एवं यशस्वी बनाने के लिए वैदिक मिशन मुंबई तथा आर्य समाज काकड़वाड़ी के मंत्री श्री राजेंद्रनाथ जी पांडेय तथा उनके सहयोगियों ने विशेष प्रयास किया। भजनोपदेशक सम्मेलन में समस्त भारत वर्ष से ६२ भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। समालोचकों की नजरों में पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार और श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री के बाद डा. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा आयोजित यह तीसरा अखिल भारतीय भजनोपदेशक सम्मेलन था।

इस अवसर पर आर्य समाज के दो ज्येष्ठ श्रेष्ठ भजनोपदेशकों सर्वश्री पं. वृजपाल जी कर्मठ और पं. वेगराजजी आर्य का अभिनंदन किया गया। वैदिक मिशन मुंबई की ओर से 'अभिनंदन पत्र', मोतियों के हार, ट्रॉफी, शाल और १५ हजार का ड्राफ्ट प्रदान कर दोनों ही सम्माननीय वरिष्ठ भजनोपदेशकों का मुंबई महानगरीय आर्य जनता और ६२ भजनोपदेशकों की उपस्थिति में यह भावभीना स्वागत किया गया।

अभिनंदन समारोह रविवार ३० मार्च २००८ को ठीक बारह बजे प्रारंभ हुआ। अभिनंदन समारोह से पूर्व डा. सोमदेव जी शास्त्री के प्रतिभाशाली सुपुत्र प्रणव ने जो दस मिनिट तक अंग्रेजी में भाषण दिया, वह विद्वत्ता, अनुसंधान और गहन अध्ययन का प्रतीक था, जिसका समस्त भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित करने की मांग उपस्थित श्रोताओं ने की।

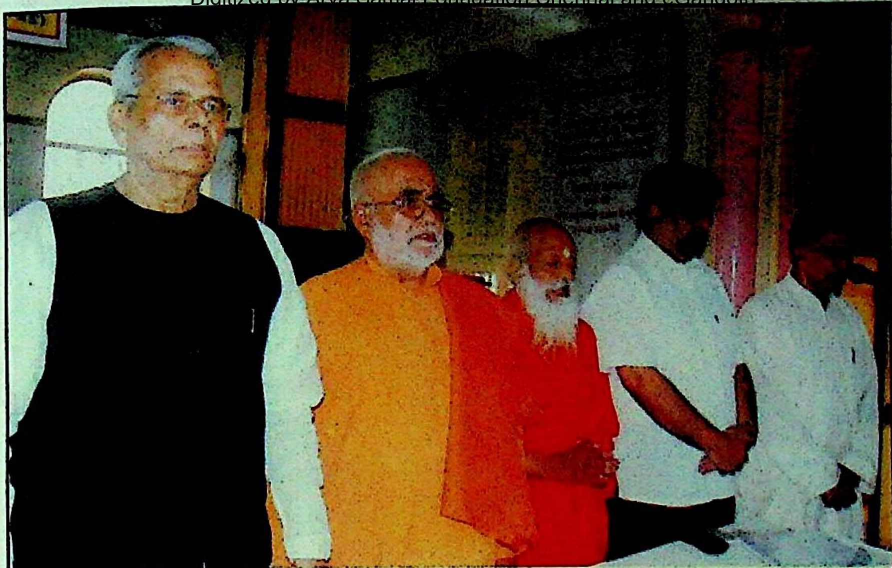
समारोह की **अध्यक्षता** करते हुए **स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती** ने कहा, जब तक उपदेशक सक्रिय रहेंगे, तभी तक आर्य समाज जीवित रहेगा। भजनोपदेशकों का अभिनंदन एक प्रकार से आर्य समाज का ही अभिनंदन है। आर्य समाज को बढ़ाना, फैलाना और विस्तार करना वस्तुतः ऋषि का ही पवित्र कार्य है।

मुंबई, हैदराबाद, छत्तीसगढ़, गुजरात बंगाल आदि के प्रांतीय आर्य संगठन के पदाधिकारियों ने दस दस भजनोपदेशकों का आर्थिक दृष्टि से सहयोग करने की घोषणा की। माननीय श्री वृजपाल जी कर्मठ ने अभिनंदन के संदर्भ में प्रत्युत्तर देते हुए कहा, ''जीवन पर्यन्त ऋषि का कार्य करने के लिए आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। मेरे पूज्य गुरुवर अभयराम जी का आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहा है।

पं. वेगराज जी अपनी हमेशा की वेशभूषा-गांधी टोपी, सफेद कुर्ता, धोती पहने हुए थे और उनका वक्षस्थल आर्यजनों द्वारा श्रद्धा भाव से पहनाई गई मोतियों की मालाओं से सुसज्जित था। इस ऐतिहासिक अवसर पर पं. वेगराज जी ने अपने आंतरिक भावों को अभिव्यक्त करते हुए कहा-''आज हम अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझते हैं। स्वामी दयानन्द के चरणरज से पवित्र इस स्थान पर आर्य समाज मुम्बई में हमें जो आपने सम्मान दिया, उसे हम कभी भूलेंगे नहीं। हमारी दृष्टि में राशि का मूल्य नहीं, अपितु आपकी हार्दिक भावना का मूल्य है। राशि महत्त्वपूर्ण नहीं, श्रद्धा महत्त्वपूर्ण है। आपके इस पंद्रह हजार का मूल्य मेरे लिए १५ लाख के समान है।

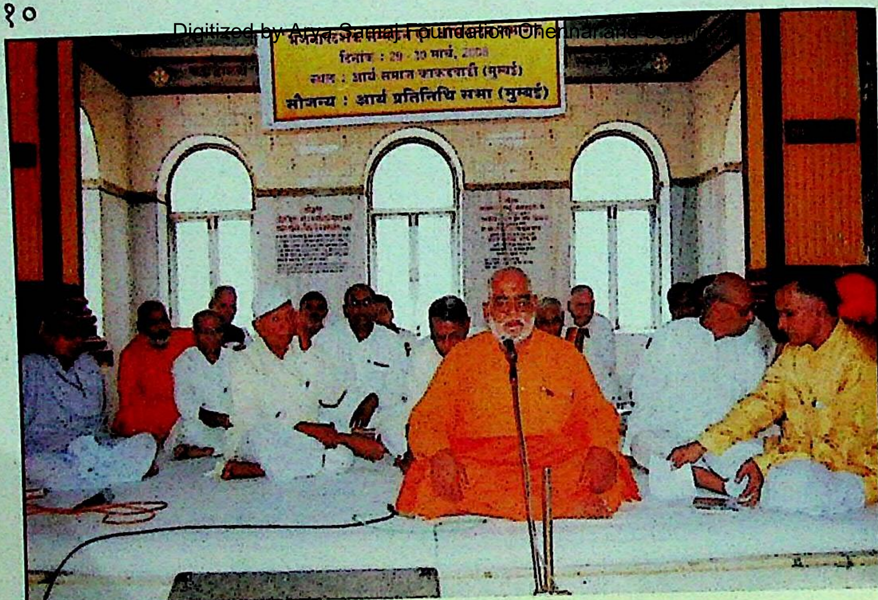
मेरे गुरु पं. शिवलाल जी दिल्ली-फरीदाबाद-वल्लभगढ़ क्षेत्र में दूसरे दयानन्द माने जाते थे। उनके पैरों में न जूतियाँ होती थीं, न सिर पर कपड़ा, बस वे एक कपड़ा ओढ़ते थे और धोती पहनते थे। मेरी गायन शैली से प्रभावित होकर सन् १९४६ में ज़ब मुझे फिल्म में बुलाया गया, तब मेरे गुरुदेव शिवलाल जी ने कहा, -'बेटा, **मैंने तुम्हें दयानन्द और आर्य समाज के गीत गाने के लिए तैयार किया था, फिल्म में गीत गाने के लिये नहीं।'** तब से मैं निरंतर नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे दयानन्द के गीत गा रहा हूँ।

आप सबसे मेरा एक निवेदन है। २४ घंटे भगवान् की भक्ति में इतने न डूबो कि आपको दयानन्द और उसके आर्य समाज के प्रचार प्रसार का भी ध्यान न रहे। हमें भी दयानन्द का दर्द है। आर्य जगेगा तो देश बचेगा।



भजनोपदेशक सम्मेलन (२९-३० मार्च २००८) के अवसर पर उपस्थित श्री मिठाईलाल सिंहजी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली), स्वामी सर्वानन्द जी (मन्दसौर,म.प्र.), श्री अरुणजी अबरोल (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), डा. सोमदेवजी शास्त्री (अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई)

श्री संदीप आर्य (मन्त्री-वैदिक मिशन मुम्बई) सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए



भजनोपदेशक सम्मेलन के अवसर पर अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली), पास में बैठे हैं श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डे (मन्त्री आर्य समाज मुम्बई) तथा डा. सोमदेवजी शास्त्री पीछे बैठे हुए आर्य भजनोपदेशक महानुभाव



भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८) के अवसर पर श्री बेगराजजी आर्य (अ[illegible] आर्य भजनोपदेशक परिषद) बोलते हुए साथ में बैठे हैं श्री मामचन्दजी आर्य पशि[illegible]ार), श्री सत्यपालजी मधुर (दिल्ली), श्री पं. नरेशदत्तजी आर्य (बिजन[illegible]

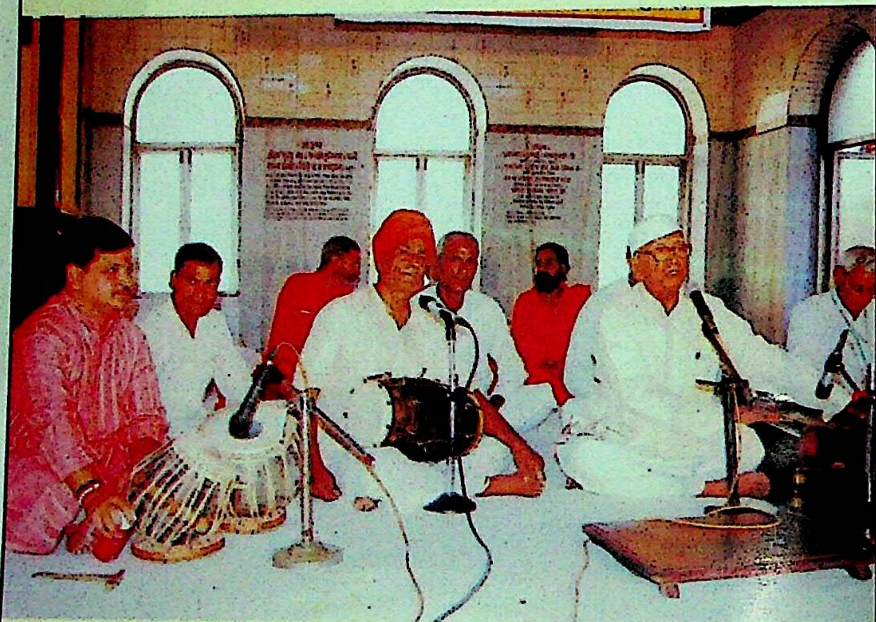


भजनोपदेशक सम्मेलन २००८ के अवसर पर श्री ओम्प्रकाशजी वर्मा (उपाध्यक्ष आर्य भजनोपदेशक परिषद्) सम्बोधित करते हुए साथ में बैठे हैं श्री सुरेशजी अग्रवाल (अहमदाबाद) श्री आचार्य दयासागरजी (दुर्ग–छत्तीसगढ़) श्री दीनदयाल जी गुप्त (कलकत्ता) श्री मिठाईलाल सिंहजी (मुम्बई), स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली), स्वामी सर्वानन्दजी (मन्दसौर), श्री विठ्ठल रावजी आर्य (हैदराबाद)

श्री सत्यपालजी सरल, देहरादून (कोषाध्यक्ष–आर्य भजनोपदेशक परिषद्) सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए



श्री पं. नरेशदत्तजी आर्य (मन्त्री आर्य भजनोपदेशक परिषद)
बोलते हुए साथ में श्री ज्ञानप्रकाशजी का स्वागत करते हुए
श्री सत्यपालजी सरल (कोषाध्यक्ष आर्य भजनोपदेशक परिषद्)



भजन गाते हुए श्री पं. वेगराजजी आर्य पास में बैठे हुए श्री ओम्प्रकाश[illegible] वर्मा
तथा ढोलक पर आपका साथ देते हुए श्री मोहनलाल जी अ[illegible]



भजन गाते हुए श्री आशारामजी आर्य (उपमन्त्री आर्य भजनोपदेशक परिषद्)
साथ में बैठे हुए श्री पं. वृजपालजी कर्मठ एवं श्री पं. कैलाशजी कर्मठ (कलकत्ता)
पीछे बैठे हैं स्वामी प्रणवानन्दजी



श्री नरेशदत्त आर्य (बिजनौर) भजन गाते हुए उनका साथ दे रहे हैं ढोलक पर
श्री दिनेश दत्तजी आर्य (दिल्ली) तथा तबला वादक श्री राम मिश्रा (मुम्बई)



श्री कैलाश जी कर्मठ (कोलकाता) भजन गाते हुए उनका साथ दे रहे है
ढोलक पर श्री मोहनलाल जी आर्य (दिल्ली)

भजनोपदेशक सम्मेलन (२९-३० मार्च २००८) में उपस्थित आ[illegible]

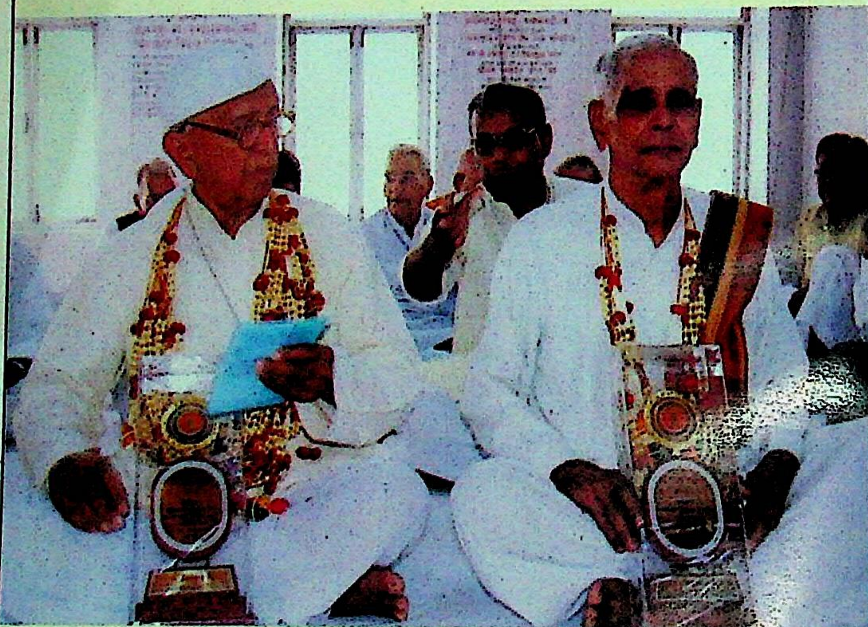


भजनोपदेशक सम्मेलन (२९-३० मार्च २००८) में
उपस्थित आर्य महिलाएँ एवं आर्य जन

श्री भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८) के अवसर पर श्री पं. बेगराजजी आर्य का
गत करते हुए श्री विठ्ठल रावजी आर्य (हैदराबाद), श्री मिठाईलाल सिंहजी (मुम्बई),
श्री आचार्य दयासागरजी (दुर्ग-छत्तीसगढ़), श्री सुरेशजी अग्रवाल (अहमदाबाद)



भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८) के अवसर पर श्री पं. वृजपालजी कर्मठ का स्वागत करते हुए श्री विठ्ठलरावजी आर्य (हैदराबाद), श्री मिठाईलाल सिंहजी (मुम्बई), श्री सुरेशजी अग्रवाल (अहमदाबाद), श्री आचार्य दयासागरजी (दुर्ग–छत्तीसगढ़)



भजनोपदेशक सम्मेलन (२९–३० मार्च २००८) के अवसर पर सम्मानित व्यक्तित्व श्री पं. बेगराजजी आर्य, श्री पं. वृजपालजी क...

॥ ओ३म् ॥

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा २९-३० मार्च २००८ को आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई में आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें ६२ भजनोपदेशकों ने भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित भजनोपदेशकों ने सर्व सम्मति से २९ मार्च २००८ को आर्य भजनोपदेशक परिषद् का गठन किया जिसके निम्नलिखित महानुभाव पदाधिकारी मनोनीत किये गये।

आर्य भजनोपदेशक परिषद्

पदाधिकारी गण

संरक्षक	-	श्री स्वामी प्रणवानन्द जी	दिल्ली	०-९८६८८५५१५५
परामर्शदाता	-	डा. सोमदेवजी शास्त्री	मुम्बई	०-९८६९६६८१३०
अध्यक्ष	-	श्री बेगराजजी आर्य	भूड़ियां	०-९४१२२२५५९०
उपाध्यक्ष	-	श्री ओम्प्रकाशजी वर्मा	यमुनानगर	०-९८१२६१९४५४
	-	श्री पं. सत्यपालजी "पथिक"	अमृतसर	०-९८१५२६०६०५
मन्त्री	-	श्री नरेशदत्तजी आर्य	बहादरपुर	०-९४११४२८३१२
उपमन्त्री	-	श्री. पं. आशारामजी आर्य	सीतादेई	०-९३५८२०४३९७
	-	श्री ज्ञानप्रकाशजी आर्य	धर्मपुर सेरूआ	०-९४१०२८२३५५
कोषाध्यक्ष	-	श्री सत्यपालजी "सरल"	देहरादून	०-९४११३९४५८८

कार्यकारिणी सदस्य

श्री ब्रजपाल जी कर्मठ	कम्हेड़ा	०-१३१ २४७०००७
श्री मामचन्द जी आर्य पथिक	इकबालपुर	०-९९६८२३३८६६
श्री उपेन्द्र जी आर्य	चण्डीगढ़	०-९८१५१९६७१९
श्री सुखपाल सिंह जी	मुजफ्फरनगर	०-९८९७५८४२६९
श्री कैलाश जी कर्मठ	कोलकाता	०-९८३१३४०९१४
श्री सत्यपाल जी मधुर	दिल्ली	०-९८९९३५१३७५
श्री अमरसिंह जी आर्य	ब्यावर	०-९४१३६९४२२१
श्री उदयवीर जी आर्य	मथुरा	०-९७१९३०७८२५
श्री टीकमसिंह जी आर्य	बिजनौर	०-९९२७५४००२७

"आर्य भजनोपदेशक परिषद्" का उद्देश्य एवं कार्य

महर्षि दयानन्द ने अपनी **वसीयत** में लिखा है कि -

वैदिक धर्म के उपदेश और शिक्षा के लिए उपदेशक मण्डली नियत करके देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में भेजकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग कराने आदि में इस सभा का कोष प्रयुक्त किया जाय। स्वामी जी ने गौरी शंकर शर्मा को वैदिक धर्म सभा जयपुर का वैतनिक उपदेशक नियत करके इस महान् कार्य की स्वयं नींव डाली थी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाजों में वेद प्रचार फण्ड स्थापित किया गया ताकि देश और नगर नगर में वैदिक धर्म का प्रकाश फैला कर अविद्या अन्धकार का नाश कर सकें। आज सैद्धान्तिक विषयों के प्रचार में आनेवाली शिथिलता को दूर करने के उपायों पर विचार करने के लिए आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई में वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डा. सोमदेवजी शास्त्री जी ने २९-३० मार्च २००८ को आर्य भजनोपदेशक संगोष्ठी रखी, जिसमें सभी भजनोपदेशकों ने अपनी समस्या एवं सुझाव रखे तथा जी जान से आर्य समाज का प्रचार करने का आश्वासन दिया।

गुजरात, छत्तीसगढ़, उड़िसा, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों से आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी पहुँचे जिन्होंने इस कार्यक्रम को देखकर बड़ी सराहना की एवं तन मन धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई में आर्य भजनोपदेशक परिषद् का गठन किया जिसमें कुछ प्रस्ताव पारित किये गये।

१. प्रत्येक भजनोपदेशक को सन्ध्या याद हो तथा यज्ञ एवं संस्कार आदि भी कराने की योग्यता होनी चाहिये।
२. आर्य समाज के नियम, आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, व्यवहार भानु, गोकरुणानिधि आदि की जानकारी हो।
३. भजनोपदेशक जहाँ स्वीकृति दे, वहाँ अवश्य ही जाये, यदि कोई दैवी आपदा हो तो अपने स्थान पर दूसरे भजनोपदेशक की व्यवस्था करे तथा भजनोपदेशक परिषद् को सूचित करे।
४. यदि किसी आर्य भजनोपदेशक में कोई दुरित दुर्गुण हो उसे त्याग दे। यदि दुर्गुण के कारण कहीं अपमान होगा तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा।
५. प्रत्येक भजनोपदेशक वैदिक सिद्धान्त को आधार बना कर उपदेश करे, केवल मनोरंजन अथवा चिढ़ाने के लिए नहीं।
६. लोगो को खुश करने के लिए अश्लील फिल्मी तर्जे, अभद्र चुटकुले तथा सिद्धान्त विरुद्ध गीत न गायें जायं। वैदिक विद्वानों गीतकारों के गीतों को प्राथमिकता दें।
७. जीवन सुरक्षा निधि का प्रस्ताव रखा गया जो सर्व सम्मति से पास हुआ। प्रत्येक भजनोपदेशक १२००/- रुपये वार्षिक परिषद् के खाते में अपनी ओर से जमा करे। जिससे वृद्धावस्था आने पर ब्याज एवं सम्मान राशि से सम्मानित किया जायेगा।
८. भजनोपदेशकों के सहयोगियों का भी सम्मान करने पर विचार किया गया।
९. भजनोपदेशक एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों के बीच यदि कोई विवाद हो तो आपस में विचार विमर्श करके उसे समाप्त किया जाय। सार्वजनिक रूप से उसकी चर्चा न की जाय।

नरेशदत्त आर्य
मन्त्री - आर्य भजनोपदेशक परिषद

दिवंगत आर्य भजनोपदेशक

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लेखक - डा. भवानीलाल भारतीय

१. अमीचन्द मेहता
२. महात्मा कालूराम योगी
३. दादा पं. बस्तीराम
४. स्वामी भीष्म
५. कुं. सुखलाल आर्य मुसाफिर
६. ठाकुर उदयसिंह (ठाकुर कवि)
७. पं. सिद्धगोपाल
८. पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न
९. पं. भगवतीप्रसाद अभय 'अभय मुनि'
१०. कुं. जोरावरसिंह सिंहकवि
११. स्वामी स्वरूपानन्द (त्रिलोकचन्द राघव)

आर्यसमाज के आद्य भजनोपदेशक अमीचन्द मेहता

महर्षि दयानन्द के समकालीन तथा उनके उपदेशामृत का पान कर अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लानेवाले अमीचंद मेहता को आर्य समाज का प्रथम भजनोपदेशक मानना नितान्त उचित है। उनमें गायन, प्रवचन तथा काव्य प्रणयन की तीन प्रवृत्तियां एक साथ दिखाई देती हैं। उनके जीवन तथा कार्य के बारे में विस्तृत विवरण नहीं मिलता तथापि यह सत्य है कि ऋषि दयानन्द का सत्संग प्राप्त करने के पश्चात् वे आर्य समाज से पूर्णतया जुड़ गये थे तथा जीवन पर्यन्त आर्य समाजों के मंच से भजनोपदेश करते रहे। उनके जीवनवृत्त का तथा उनके द्वारा रचित भजनों का संग्रह करने का एक सराहनीय प्रयास अमृतसर निवासी स्व. पं. दौलतराम शास्त्री ने किया था। इससे पहले १९२५ में पं. चमूपति ने 'अमीर रससार' में उनके जीवन तथा काव्य का संग्रह किया था। उनका निधन १८९२ में हुआ था। १९९२ उनके निधन की शताब्दी का वर्ष था। इस अवसर पर इन पंक्तियों के लेखक ने उनके भजनों को अनेक स्त्रोतों से संग्रह कर 'भक्त अमीचंद और उनका काव्य' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया इसके तीन संस्करण विभिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित किये। एक अन्य संग्रह प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने प्रकाशित किया। मेहताजी के भजनों को अधिकाधिक प्रचारित किया जाना आवश्यक है।

मानव अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिये संगीत जैसे तन मन को आह्लादित करनेवाले तथा स्वल्प समय के लिये ही सही, मनुष्य को लोकोत्तर स्थित में पहुंचा देनेवाले साधन का सहारा सदा से लेता आया है। उल्लास के क्षणों में मानवकण्ठ से संगीत की स्वरलहरी अनायास फूट पड़ती है। आर्यसमाज के गायक कलाकारों ने संगीत के सहारे आर्य सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया है। इन गायक उपदेशकों को प्राय: भजनोपदेशक तथा भजनीक कहा जाता है। यदा कदा इनके लिये 'प्रचारक' शब्द का भी प्रयोग होता है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के प्रवचनों के आरम्भ में भी भजन गायन होने के कुछ प्रमाण मिलते हैं। १८८२ ई. में प्रथम तिथि (१ जनवरी) से स्वामीजी की एक व्याख्यानमाला बम्बई में आरम्भ हुई। आर्यसमाज मुम्बई (काकड़वाड़ी) की पुरानी कार्यवाही पंजिकाओं में यह लिखा मिलता है कि स्वामीजी के प्रवचन से पूर्व किसी गायक के द्वारा गायन प्रस्तुत किया जाता था। निश्चय ही ये

गायक आर्यसमाजी विचारधारा में विधिवत् दीक्षित नहीं होते थे। अनुमान होता है

कि वे निर्गुण भजन गाते होंगे।

स्वामी दयानन्द जब पंजाब प्रवास के दौरान एक नगर गुजरात (सम्प्रति पाकिस्तान में) पहुंचे तो वहां उनकी भेंट मेहता अमीचन्द से हुई। ये महानुभाव उन दिनों चुंगी के दरोगा के पद पर कार्यरत थे। उनके बारे में नगर के लोगों की यह धारणा थी कि मेहता अमीचन्द दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों के भण्डार हैं तथापि उनकी गायन कुशलता तथा संगीत मर्मज्ञता से भी वे परिचित थे। मेहता जी के बारे में हमारी जानकारी बहुत अधिक नहीं है। पं. चमूपति के अनुसार उनका जन्म जेहलम जिले के तहसील पिण्डदादनखो के ग्राम हरणपुर में हुआ। वे मोहियाल ब्राह्मणों की 'बाली' उपजाति के थे। बचपन से ही गायन में उनकी विशेष रुचि थी। कदाचित् इसी कारण वे मीरासियों और वेश्याओं की संगति में रहने लगे। शीघ्र ही अन्य दुर्गुणों ने भी उन्हें घेर लिया। संगीत का रसिक अब मांसाहारी, मद्यप तथा दुराचारियों की कुसंगत में जा पड़ा।

उस समय के साधारण पठित व्यक्तियों की ही भांति अमीचन्द उर्दू भाषा ही जानते थे। वे तहसील जेहलम में वासिल बाकीनवीस हो गये। बीस बाईस वर्ष की सरकारी सेवा के पश्चात् उन्हें चुंगी का दरोगा बना दिया गया और उनके स्थानापन्न नायब तहसीलदार बनने की संभावना भी हुई। पं. दौलतराम शास्त्री मेहता अमीचन्द का जन्मस्थान जेहलम जिले की चकवाल तहसील मानते हैं। उनके अनुसार इनके परिवार में जमींदारी थी, ८० ऊंटों की खेती होती थी और ये शुरु से ही सम्पन्न थे। किन्तु चमूपति ने इनकी जीविका के सम्बन्ध में कुछ भिन्न बातें लिखी हैं। उनके अनुसार एक बार एक सेठ के गुमाश्ते के साथ मिलकर इन्होंने वस्तुओं का कृत्रिम भाव लिख दिया जिससे गुमाश्ते को सरकार की ओर से उचित से बहुत अधिक रुपया मिलने की संभावना थी। भेद खुल जाने पर अमीचन्द और तहसीलदार पर अभियोग चला। तहसीलदार को कारावास का दण्ड मिला और इन्हें त्यागपत्र देने के लिये बाधित किया गया। गुमाश्ते ने इन्हें अपने मूल वेतन चालीस रुपये से बीस रुपये अधिक दिलवाकर अपने सेठ के यहां नौकरी दिला दी। इस दौरान वे कलकत्ता आदि दूरवर्ती नगरों में भी रहे और लगभग तीन वर्ष पश्चात् जेहलम लौटे।

स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में मेहता जी कैसे आये इस प्रसंग को पं. दौलतराम शास्त्री ने इस प्रकार वर्णित किया है। "स्वामी दयानन्द जब इधर (पंजाब) आये

तो यह (अमीचन्द) उनके व्याख्यान सुनने आते। उनके भाषण से पूर्व स्वयंरचित भजन भी गाते। इनका स्वर अत्यन्त मधुर तथा पदरचना विद्वत्तापूर्ण होती थी। एक दिन जब गा चुके तो जनता विसर्जित हो चुकी तो स्वामीजी को किसी सदस्य ने कहा कि महाराज जिसकी प्रशंसा करते आप थकते नहीं, इसमें अमुक दोष है। घरवाली यहां रहती नहीं (मेहता अमीचन्द के वेश्या संसर्ग के कारण)। स्वामी जी ने झट कह दिया, ''ठीक हो जायेगा, देखो सुधर जायेगा।'' दूसरे दिन जब मेहता गा चुके और महाराज का व्याख्यान हो चुका तो ऋषि ने मेहता की पीठ पर हाथ धरकर कहा, ''मेहता जी हो तो रत्न (हीरे) परन्तु दलदल (कीचड़) में पड़े हो।'' मेहता जी समझ गये। उत्तर दिया, ''महाराज शीघ्र ही दलदल से बाहर हो जाऊंगा।'' घर जाते ही कपड़े बदले और स्वयं को भी बदल दिया।

दूसरे दिन ससुराल पहुंचे। अपनी धर्मपत्नी से लगे कहते, ''श्रीमती, तैयारी करो अपने घर चलने की। मेहता अब बदल गया है। अपना भवन संभालो। ऋषि का दर्शन करके जीवन पवित्र करो।'' इस प्रकार पत्नी को घर लाकर पुनः गृहिणी का सम्मान दिया। दूसरे दिन मेहता जी एक रचना लिखकर सभा में ले गये। इस भजन में कवि ने ऋषि के दर्शन एवं उपदेश से प्राप्त आत्मिक आनन्द का ही वर्णन किया है। इसमें पश्चात्ताप का स्वर है तो जीवन में अद्भुत परिवर्तन आने का संकेत भी है। प्रासंगिक स्थल इस प्रकार है -

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया। वाणी से जावे वह कैसे बताया॥

पुनः कहा -

तुम्हारी कृपा से अजी मेरे भगवन्। मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया॥

परमात्म-अनुभूति की अनिर्वचनीयता को कवि ने निम्न प्रकार वर्णित किया-

गूंगे की रसना के सदृश अमीचंद। कैसे बताये कि क्या रस उड़ाया॥

पं. दौलतराम शास्त्री के अनुसार जीवन में इस परिवर्तन के पश्चात् अमीचन्द ने संस्कृत भाषा और वैदिक ग्रन्थों का यथाशक्य अध्ययन किया जो उनकी रचनाओं में आये प्रसंगोपात्त संदर्भों से ज्ञात होता है।

पं. चमूपति ने ऋषि के सम्पर्क में आने का एक भिन्न विवरण दिया। उनके अनुसार ''एक डॉक्टर महाशय अमीचन्द को गुजरात (पंजाब) ले गये। वहां उसे ऋषि के दर्शन हुए। ऋषि के सामने अमीचन्द ने भजन सुनाया। ऋषि बोल उठे, है तो हीरा परन्तु कीचड़ में पड़ा है। इतने में ही मेहता की आंखें खुल गई और जो

दुर्व्यसनी अमीचन्द था, वही रागविद्या का व्यसनी अमीचन्द सचमुच 'अमीचन्द' हो गया और जहां तहां अमीरस की वृष्टि करने लगा। वे मेहता जी के जीवन का कुछ और विवरण भी देते हैं।'' अमीचन्द पहले गजलें लिखते थे, अब भजन लिखने लगे। आप ही भजन बनाते और आप ही गाते। आर्यसमाज के सत्संगों और नगरकीर्तनों की शोभा का एक भाग अमीचन्द के भजन होते थे। लाहौर आर्यसमाज के उत्सव पर जो प्रान्त के समाजों का केन्द्र उत्सव होता था, प्रतिवर्ष जाते और अपने गान की धूम मचा आते।

मेहता जी को तहसीलदारी या नायब तहसीलदारी का नियुक्तिपत्र मिला, किन्तु अब उनका मन दासतां में नहीं लगा। वे धर्मप्रचार में सरकारी नौकरी को बाधा समझने लगे। इस तथ्य का संकेत उनके निम्न भजन में मिलता है –

दयामय अब मोहि पार उतार।
मन वचन कर्म के पापपुञ्ज सब शीघ्र भस्म कर डार॥
नहीं प्यारी मुझे तहसीलदारी नहीं जज्जी दरकार।
यदि राखो अपनी सेवा में किंकर चौकीदार॥
होऊं गवर्नर तब क्या बनेगा, जाऊंगा स्वर्ग सिधार।
अभिलाषी हूँ उस पदवी का बना रहूँ लगातार॥

फलतः मेहताजी ने नौकरी छोड़ दी। जेहलम में उनकी ससुराल थी। वहीं जाकर डेरा किया। कुछ भूमि लेकर खेती करने लगे। लगभग दस वर्ष तक वे आर्यसमाज जेहलम के अधिकारी वर्ग में भी रहे। २९ जुलाई १८९३ को उनका निधन हो गया। शायद उनके कोई संतान नहीं थी, इसीलिये अपने वसीयतनामे में उन्होंने अपनी सम्पत्ति पत्नी को दी और उसके निधन के पश्चात् उसे डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर को देने की बात लिखी। किन्तु इस व्यवस्था के अनुसार कहते हैं कि कार्यवाही नहीं हुई। उनके जन्मकाल का पता न चलने से उनकी आयु का ज्ञान भी अशक्य है।

अमीचन्द मेहता का रचना संसार :

अमीचन्द के भजन संग्रह गत शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में छपे, किन्तु वे आज हमें उपलब्ध नहीं हैं। हमारे संग्रह में लीथो की छपाई की आर्य भजन संग्रह नामक ३६ पृष्ठों की एक पुस्तक है। यह १८८९ ई. की छपी है तथा इसमें सरदार कान्हसिंह और अमीचन्द मेहता के भजनों का संग्रह है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये

भजन पहले उर्दू लिपि में छपे थे, तत्पश्चात् इस पुस्तक के सम्पादक पं. देवदत्त शर्मा ने इन्हें हिन्दी (नागरी) का रूप प्रदान किया। इन संग्रह में अमीचन्द के निम्न शीर्षकों के भजन समाविष्ट हुए हैं –

१. जय जय पिता परम आनन्द दाता। २. माथे पर टीका नहीं तेरे।
३. पुराणो का भी पुराण तू है। ४. जिस गाड़ी में जाना तुझको।
५. यह उत्सव तुमको सालाना ६. अगर देशहितैषी हमें न जगाता।
७. आज बनरे घर मंगलाचार। ८. साहब मेरी सुनिये अपील।
९. किस सोच विचार में बैठे हों।

पं. चमूपति ने दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर मेहताजी के भजनों का अमीररससार नामक एक संक्षिप्त संशोधित संस्करण तैयार किया जिसे राजपाल लाहौर ने प्रकाशित किया। इसमें हिन्दी के तीस तथा पंजाबी के चार भजन हैं। पं. चमूपति ने यत्र तत्र भजनों की भाषा तथा शब्दावली में यह कहकर संशोधन कर दिया है कि "कहीं कहीं अमीचन्द ने आर्यभाषा के अज्ञान के कारण आर्यभांषा के शब्दों के स्थान में पंजाबी शब्द जुड़े हैं। हमनें अमीचन्द के भावों की पूरी रक्षा की है और जहां तक सम्भव था, भाषा भी वहीं रहने दी है।" किन्तु हमारे विचार से किसी कवि के काव्य की भाषा में सम्पादक को परिवर्तन करने का अधिकार नहीं हैं। पं.चमूपति की इस चेष्टा का एक परिणाम तो यह निकला कि काव्य की भाषा का मूल रूप तिरोहित हो गया। इस प्रकार मूल पाठ के निर्धारण में कठिनाई आ गई।

अमीचन्द अपने भजनों की अन्तिम पंक्ति में कवि छाप के रूप में प्राय: 'अमी', 'अमीचन्द' का प्रयोग करते हैं, कुछ में 'अमीर' का भी उल्लेख हुआ है। इसे ही दृष्टिगत रखकर पं. दौलतराम शास्त्री ने अपने द्वारा सम्पादित भजनसंग्रह का नाम 'अमीरसुधा' रखा। इसमें मेहता जी की चालीस हिन्दी, पांच पंजाबी तथा दो उर्दू भजन कृतियां एकत्र की गई हैं।

अमीचन्द की कविता में विभिन्न भावों की व्यंजना हुई है किन्तु उसका मूल स्वर भगवद्भक्ति ही है। ऋषि दयानन्द ने उनके मन में आस्तिकता और आध्यात्मिकता की ज्योति जलाई तथा उन्हें व्यसनमुक्त नैतिक जीवन जीने का उपदेश दिया। फलतः कवि की कविता में अपने आराध्य की महिमा, उदारता, शरणागतवत्सलता, भक्त के प्रति असीम करुणा आदि के भावों का सफल प्रतिफलन हुआ है। साथ ही वह स्वयं के दैन्य, पश्चात्ताप तथा पतित जीवन से उबरने की

भावनाओं को भी प्रकट करता चलता है। उनके रचित प्रसिद्ध दो भजन अधोलिचित है -

१. भजन

आज मिल सब गीत गाओ प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में।
प्रेमरस में तृप्त हो करते हैं जलधर धन्यवाद॥
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिये करे नारी नर सब धन्यवाद॥
गान कर **अमीचन्द** भजनानन्द ईश्वरस्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर धर धन्यवाद॥

२. भजन

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया
वाणी से जावेगा क्यों कर बताया।
नहीं है वह यह रच जिसे रस ना चाखें,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।
नहीं है यह वह गन्ध जिसे घ्राण सूंघे,
त्वचा से न जाने भी छुआ छुआया।
संख्या में आना असम्भव है उसकी
दिशा काल में भी रह न समाया।
गूंगे की रसना के सदृश, **अमीचन्द**
कैसे बताये कि क्या स्वाद आया॥

राजस्थानी भजनों में वैदिक भावों के प्रसारक

महात्मा कालूराम योगी (रामगढ़ सेठों का)

हमारी जानकारी के अनुसार ऋषि दयानन्द के समकालीन तथा उनसे प्रेरणा लेकर वैदिक धर्म के प्रचार क्षेत्र में उतरनेवाले तीन महानुभावों को आर्य समाज का आद्य भजनोपदेशक कहा जा सकता है। इनमें दो पुरुष (महात्मा कालूराम तथा भक्तराज अमीचंद) तथा एक महिला (माई भगवती) थीं। राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के सीकर राज्य के अन्तर्गत सेठों का रामगढ़ कस्बे के निवासी महात्मा कालूराम योगी को हम वैदिक भजन वाङ्मय में राजस्थानी शैली का प्रवर्तक मानते हैं। ये वे महानुभाव थे जिन्हें ऋषि दयानन्द का स्वप्न में दर्शन हुआ था। स्वप्नावस्था में उन्हें आभास हुआ कि साक्षात् ऋषि दयानन्द उन्हें योगाभ्यास और ओंकार उपासना का आदेश दे रहे हैं। कालान्तर में उन्होंने स्वामी दयानन्द से प्रत्यक्ष भेंट की तथा उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। पं. कालूराम का जन्म १८३६ ई. (१८९३ वि.) में रामगढ़ (जिला सीकर) में पं. कृष्णदत्त त्रिपाठी व माता नौजी देवी के यहां हुआ। इनका बचपन का नाम धर्मचन्द्र था किन्तु माता इन्हें स्नेहवश 'कालूराम' कहती थी और बाद में ये इसी नाम से विख्यात हुए। कालूराम जी का अध्ययन साधारण स्तर का था किन्तु स्वाध्याय के द्वारा उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों को भली भांति आत्मसात कर लिया।

पं. कालूराम ने विभिन्न मत-मतान्तरों का तुलनात्मक अनुशीलन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मानव का मौलिक और आचरणीय धर्म वैदिक धर्म ही है। कालान्तर में उन्होंने इसी धर्म का प्रचार करना अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वे १८८० में जयपुर आये और ३१ मार्च १८८१ को वहां वैदिक धर्म सभा की स्थापना की। यहां उन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों-कर्नल एच.एस.ऑल्काट तथा मैडम एच.पी. ब्लैवेट्स्वी से 'चमत्कारों का मिथ्यात्व' पर शास्त्रार्थ किया। अब कालूरामजी सर्वकाल धर्मप्रचार में लग गये। उन्होंने मुख्यतः शेखावाटी के झुंझनू तथा सीकर जिलों में धर्म प्रचार किया। नागौर जिले के ग्राम इजार तथा चुरु जिले के सुजानगढ़ भी वे गये तथा वहां के जनसामान्य को आर्यसमाज की शिक्षाओं से लाभान्वित किया। उनकी प्रेरणा से राजस्थान के इस

शुष्क, मरु स्थल प्रधान प्रदेश में लगभग तीस आर्यसमाजों की स्थापना हुई। उन्हें ऋषि दयानन्द के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ मिला था तथा ऋषि से उनका पत्रव्यवहार भी हुआ था। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाजों में फतहपुर, बिसाऊ, इजार, टमकोर, सुजानगढ़ आदि स्थानों की आर्य समाजों ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय धर्मप्रचार किया तथा समाजसुधार, कुरीति निवारण, मादक द्रव्य निषेध जैसे क्षेत्रों में प्रशंसनीय योगदान किया है। चौसठ वर्ष की आयु में इनका निधन ७ जून १९०० के दिन रामगढ़ में स्थित इनके आश्रम में हो गया। इनकी स्मृति में तब से अब तक प्रति वर्ष गुरुपूर्णिमा (आषाढी पूर्णिमा) तथा पौष पूर्णिमा को रामगढ़ में धार्मिक मेला लगता है।

महात्मा कालूराम जी ने साधारण जनता, विशेषतः राजस्थान के ग्राम्य समाज में स्थानीय बोली (मारवाड़ी) में प्रचार किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने स्वयं भजनों की रचना की जो आज भी शेखावाटी प्रान्त के देहातों में गाये जाते हैं। उनके भजनों का एक संग्रह 'भजनोदय' शीर्षक से १९८१ वि. (१९२४ ई.) में छापा था। इस भजन संग्रह में पं. कालूरामजी रचित ४३ भजन हैं। १९९८ में बद्रीप्रसाद पोद्दार फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित कराया तो इसमें सेठ जयनारायण पोद्दार रचित महात्माजी की जीवनी (१९११ ई.) तथा १९७४ में मेरे द्वारा लिखित एक अन्य लघु जीवनी को एकत्र प्रस्तुत किया गया था। साथ ही महात्माजी रचित ४३ भजन भी दिये गये थे। यह ग्रन्थ महात्मा श्री कालूराम जी शीर्षक पांच हजार के संस्करण में था। पं. कालूराम के भजनों की विशिष्टता अनेक कारणों से आंकी जा सकती है। प्रथम तो ये सरल या खड़ी भाषा में लिखे गये हैं जो पश्चिमोत्तर राजस्थान के जनसामान्य के लिये बोध गम्य हैं। महात्माजी स्वयं संगीत विद्या के मर्मज्ञ थे और उन्होंने इन भजनों को जिन रागों में प्रस्तुत किया जाना है, उनका संकेत भी किया है। इस प्रकार राग सोरठ, जयजयवन्ती, प्रभाती, आसावरी, भैरवी आदि में इन गीतों को निबद्ध कर गाया जा सकता है। महात्माजीने इन गीतों और भजनों में भगवद्भक्ति, मानवजीवन की असारता, त्याग, वैराग्य, जन्म-मृत्यु की अनिवार्यता, नाम जप, (प्रणव जाप) आदि विषय सरल शैली में विवेचित किये हैं।

उनके द्वारा रचित भजनों के शीर्षवाक्य इनके प्रतिपाद्य विषयों का संकेत दे

देते हैं। उदाहरणार्थ, निम्न शीर्ष वाक्यों को देखे

"प्रभुजी ने सुमर मना रे मेरे भाई, प्रभुजी को नाम सदा सुखदाई, प्रभुजी का ध्यान धरो रे सुमागा, प्रभुजी ने समझ मना रे बडभागी आदि।

ये सभी भजन भगवद्भक्ति के प्रेरक तथा ईश स्मरण के प्रयोजक हैं। जीवन की निस्सारता तथा भक्ति विरहित जीवन के त्रास को कवि ने जिस भजन में निरुपित किया उसे यहां देना उपयुक्त है। यह भजन मैंने आपने पितामह (श्री देवीलालजी) से बचपन में सुना था -

मनवा नहीं बिचारी रे, लोभी नहीं बिचारी रे।
थांरी म्हांरो करता अमर बीती सारी रे। मनवा...

नव दस यास गरम में साथयों माता थांरी रे।
अब तो बाहर काढ भजती करस्यूं थारी रे। मनवा....

बाल पना तो खेल कूद में बीत्यो सारी रे।
जवानी रे जोर तिरिया लागे प्यारी रे। मनवा....

अन्त में - कालूराम गुरां रे सरले सुधरी सारी रे॥ मनवा....

भावार्थ - हे लोभ मन, तूने विचार नहीं किया। अपनी पराई की स्वार्थपूर्ण चर्चा में ही सारा जीवन बिता दिया। तेरी माता ने तुझे नौ-दस मास तक गर्भ में रखा, तब तूने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि जन्म लेने के पश्चात् मैं आपकी भक्ति करुंगा। किन्तु तुमने अपना बाल्यकाल खेल कूद में तथा यौवन विषय योग में बिता दिया। अब तो मृत्यु ने तेरे भौतिक भक्ति चेतना जगाना पं. कालूराम का लक्ष्य था।

लोक कवि तथा लोक गायक : दादा (पं.) बस्तीराम

गायन और भजन के माध्यम से ग्रामीण जनता तक अपने भावों एवं विचारों को किस प्रकार संप्रेषित किया जा सकता है, इसका उदाहरण हरियाणा के लोक कवि तथा लोकगायक पं. बस्तीराम के कृतित्व में देखा जा सकता है। उन्होंने स्वरचित भजनों के द्वारा वेदों के लोकोपयोगी सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द के जीवन तथा कृतित्व, पौराणिक पाखण्ड एवं अंधविश्वासों पर तीखें कटाक्षों तथा समाज सुधार के विविध आयामों को हिन्दी भाषी जनता, विशेषतः हरयाणा की ग्राम्य जनता तक सशक्त शैली में प्रस्तुत किया। यद्यपि उनका शास्त्रीय अध्ययन बहुत व्यापक नहीं था किन्तु स्वाध्याय एवं विद्वानों के सत्संग से उन्होंने वैदिक धर्म के मर्म को भली प्रकार हृदयंगम कल लिया था। उनके भजनों में गहरी तार्किकता, विवेचन क्षमता तथा वाक्पटुता स्पष्ट दिखाई देती है। इकतारे की मधुर धुन पर जब उनके भजन श्रोता समाज तक पहुंचते थे तो लोग अपनी सुधबुध भूल कर गायक के साथ स्वयं भी भावविभोर हो जाते थे। यही कारण है कि हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश तथा पंजाब तक पं. बस्तीराम अपने गायन के द्वारा लोगों के अन्तस्तल को झंकृत करने की क्षमता रखते थे।

पं. बस्तीराम का जन्म अश्विन कृ.चतुर्थी १८९८ वि. को हरियाणा राज्यान्तर्गत झज्जर तहसील के खेड़ी सुलतान नामक ग्राम में पंडित रामलाल के घर हुआ। ६ वर्ष की आयु में महरौली निवासी पं. हरसुख से आपने अध्ययन आरम्भ किया। तत्पश्चात् बस्तीराम अपने चाचा जीवनराम के सथ बनारस चले गये और वहां कुछ काल तक पढ़ते रहे। १९१४ वि. में सिपाही विद्रोह आरम्भ होने पर ये अपने घर चले आये। गांव के मंदिर के पुजारी बलदेवशाह से भी कुछ समय तक पढ़ने का इन्हें अवसर मिला। तीव्र वैराग्य भावना के कारण बस्तीराम ने विवाह नहीं किया।

१९२४ वि. में कुम्भ के अवसर पर पं. बस्तीराम हरिद्वार पहुंचे। उस समय स्वामी दयानन्द भी कुम्भ में आये हुए थे। स्वामीजी की धर्म चर्चा गोसाइयों के गुरु लालगिरि से हुई। पं. बस्तीराम स्वामीजी के निर्भीक विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए तथा मन ही मन उनके अनुयायी बन गये। संवत् १९३३ में दिल्ली दरबार के अवसर पर स्वामी दयानन्द ने धर्मप्रचार शिविर लगाया तथा प्रतिदिन अढ़ाई घण्टे धर्मोपदेश देने लगे। इस अवसर पर पं. बस्तीराम ने स्पष्ट रूप से वैदिक धर्म स्वीकार कर लेने की घोषणा की। इससे पूर्व वे 'रुक्मिणी मंगल' गाते थे और पौराणिक पंडित की भांति यजमान वृत्ति से आजीविका चलाते थे। अब इन्होंने अपने यजमानों को स्पष्ट कह दिया कि मैं आर्य हूं अतः मेरे यजमान भी आर्य बनें।

जिन्हें आर्य धर्म में आस्था नहीं है वे मेरे चाचा राधाकृष्ण के यजमान बन जायें। १९३४ वि. के माघ मास में पं. बस्तीराम शीतला के भयंकर रोग से आक्रान्त हुए। नेत्रों की ज्योति प्रायः चली गई। वि.सं. १९३५ में जब स्वामी दयानन्द रेवाड़ी आए, तो पण्डित बस्तीराम भी वहां गये। यहां रानी के तालाब पर जब स्वामीजी के प्रवचन होते थे तो पं. बस्तीराम प्रवचनों के पहले और पीछे भजन गाते थे। पण्डित बस्तीराम के पौराणिक मत खण्डन के भजनों को सुनकर पौराणिक मण्डली नाराज हुई और रेवाड़ी के राव युधिष्ठिरसिंह से उनकी शिकायत की, परन्तु रावसाहब तो स्वामीजी की क्रांतिकारी विचारधारा से पहले ही प्रभावित हो चुके थे। उन्हें वस्तुस्थिति का पूर्ण ज्ञान था। स्वामीजी की प्रेरणा से रेवाड़ी में प्रथम गौशाला की स्थापना हुई। इस कार्य में पं. बस्तीराम का पूर्ण सहयोग रहा।

अपने अवशिष्ट जीवन में पं. बस्तीराम आर्यसमाज के कवि, प्रचारक और गायक के रूप में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान एंव उत्तरप्रदेश में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना का निश्चय किया, तो पं. बस्तीराम ने हरयाणा के ग्रामों में भ्रमण कर धन संग्रह के कार्य में योग दिया। पं. बस्तीराम यद्यपि संस्कृत के उच्च ज्ञाता अथवा शास्त्रज्ञ विद्वान् नहीं थे परन्तु आर्यसमाज के सिद्धांतों से सुपरिचित होने के कारण उनके काव्य में किसी प्रकार का सैद्धान्तिक स्खलन नहीं आया है। वे अपनी विशिष्ट शैली में इकतारे पर लोक धुनों में आर्य समाज के सुधारवादी विचारों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते, जिसे सुनकर साधारण ग्रामीण जनता अत्यधिक प्रभावित होती थी। अपनी सहज तर्कशैली के बल पर वे सुपठित विद्वानों को शास्त्रार्थों में पराजित भी कर देते थे। इस प्रकार नेंत्र-ज्योतिहीन किन्तु सूर की भांति काव्य प्रतिभा सम्पन्न, कबीर की भांति अलमस्त एवं फक्कड़ स्वभाव के धनी पं. बस्तीराम ११६ वर्ष १० मास २३ दिन की परिपक्व आयु भोगकर श्रावण शुक्ल १२ सं. २०१५ वि. (२६ अगस्त १९५८) को दिवंगत हुए। पं. बस्तीराम के भजनों और कविताओं का आर्यसमाज में सर्वत्र प्रचार है।

पं. बस्तीराम के भजनों का संग्रह हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर ने प्रकाशित किया है। हरयाणा के इन आर्य भजनीकों के गायन तथा उपदेश का प्रभाव व्यापक स्तर पर देखा गया। लोकगायन के नाम पर अश्लील गीतों तथा गायकों पर अंकुश लगा और सामाजिक स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

'धन धन तेरी कारीगरी करतार' जैसे गीत प्रायः पुरानी पीढ़ी के आर्यों की जबान से आज भी सुने जा सकते हैं। जो अधोलिखित है –

धन धन तेरी कारीगरी हो करतार।
जब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे ?
जांग्रत स्वप्न सुषुप्त तू था फिर रचा मुक्ति का मग कैसे ?
क्या वस्तु लई, जिससे देह भई फिर बना ... रग-रग कैसे ?
सबको धार रहा, हम सबमें रहा, फिर सबसे रहा अलग कैसे ?
जब सबमें तू सब गुलों में बू सब रुहों की रुह, फेर सुमग कैसे ?
ब अपाणिपादो जवनो ग्रहीता फिर कोई पकड़े पग कैसे ?
जब सृष्टिकर्ता भर्ता धर्ता हर्ता रहता अनहग कैसे ?
जब काशी काबे में ना पता फिर जावे पता यहां लग कैसे जी ?
वन पर्वत पृथ्वी नभ तारे सबको रहा तू कैसे धार ?
धन धन तेरी ....॥१॥

किये रंग बिरंगे फूल और बादल, रंग की रैणी कहीं नहीं।
किये सूरज से चमकते पदार्थ, चके निराली कहीं नहीं।
नर-तन सा चोला सीम दिया, सूई धागा हाथ में कहीं नहीं।
पत्ते पत्ते की कतरन न्यारी हाथ कतरनी कहीं नहीं।
बरसे जब भरदे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं।
दे भोजन कीड़ी कुंजर को चढ़ें दीखें भण्डारे कहीं नहीं।
दिन रात न्याय में फर्क पड़े नहीं लगी कचहरी कहीं नहीं।
कर्मों का फल दे यथायोग्य मिले रुह और रियासत कहीं नहीं।
अखंड ज्योति अपार लीला किनहूँ न पाया तेरा पार॥
धन धन तेरी .... ॥२॥

चार वेद छह शास्त्र पुकारें सारे गुणों की संभार नहीं।
फिर ऋषि-मुनि और सन्त महन्त थके गा गा, पर पार नहीं।
जो करदे सो नहीं बदल सके किसी ओर को यहां अखत्यार नहीं।
जो करे सो ईश्वर आप करे किसी ओर की चहत सहार नहीं।
जो करनी चाहे सौ कर गुजरे किसी काम में तू लाचार नहीं।
कर भक्ति रंक गले लिपटे, बिन भक्ति भूप से प्यार नहीं।
जो प्रेम करे जिससे परचे, तेरे ऊँच नीच की हार नहीं।
ये **बस्तीराम** दरवाजे खड़ा क्यों इसकी सुनते पुकार नहीं।
शुभ स्वरूप दरशादे अपना खोल के अखण्ड द्वार।
धन धन तेरी ... ॥३॥

कवि और गायक स्वामी भीष्म

शताधिक आयु प्राप्त स्वामी भीष्म पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशक थे। उनका जन्म कुरुक्षेत्र जिले के ग्राम तेवड़ा में श्री बारुराम के यहां हुआ। इनका बचपन का नाम लालसिंह था। कुछ काल तक इन्होंने सेना में काम किया। कालान्तर में फौज की नौकरी छोड़ दी तथा संन्यास ग्रहण कर लिया। प्रारम्भ में इन्होंने ज्ञानस्वरूप नामक वेदान्ती ब्रह्मचारी के सत्संग में विचारसागर तथा वृत्ति प्रभाकर ग्रन्थों का अध्ययन किया जो हरयाणा के साधु निश्चलदासद्वारा लिखित थे। इस कारण कुछ समय तक आप पर अद्वैत वेदान्त का प्रभाव रहा। तत्पश्चात् जब आपने सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किया तो विचारों में आमूलचूल परिवर्तन हो गया और वे दृढ़ वैदिक धर्मावलम्बी बन गये। अब वे संगीत तथा गायन के माध्यम से धर्मप्रचार में अवतीर्ण हुए और दीर्घ काल तक भजनों के द्वारा धर्म प्रचार किया।

स्वामी भीष्म के प्रचार का क्षेत्र मुख्यत: पंजाब, हरयाणा, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान जैसे हिन्द भाषी प्रान्तों में था। दिल्ली में आपका स्वामी श्रद्धानन्द से सम्पर्क रहता था तथा उनके आदेशानुसार वे अबला उद्धार तथा शुद्धि आदि के कार्यों में सदा भाग लेते थे। स्वामी भीष्म का चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह तथा अशफाकुल्ला आदि क्रान्तिकारियों से सम्पर्क रहा जो यदा कदा उन्हें मिल जाते थे। उन्होंने यमुना के किनारे अपना आश्रम बताया जिसे केन्द्र बनाकर वे यत्र तत्र प्रचारार्थ चल पड़ते। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से उनकी भेंट हुई थी तथा उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया था। उनका लालबहादुर शास्त्री से भी परिचय था जो युवावस्था में उनके ग्राम करेहड़ा में यदा कदा आते रहते थे। उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन में भाग लिया तथा कारावास की यातनाएं सहन की। २४ मई १९८१ को कुरुक्षेत्र में स्वामी भीष्म का विशाल स्तर पर अभिनन्दन किया। उस अवसर पर इन पंक्तियों के लेखक के सम्पादकत्व में एक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया। इसमें स्वामी भीष्म का विस्तृत जीवनचरित्र तथा उनके द्वारा रचित काव्य ग्रन्थों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। सन् १९८४ में इनका निधन हो गया।

स्वामी भीष्म ने अपने प्रचार काल में जिन काव्य ग्रन्थों की रचना तथा प्रकाशन किया उनकी समग्र सूची भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ में दी गई है। उन्होंने भारतीय इतिहास के महापुरुषों तथा संन्यासियों के इतिहास को पद्यबद्ध लिखा ऐसे इक्यावन ग्रन्थों की सूची अभिनन्दन ग्रन्थ में इन पंक्तियों के लेखक ने दी है। भीष्मजी की अधिकांश रचनाएं अग्रवाल बुक डिपो दिल्ली तथा देहाती पुस्तक

भण्डार दिल्ली ने प्रकाशित की है।

स्वामी भीष्म के काव्य में विविध विषय संकलित है। इसमें धर्म, अध्यात्म, दर्शन, समाजसुधार, कुरीति निवारण, राष्ट्रप्रेम, महापुरुषों का गौरव गान आदि विषय विवेचित हुए हैं। आध्यात्मिक विषयों में ईश्वर का स्वरूप, योग द्वारा परमात्मा की प्राप्ति, 'ओम्' नाम का महत्त्व आदि विषय आये हैं। दार्शनिक विषयों में उन्होंने ईश्वर जीव तथा प्रकृति की अनादिता तथा अद्वैतवाद एवं मायावाद का खण्डन जैसे विषय लिए हैं। स्वामी दयानन्द के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते समय उनकी लेखनी भावुक हो उठती है।

निम्न कविता **दयानन्द महिमा** की है -

देश में अंधकार देख दीन दुःखी ... देख,
करने को उद्धार देख प्रकटे आनन्द कन्द थे।
वेदाज्ञा भंग देख, ... अपंग देख,
भाई भाई में जंग देख चमके पूरण चंद थे।
सुख और सम्पत्ति त्याग घर से निकले थे भाग,
बढ सत्य मार्ग पर सबके कारे फन्द थे।
सबको वैदिक ज्ञान दे सत्यासत्य पहचान दे,
भीष्म तू ध्यान दे ऐसे स्वामी दयानन्द थे॥

पुनः लोक प्रचलित गायन शैली में लिखा,

.......ऋषि के हैं कितने अहसान।
विद्वानों को मालूम हैं कोई क्या जाने नादान।

संदर्भ - स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ - १९८१

वेदविषय के विषय में प्रसिद्ध गीत की कुछ पंक्तियां अधोलिखित है

"गीत"

ऐजी-ऐजी वेद का है ऊँचा स्थान।
जैनी सिक्ख इसाई समझकर देखो मुसलमान॥
वेद के मायने है ज्ञान, ज्ञान का प्रकाश करो।
ज्ञान का प्रकाश करके, अन्धकार नाश करो॥
असत्य को त्यागो और सत की तलाश करो।
सत को समझने खातिर योग का अभ्यास करो॥
सबको मित्र समझो प्राणी मात्र का सत्कार करो।
सन्दर्भ जागो और जगाते रहो॥

गायन तथा वाक्चातुर्य के धनी :

कु. सुखलाल आर्य मुसाफिर

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले ने जितने उपदेशक, प्रचारक तथा भजनीक आर्य समाज को दिये हैं, उतने शायद ही देश के किसी अन्य जिले ने दिये हों। गायन, वक्तृता तथा काव्य, रचना का अद्भुत संगम कु. सुखलाल में दिखाई दिया। जिनका अध्ययन आगरा स्थित आर्य मुसाफिर विद्यालय में हुआ था। युवावस्था से आरम्भकर जीवन के अन्त तक वे वैदिक धर्म का प्रचार गायन, प्रवचन तथा अपने अद्भुत वाक्चातुर्य के माध्यम से करते रहे। उर्दू तथा हिन्दी का सुखद मेल उनकी कविता में दिखाई पड़ता है। आर्य नेता स्व. घनश्यामसिंह गुप्त के साक्ष्य से पता चलता है कि महात्मा गांधी उनकी भजन, गायन शैली तथा विचारों को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किये जाने के उनके अंदाज से अत्यधिक प्रभावित थे। देश की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेनेवाले आर्य मुसाफिर कट्टर राष्ट्रवादी तथा आर्यसमाज के समर्पित प्रचारक थे। इन पंक्तियों के लेखक ने उनकी उपलब्ध रचनाओं का सम्पादन 'मुसाफिर की तड़प' शीर्षक से किया है जो चौ. मित्रसेन आर्य द्वारा परममित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक द्वारा प्रकाशित किया गया है।

प्रसिद्ध गायक, कवि, उपदेशक तथा प्रगल्भ वक्ता कु. सुखलाल आर्य मुसाफ़िर का जन्म बुलन्द शहर जिले के अरनियां ग्राम में १८९० ई. में हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर भीमसिंह था। १२-१३ वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने स्वगृह का त्याग कर दिया और गुरुकुल सिकन्दराबाद (जिला बुलन्द शहर) चले गये। यहां इन्होंने गुरुकुल के आचार्य पं. मुरारीलाल शर्मा के समीप रहकर विद्योपार्जन तथा वक्तव्य कला का अभ्यास किया। पुनः पं. भोजदत्त शर्मा द्वारा अमर शहीद पं. लेखराम की स्मृति में स्थापित किये गये मुसाफ़िर विद्यालय आगरा में चले गये। यहां निरन्तर बारह वर्ष रहकर आपने उपदेशक का प्रशिक्षण लिया। इसी विद्यालय में उन दिनों महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन (तत्कालीन पं. केदारनाथ) ठाकुर अमर सिंह (बाद में अमर स्वामी), पं. रामसहाय शर्मा (राजस्थान के प्रसिद्ध धर्मप्रचारक ओम् भक्त वानप्रस्थ) तथा मौलवी महेश प्रसाद (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अरबी-फ़ारसी के प्राध्यापक) आदि गणमान्य व्यक्ति अध्ययनरत थे। राहुल जी ने अपनी आत्मकथा में एक संपूर्ण अध्याय मुसाफिर विद्यालय को

समर्पित किया है तथा कुं. सुखलाल के विषय में लिखते हुए यह स्वीकार किया है कि उन्हीं की कविताओं और भजनों से उन्हें देशभक्ति की प्रेरणा मिली।

१६-१७ वर्ष की अवस्था में ही कुंवर साहब ने अपना प्रचार आरम्भ कर दिया था। इनका प्रभावशाली वक्तव्य-कौशल उन्हें असाधारण ख्याति प्राप्त कराने में सफल रहा। शीघ्र ही संयुक्त प्रांत, पंजाब, सिंध, यहां तक कि उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रदेश तक इनके उपदेशों की ख्याति फैल गई। १९१४ में ये आगरा से पेशावर पहुंच गये और पूरे एक मास तक भजनों के माध्यम से प्रचार करते रहे। उस समय की एक रोचक घटना का उल्लेख महात्मा अमर स्वामी जी ने इस प्रकार किया है, ''सीमांत प्रांत में एक बार आपने भाषण के दौरान कहा, हिन्दू लोग कुत्तों और बिल्लियों के साथ तो प्यार करते हैं और अपने भाईयों-भंगियों और चमारों को अछूत मान कर उनसे घृणा करते हैं।'' इस पर गुप्तचर विभाग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि वक्ता ने कुत्तों और बिल्ली ईसाई और मुसलमानों को कहा है। पुलिस ने चटपट कुंवर साहब को गिरफ्तार कर उन पर अभियोग चला दिया। जब पेशावर का कोई वकील इनकी पैरवी करने को तैयार नहीं हुआ तो कुंवर साहब स्वयं ही अपना मुकद्दमा लड़ने के लिये तैयार हो गये। लगभग ३ मास तक अभियोग चलता रहा। अन्ततः मजिस्ट्रेट ने इन्हें बरी कर दिया परन्तु उस अंग्रेज अधिकारी ने यह अवश्य पूछा, मिस्टर सुखलाल तुम आगरा से हजारो दूर यहां पेशावर में प्रचार करने क्यों आये? कुंवर साहब ने निर्भीक भाव से उत्तर दिया-**मैजिस्ट्रेट साहब, आगरा और पेशावर दोनों ही हिन्दुस्तान में हैं। जब आपके ईसाई पादरी सात समुद्र पार इंगलैंड से ईसाई मत का प्रचार करने यहां आ सकते हैं तो मैं अपने ही देश में अपने धर्म का प्रचार क्यों नहीं कर सकता?** अन्ततः मजिस्ट्रेट ने इन्हें सीमांत प्रदेश छोड़ कर चले जाने का आदेश दिया और यह आशंका प्रकट करते हुए कि इनके व्याख्यानों से शान्ति भंग हो सकती है, पुलिस को निर्देश दिया कि वह इन्हें आगरा छोड़ आयें। इस प्रकार कुंवर सुखलाल को पुनः इस प्रांत में जाने का अवसर कभी नहीं मिला।

इसी वर्ष १९१४ में कुंवर सुखलाल मुल्तान आर्यसमाज के उत्सव में सम्मिलित हुए। उत्सव आरम्भ होने के पहले ही इन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया तथा पांच दिन तक निरन्तर हवालात में रखा। इसके पश्चात् तत्कालीन गवर्नर माईकेल ओडायर ने इन्हें पंजाब से निष्कासित करने का आदेश दिया। अब इनका

कार्यक्षेत्र मुख्यतः उत्तरप्रदेश हो गया। जालौन जिले के कौंच कस्बे के आर्यसमाज के उत्सव पर कुंवर सुखलाल को आमंत्रित किया गया। कुंवर साहब का प्रभावशाली भाषण रात्रि को १२ बजे समाप्त हुआ। जब ये अर्द्धरात्रि को आर्यसमाज के कतिपय अधिकारियों के साथ उत्सव स्थान से लौट रहे थे तो रास्ते में मुसलमानों के झुण्ड ने इन पर आक्रमण किया। मुसलमानों को भड़काने में इस्लाम के एक प्रचारक ब्रह्मचारी कुतुबुद्दीन परदेशी का बड़ा भारी हाथ था। इस आक्रमण में सुखलाल जी बुरी तरह से घायल हो गये। सिर फट गया और ये भूमि पर गिर पड़े। मुसलमानों ने इन्हें मरा समझ लिया और पकड़े जाने के भय से भाग गये। साथ वाले लोग भी भयभीत होकर पलायन कर गये। सबेरे जब आर्यों ने आपका पता किया तो ये रक्त से लथपथ अचेतन अवस्था में पड़े थे। इन्हें उसी दशा में उठाकर लाया गया तथा अस्पताल में चिकित्सा कराई गई। कुंवर साहब के घायल होने का समाचार पाकर मुसाफिर विद्यालय आगरा के तत्कालीन संचालक डा. लक्ष्मीदत्त जी (पं. भोजदत्त जी के पुत्र) भी इन्हें देखने आ पहुंचे। किंचित स्वास्थ्य लाभ करने के उपरांत कुं. साहब को पुनः उसी कस्बे में एक विशाल सभा में विराट् समूल को सम्बोधित करने का अवसर मिला। यद्यपि शरीर में पर्याप्त मात्रा में रक्त निकल जाने के कारण कुंवर साहब दुर्बलता अनुभव कर रहे थे, परन्तु समय प्रसंगानुकूल आपने निम्न वीरभाव युक्त गीत गाया-

शीश जिनके धर्म पर चढ़े हैं झण्डे दुनियां में उनके गड़े हैं।
एक लड़का हक़ीक़त था नामी सार जिसने धर्म की थी जानी।
जग में अब तक है उसकी निशानी। शीश कटवाने को खुश खड़े हैं॥

कुंवर साहब की इस वीर गर्जना को सुनकर जनसमाज भावुकता से आप्लावित हो गया। लोगों की आंखो से अश्रु-धारायें बह निकलीं।

इसके उपरान्त स्वल्पकाल तक आगरा रहकर कुंवर साहब ने स्वास्थ्यलाभ किया। पुनः धर्म-प्रचारार्थ तीन मास के लिये पडौसी ब्रह्मदेश (बर्मा) में चले गये। वहां से लौटे तो देश को स्वतंत्र करने के लिये चलाये गये स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। १९२१, १९२२ तथ १९३० में विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने के कारण सुखलाल जी को अनेक कार कारावास तथा जुर्माने का दण्ड मिला। १९३९ में जब धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये आर्य समाज को निज़ाम की हैदराबाद रियासत में सत्याग्रह करना पड़ा तो कुंवर साहब भी पीछे नहीं रहे। चतुर्थ सर्वाधिकारी

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री के साथ सत्याग्रह करते हुये इन्हें गिरफ्तार कर गुलबर्गा जेल में भेज दिया यहाँ महात्मा आनन्द स्वामी उनके साथ थे। जेल में रहते हुये आपने कारावास के कठोर एवम् यंत्रणादायी जीवन का मार्मिक चित्रण करते हुये अनेक ग़ज़लें लिखीं। एक ग़ज़ल की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

यह कैसा फ़साना है यह कैसी कहानी है।
सुन कर जिसे महफ़िल की हर आंख में पानी है॥
और अन्त में लिखा -
क्या खाक लिखें जबकि महबस पें मुसाफ़िर को।
दो ज्वार की रोटी हैं और दाल का पानी है।

जेल में दिये जाने वाले निकृष्ट भोजन की ओर कवि ने व्यंग पूर्व संकेत किया है।

लाहौर की अनारकली आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों पर वे प्रति वर्ष बुलाये जाते थे और हजारों की संख्या में उपस्थित जनता केवल उनके भाषण को सुनने के लिये ही अर्द्धरात्रि व्यतीत हो जाने पर भी शांत भाव से बैठी रहती थी। ऐसा था उनकी वाणी का आकर्षण। सचमुच वे वाणी के जादूगर थे। उनकी वक्तृता में काव्य और संगीत का अद्‌भुत मिश्रण रहता था। वे प्रारम्भ में एक भजन गाते पुनः उनकी निर्बाध वक्तृता प्रारम्भ हो जाती जो श्रोता मण्डली को विस्मय विमुग्ध बनाये रखती। २ जनवरी १९८१ को ९२ वर्ष की परिपक्व आयु में कुंवर साहब का निधन हुआ। आपके प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है -

ईश-समर्पण

तू ही इष्ट मेरा, तू ही देवता है, तू ही बन्धु मेरा माता तू पिता है।
नहीं है कोई चाहना और दिल में, तुझे चाहता हूँ यही चाहना है।
रहा ढूंढता है तुझको कब से जमाना, तू दिल में है और दर्दे दिल की दवा है।
खत्तावार है दर असल अहले दुनिया, फकत इक तू ही विश्व में देखता है।
जहालत से हम तुझको देखें न देखें, मगर तू हमें हर घड़ी देखता है।
बहुत कोशिशें की, बहुत सिर खपाया, समझ में न आया कि संसार क्या है।
जवानों जवानी में, कुछ काम कर लो, समझते हो जिसको जवानी हवा है।
पता पत्ता-पत्ता तेरा दे रहा है, सरासर गलत है कि तू लापता हैं।
'मुसाफिर' जरा इस मुसाफिर से पूछो, कहां है चला ? कहां जा रहा है।

बतायें तुम्हें हम दयानन्द क्या थे ?

ऋषि थे मुनि थे, कोई देवता थे। अँधेरे में ठोकर जो जन खा रहे थे।
वह उन गुमरहों के लिए रहनुमा थे। जिन्हें हमने गलती से समझा था दुश्मन।
वही राष्ट्र-नौका के नाविक महा थे। उन्हीं की थी हिम्मत बचाया अगर ना।
निशाँ हिन्दुओं के मिटे जा रहे थे। दयानन्द दर्दे वतन की दवा थे।

आर्यों का आह्वान

बनो आर्य खुद और जहां को बना दो।
जो कहते हो दुनियां को करके दिखा दो॥
प्रभु एक है वेद है उसकी वाणी।
ये पैगाम स्वामी का घर घर सुना दो॥
न ऋषियों की तहजीब मिट जाए वीरों।
मिटाए जो इसको, उसे तुम मिटा दो॥
हंसाओ न दुनियां को लड़लड़ के बाहम।
समाजों में उल्फत की गंगा बहा दो॥
जहालत की दीवारें अब तक खड़ी है।
उठो और उन्हें बोखो बुन से हिंला दो॥
भटकते बहुत तिश्नालब फिर रहे हैं।
मुसाफिर उन्हें जामे वहदत पिला दो॥

पुण्य एवं पाप वृत्ति

अगर पाप में आपका दिल नहीं है, तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है
न हो उसको खलू से प्यारा जिसको वो आबिद कहाने के काबिल नहीं है
तुझे दुनियां काबू में कर लेगी नादां जो काबू में तेरे तेरा दिल नहीं है
ये हस्ती है किसकी तू रहता है जिसमें अगर उसकी हस्ती का कायल नहीं है
जिसे दुनियां कहते हैं अय दुनियां वालों, ये रणक्षेत्र है कोई महफिल नहीं है
हथेली पै हो जिसका सर इसमें कूदे ये दुनियां है वो जिसका साहिल नहीं है
मुसाफिर है तू हार हरगिज न हिम्मत जरा और चल दूर मंजिल नहीं है

ठाकुर उदयसिंह 'ठाकुर कवि'

आर्यसमाज के मूर्धाभिषिक्त भजनोपदेशक भ्रातातुल्य पं. ओमप्रकाश वर्मा के मुख से अनेक बार ठाकुर कवि के पद्य तथा सुन्दर सूक्ति-सुमनों को सुनने का अवसर मिला तो इस कवि के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। अवसर आया, आर्य समाज बड़ा बाजार सोनीपत के वार्षिकोत्सव के अवसर पर जब मैं और वर्माजी साथ ही आमंत्रित थे। उसके बाद जो जानकारी उनसे मिली और कवि ठाकुर की सरस काव्य रचना के कुछ नमूने उनके स्मृतिकोश से प्राप्त किये उन्हें यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। कवि ठाकुर का वास्तविक नाम ठाकुर उदयसिंह था और वे अलीगढ़ के प्रेमपुर ग्राम के निवासी थे। उनका जन्म १८९२ में हुआ और ९० वर्ष की आयु प्राप्त कर १९८२ में दिवंगत हुए। उनका अध्ययन तो शायद दसवीं श्रेणी तक हुआ था किन्तु हिन्दी, उर्दु, तथा अंग्रेजी का उनका ज्ञान पर्याप्त था। आर्यसमाज के प्रारंभिक काल में अधिकांश भजनोपदेशक उत्तरप्रदेश के मेरठ, अलीगढ़, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर तथा बुलन्दशहर आदि जिलों में ही हुए हैं। उन्होंने मध्यकालीन इतिहास की अमरकथाओं को काव्य का रूप दिया। इनमें कुछ थी- महाराणाप्रताप, चन्द्रहास, रणसिंह और कुंवरदेवी आदि। लगभग पचास वर्ष तक वे आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतर्गत वैदिकधर्म का प्रचार करते रहे।

यहां उनकी कुछ काव्य रचनाओं को उद्धृत किया जा रहा है। इससे उनके काव्य कौशल का अच्छा परिचय मिल सकेगा। ऋषि दयानन्द की महिमा में लिखी गई उनकी उर्दू गज़ल का मुलाहिजा फरमायें-

बताएं हम तुम्हें दयानन्द क्या था, वो दस्ते कुदरत का एक मौज़िजा था।
(प्रकृति के हाथ का एक आश्चर्य था)
सुनाता था अहकाम वो आसमानी, इसी वास्ते वो रसूले खुदा था।
(ईश्वरीय-संदेश सुनाने के कारण उसे ईश्वर का दूत कहा जा सकता है)
लुटाता था वैदिकधर्म का खजाना
महादानी दानी करण से सवा (सवाया-उत्कृष्ट) था।
आदित्य ब्रह्मचारी बन कर रहा वो कलियुग को वो मिस्ले (तुल्य) भीषम पिता था।

उसे याद करते है सब दोस्त दुश्मन।

कहो क्यों न 'ठाकुर' कि वह औलिया (उच्च कोटि का साधु) था।

कवि को भारत के कतिपय देशभक्तों तथा प्रतिभावान् पुरुषों में दयानन्द की आत्मा का प्रकाश दिखाई देता है। इस भाव को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

कोकिला न कूके काहू देश में सरोजिनी सी,
कोविद कवीन्द्र में रवीन्द्र ही सितारे हो।
काहू देश कोश में मिले न जगदीश बोस,
गामा (पहलवान) जगजीत को जीव न अखारो है।
मोती अक जवाहर (नेहरू) मिले न रत्नाकर में,
साधु न मिलेगा जैसा ये लंगोटी वालो (गांधी) है।
कहे कवि ठाकुर मानो चाहे मत मानो
सबकी आत्मा में दयानन्द को उजारो है ॥

यदि स्वामी दयानन्द का धराधाम पर अवतरण नहीं होता तो कैसी स्थिति हो जाती, इसे कवि ने निम्न सवैया में बताया है। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज की प्रशंसा में कुछ ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं **'जो शिवाजी न होता तो सुनत होती सबकी'** जैसे वाक्यों में व्यक्त हुए हैं।

दयानन्द महिमा का ठाकुरकृत पद्य-

वेद के भेद कहां खुलते अरु पुरान की प्रति मोटी होती।
तुलती ही गप्पों की तोल धड़ाधड़, खोटे खरे की कसौटी न होती।
हिन्दू न हिन्दी न हिन्द रहे थे, अंग में फाटी लंगोटी न होती।
'ठाकुर' राम के वंशज कर गौ बोटी तो होती, पर चोटी न होती॥

भौतिकता को प्रधानता देनेवाले वर्तमान युग की विडम्बना को कवि ने निम्न कविता में चमत्कारपूर्ण शैली में व्यक्त किया है-

सोचो ले जाया जाय पार किस तरह धर्म की नैया को।
जब लगा पूजने जग सारा ईश्वर की जगह रूपैया को।
वेदों की कथा को सुनने को आये तो आये चार जना।
लाखों की जनता टूट पड़ी सुनने ताता थैया (वेश्या-नृत्य) को।
बाबू साहब के कुत्ते भी यहां दूध सूंघ कर हट जाते हैं।

खल (गौ का खाद्य) का टुकड़ा दिया नहीं भारत की गैया मैया को।

हो एक बात तो बतलाऊं 'ठाकुर' इस पागलखाने की।
जब राष्ट्रपति को दस हजार, मिलता दस लाख सुरैया (अभिनेत्री) को ॥

सृष्टि रचयिता की रचना तो बुद्धिपूर्वक ही हुई है, चाहे हम अल्पज्ञों को उसका रहस्य समझ में न आये, यह भाव इस कविता में देखें।

दुनिया बनानेवाले ने दुनिया बनाई, रचना समझ में मेरे न आई।
निर्जन वन में फूल खिलाये सोने में क्यों न सुगंध समाई।
गन्ने में फल भी लगाया तो होता, चंदन में क्यों न कलियां खिलाई।
काबुल में किशमिश ब्रज में है टैंटी (करील के फल)।
पशुओं में कैसी कस्तूरी जमाई।
यदि कोई और होता ठाकुर कविजी, उसे मूरख बनाती सारी खुदाई।

सांसारिक विषयों में तल्लीन जीव को प्रबोधन देता कवि कहता है -

विषयों में फंसकर ए मूरख, भगवान् भजन क्यों छोड़ दिया।
है शोक ऋषि और मुनियों के सब चाल-चलन को छोड़ दिया।
यहां बड़े-बड़े मतिवाले भी माया में हुए मतवाले,
पापन के कटीले कांटों में गुलजार चमन (प्रफुल्लित उद्यान) को छोड़ दिया।
स्वार्थ के इन टुकड़ों पर तू कत्तों की तरह दर-दर भटका,
दो रोटी के बदले हमने संध्या हवन को छोड़ दिया।
तेरे प्रेम का चस्का लगते ही देखा राजा महाराजों को,
देही पर भस्म रमा बैठे और तख्ते वतन को छोड़ दिया।
तेरे अनुराग के दीपक पर मेरा मन जब पतंग बना,
तब पार हुआ भवसागर से आवागमन को छोड़ दिया।
'ठाकुर' जिस पर तूने तन मन धन सब वारा था,
उसने श्मशान में जाकर के चार हाथ कफन को छोड़ दिया।

जिस दीपवली के दिन महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ तथा ऋषि दयानन्द ने महाप्रस्थान किया उसे उलाहना देते हुए कवि ने लिखा -

जैन अचारी(आचार्य)गुणधारी तपी ब्रह्मचारी महावीर स्वामी की जोत बुझाई है।
भक्ति रससना मस्ताना स्वामी रामतीर्थ उसकी छटा तूने गंगा में डुबोई है।
जगहितकारी वेद के प्रचारी दयानन्द ब्रह्मचारी को अनन्त में विलाई है।

कहे कवि 'ठाकुर' ऐते अधम अघन (पाप) कर कारे मुखवारी तू दिवाली फिर आई है।

यहां इस प्रतिभाशाली कवि ठाकुर के रससिक्त काव्य की एक झलक ही दी जा सकी है। हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि आर्यसमाज से जुड़े इन दिवंगत कवियों, गायकों और भजनोपदेशकों के जीवन और कृतित्व का लेखा-जोखा एक बार पुनः लिया जाये।

कवि की १. उदयप्रकाश, २. चन्द्रहास, ३. छत्रपति शिवाजी, ४. महाराणा प्रताप, ५. योद्धा छत्रसाल, ६. ठाकुर तरंग, ७. ठाकुर विलास, ८. वेद और कुर्आन के दो-दो हाथ आदि अन्य रचनायें भी हैं।

उपदेशकों की दशा का वर्णन ठाकुर कवि ने इस प्रकार किया है -

शीष पर बिस्तर और बगल में छतरी लगी,
एक हाथ बैग दूजे बालटी संभाली है।
दिन गया धक-धक में रात गई बक-बक में,
कभी है अपच और कभी पेट खाली है।
जंगल में सलूना और सड़क पै दशहरा मना,
मोटर में होली और रेल में दिवाली है।
पुत्र मरा सावन में और पत्र मिला फागुन में,
'ठाकुर' इन उपदेशकों की दशा भी निराली है॥

कवि ने दीपावली के दिन ऋषि स्मृति में श्रद्धा सुमन निम्न प्रकार से अर्पित किये -

टार के अविद्या गुरु ज्ञानियों की गैल गही
वेद प्रतिपादित सुपद्धती पसन्त की।
विधवा विवाह की पुनीत प्रथा कायम कर
विषम विवाह की विषैली विधि बंद की।
झूठे मतवादियों के मतछिन्न भिन्न कर,
ज्योति जगाई जगदीश सुखकन्द की।
इसी से दिवाली हर साल दीप माला लेके,
आरती उतारती है देव दयानन्द की॥

काव्य तथा गायन का सुखद समन्वय :

पं. सिद्ध गोपाल

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दिल्ली स्टेशन पर एक अंग्रेज महिला द्वारा संचालित सिगरेट के स्टाल का एक सेल्समैन कभी आर्यसमाज का एक समर्पित धर्म प्रचारक बनकर अपना अवशिष्ट जीवन वैदिक शिक्षाओं के प्रचार में समर्पित कर देगा। उच्च कोटि के कवि, गायक तथा प्रचारक पं. सिद्धगोपाल में यह तथ्य चरितार्थ हुआ था। इनका जन्म इटावा जिले के अजीतमल कस्बे में एक वैश्य परिवार में हुआ। पिता थे रामचरण अग्रवाल थे। बचपन में ही इनके माता-पिता की मृत्यु हो गई तथा इनका पालन पोषण हाथरस के एक वैद्य ने किया। बड़े होने पर जीविका निर्वाह के लिए सिगरेट की सैल्समैनी भी की किन्तु जब आर्यसमाज के सिद्धान्तों से परिचय हुआ तो नौकरी छोड़ दी और काव्य-गायन के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार में लग गये।

आर्यसमाज (नगर) जोधपुर के पचास-साठ साल पहले के एक वार्षिकोत्सव में इन पंक्तियों के लेखक को कविवर सिद्धगोपाल का गद्यपद्यमय प्रवचन सुनने का अवसर मिला था। वे बिना किसी वाद्य के, भाव कवितापाठ द्वारा ही अपना स्फूर्तिमय प्रवचन करते हैं। पाकिस्तान की पुरुषवेला के पहले उन्होंने देश-विभाजन के लिए उधार खाए लोगों से ओजस्वी वाणी में पूछा था -

पाकिस्तान जिसे कहते, वो क्या हे पाकिस्तान मियां।

इनमें कवित्व तथा गायन दोनों कलाओं का मणिकांचन संयोग था। स्वरचित कविताओं से घण्टों तक श्रोताओं को रस विभोर करने की क्षमता इनमें थीं। १८ नवम्बर १९४७ को इनका हाथरस में निधन हो गया।

कविवर सिद्धगोपाल की स्फुट कविताओं का संग्रह गोपाल कुसुमांजलि शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। सिद्धगोपाल खड़ी बोली में सरस तथा भावप्रवण काव्य रचना करने में सिद्धहस्त थे। इन्होंने कवित्त जैसे पुराने छन्दों का प्रयोग तो किया ही है साथ ही नवीन शैली में भी उत्कृष्ट कविता लिखी है। काव्य में श्रृंगार, करुण, शान्त आदि रसों के प्रयोग का निषेध करते हुए कवि ने इस समय वीर रस के काव्य की रचना को श्रेयस्कर माना है। उनका कथन हे -

शान्त औ सिंगार के न गाओ गीत कवि आज,
नहीं है अवस्था आज ऐसे गान गाने की ।
गया है जमाना लद आद और नजाकत का,
नहीं काम देगी आज आदत जनाने की ।
जातियों के जीवन संग्राम में न काम देगी,
बान करुणा की और आँसू बरसाने की ।
काम देगी एक ही कायरता को दूर कर,
धारो बन वीर धीर बान मरदाने की ॥

महाकवि पद्माकर के वसन्त वर्णन की शैली का अनुकरण एक भिन्न कविता में देखा जा सकता है -

प्रस्तर प्रसून पयोराशि औ प्रभाकर में,
प्रभव प्रलय में प्रभु पंचभूत पुंज में
चन्द्रमा चकोर चारु चित्र चपला में रमें,
तरल तरंगिणी तरंग तृण मुंज में ।
मीन में मराल में मतंग में मयूरन में
मंजु मंजरी में मकरन्द अलि गुंज में ।
मार में मलय में दल्लिका में मालती में सदा,
आपकी समाई नेह सुषमा निकुंज में ॥

कवि ने अनुप्रास का सुन्दर निर्वाह करते हुए परमात्मा की सर्व-व्यापकता को प्रकट किया है ।

हिन्दी में महाकवि बच्चन की 'मधुशाला' शीर्षक कविताएँ तथा मधुशाला के प्रतीकों को लेकर लिखे गए मधुबाला, मधुकलश आदि काव्य संग्रह एक समय में कविता पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय हुए थे । मधु, मधुशाला, मधुबाला, हाला, प्याला, साकी बाला आदि के प्रतीकों के वास्तविक अभिप्राय को न समझकर अनेक लोग इन कविताओं को मदिरापान के समर्थन में लिखी गई समझते थे । 'मधुशाला' के प्रतीकात्मक अर्थों की ओर ध्यान न देनेवाले लोगों ने इस कविताओं का विरोध भी किया था । कविवर सिद्धगोपाल ने भी अपनी 'ओ मतवाले' शीर्षक कविता में इसी प्रकार के भाव व्यक्त किए हैं -

ओ मधुशाला के मतवाले,
अब नाम न ले मधुशाला का
अब ध्यान छोड़ दे हाला का
अब मान न कर मद प्याला का
साकी अरु सुन्दर बाला का
चिन्तन मत कर बैठे ठाले।

कवि की स्वदेश भक्ति प्रशंसनीय है। वह भारत माता को आश्वासन देता है कि उसकी करुण दशा सुधरेगी और उसके सभी कष्ट दूर होंगे। द्विवेदी काल के काव्य में स्वदेश भक्ति की जो भावनाएँ हिन्दी काव्य मेंसर्वत्र दिखाई पड़ी थीं, उनका प्रभाव कवि सिद्धगोपाल की कविता पर भी दृष्टिगोचर होता है -

माँ मत रो।
क्यों करती है करुणा क्रन्दन ?
क्यों होती है अतिशय उन्मन ?
क्यों करती है कृश जर्जर तन ?
कट जावेंगे माँ तब बन्धन
इक रोज, रही क्यों आशा खो !

परिवर्तन संसार का नियम है। सृष्टि में हम सर्वत्र इसे देखते हैं। फिर निराशा का क्या कारण है ? अतः कवि कहता है -

होता संसृति में परिवर्तन,
नर्तन नितनित होते नूतन।
बन विकट वहाँ जहाँ थे नन्दन,
जनवाद जहाँ था है निर्जन,
गति विधि ये ही जग की लख लो।
माँ मत रो !

सुरीले गायक एवं कवि :

पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न

काव्य, गायन तथा प्रभावशाली प्रवचन इन तीनों का संगम पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न में देखा गया। यह कल्पना करना भी कठिन था कि पौराणिक जगरातों तथा रामलीलाओं में भाग लेनेवाला कोई युवक आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर अपने अवशिष्ट जीवन को वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगा देगा। प्रकाशचन्द्र के जीवन में इस तथ्य को प्रत्यक्ष देखा गया। उत्कृष्ट कवि, गायक तथा प्रचारक पं. प्रकाशचन्द्र का जन्म आश्विन शुक्ल ९ वि.सं. १९६० वि. (सन् १९०३) में अजमेर में हुआ। पिता पं. बिहारीलाल कट्टर पौराणिक थे। उनके संस्कार पुत्र दुर्गाप्रसाद (कवि का पूर्व नाम) को मिले जो अपना अधिकांश समय पौराणिक भजन गायन में व्यय करता था। यही युवक जब राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक पं. रामसहाय शर्मा के सम्पर्क में आया तो आर्यसमाज का समर्पित प्रचारक बन गया। जीविका निर्वाह के लिए भड़ौच (गुजरात) की एक मिल में लिपिक का कार्य किया, किन्तु १९१९ में घटित जलियांवाला बाग के अमानुषिक हत्याकाण्ड ने उन्हें विचलित कर दिया और वे नौकरी छोड़कर वैदिक धर्म तथा स्वदेश की सेवा में लग गये। गुजरात में रहते समय शुक्लतीर्थ के मेले में ईसाई प्रचारकों को ग्रामीण एवं भोले भाले हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हें ईसाइयत में प्रविष्ट कराने का क्रूर कृत्य जब उन्होंने देखा तो वे अपना भावी जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित करने का निश्चय कर बैठे। अजमेर में उन्हें कुं. चांदकरण शारदा तथा पं. जियालाल आदि आर्य नेताओं का मार्गदर्शन मिलता रहा।

सन् १९२५ में जब मथुरा में ऋषि दयानन्द की जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन हुआ तो प्रकाशचन्द्र ने अपना प्रसिद्ध भजन वहां गाया जिसके बोल थे -

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।

इस मार्मिक भजन को असाधारण लोकप्रियता मिली और जन जन के कण्ठ से यह गुंजरित होने लगा। प्रकाशचन्द्रजी ने १९३० के सत्याग्रह संग्राम में भाग लिया, जेलयात्रा की। साथ ही सर्वत्र भ्रमण कर आर्य भजनोपदेशक के रूप में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। दैव दुर्विचार से पं. प्रकाशचन्द्र वात रोग से ग्रस्त होकर प्रायः विकलांग हो गये तथापि धर्मप्रचार से विरत नहीं हुए। परोपकारिणी

सभा द्वारा आयोजित ऋषि मेले में आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। शाहपुरा के विगत नरेश राजाधिराज सुदर्शन देवजी की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में कविरत्न जी को अभिनन्दन ग्रन्थ अर्पित किया गया। ११ दिसम्बर १९७७ को अजमेर में उनका निधन हो गया।

कविरत्न जी **कविता कामिनी कान्त पं. नाथूराम शंकर शर्मा** को अपना काव्य गुरु मानते थे। उनके प्रति काव्य प्रसून अर्पित करते हुए उन्होंने लिखा था -

शंकर सरोज सुललित मृदु मकरंद
पान जिसने भी किया वो निहाल हो गया।
अनुराग रस की अनूप आभा अवलोक
अनुराग से विभोर अन्तराल हो गया
गुरुदेव शंकर की कृपा से मैं प्रकाश हुआ
आज जन गण मन मंजु मराल हो गया
अथवा यूं कहूं कबीर के वचन भांति
लाली देखत चला था, मैं भी लाल हो गया।

श्रेष्ठ संगीतज्ञ तथा गायक होने के साथ पं. प्रकाशचन्द्र उत्कृष्ट कवि भी थे। उनकी स्फुट रचनाएं प्रकाश भजनावली (५ भाग), प्रकाश भजन सत्संगी, प्रकाश गीत (४ भाग), प्रकाश तरंगिणी आदि शीर्षकों से छपी हैं। उन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन को चित्रित करते हुए दयानन्द प्रकाश शीर्षक महाकाव्य लिखा जिसका पूर्वार्द्ध १९७१ में छपा। उनके जिन शिष्यों ने भजनोपदेशक के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया उनमें **पं. पन्नालाल पीयूष, श्री भद्रपालसिंह** तथा **त्रिलोकचंद राघव** (चतुर्थाश्रम में **स्वरूपानन्द सरस्वती**) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने अपने शोध ग्रन्थ हिन्दी काव्य को आर्यसमाज की देन में कविरत्नजी के काव्य का विस्तार से विवेचन किया है।

आपके रचित कतिपय भजन अधोलिखित है।

भजन १

वेद वीणा

मधुर वेद-वीणा बजाये चलाजा, जो सोते हैं उनको जगाये चलाजा।
कुकर्मों की कीचड़ में जो फंस रहे हैं, अविद्या-अंधेरे में जो धँस रहे हैं।
उन्हें सत्य-पथ तू बताये चलाजा। मधुर वेद-वीणा ॥१॥
निराकार प्रभु है सभी में समाया, सभी फिर हैं अपने न कोई पराया।
घृणा-फूट मन से मिटाये चलाजा। मधुर वेद-वीणा ॥२॥

चुराना नहीं लोभवश धन किसी का, दुखाना नहीं तुम कभी मन किसी का।
ये सन्देश घर-घर सुनाये चलाजा। मधुर वेद-वीणा ॥३॥
जगत् युद्ध की ज्वाल में जल रहा है, प्रबल चक्र अन्याय का चल रहा है।
मनुजता जगत् को सिखाये चलाजा। मधुर वेद-वीणा ॥४॥
अखिल विश्व में भावना भव्य भर के, स्व-कर्तव्य-उद्देश्य को पूर्ण करके।
तू ऋषि राज का ऋण चुकाये चला जा ॥५॥
समझ के जो चन्दन लगा धूलि बैठे।
उन्हें आर्य फिर तू बनाये चला जा। मधुर वेद-वीणा ॥६॥
प्रकाशार्य ग्रामो गली हाट घर में, नगर-देश देशान्तरों विश्वभर में।
दयानन्द की जय मनाये चला जा। मधुर वेद-वीणा ॥७॥

आनन्द स्त्रोत बह रहा, पर तू उदास है

अचरज है जल में रहकर भी मछली को प्यास है।
फूलों में ज्यों सुवास ईख में मिठास है,
भगवन् का त्यों विश्व के कण-कण में वास है ॥ अचरज.
टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही,
जिसको तू ढूँढ़ता है, सदा तेरे पास है ॥ अचरज.
कुछ तो समय निकाल आत्म-शुद्धि के लिए,
नर-जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ॥ अचरज.
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक,
तू जब तलक **'प्रकाश'** इन्द्रियों का दास है ॥ अचरज.

"दयानन्द-महिमा"

थे न मन्दिर, हाट बाट ठाट।
सोना चांदी कहां पास पैसा था न धेला था।
तन पै न थे सुवस्त्र, हाथ थे न अस्त्र शस्त्र।
जोगी न जमात कोई चेली न चेला था।
सत्य की सिरोही से संहारे सब असत् मत।
संकट विकट मरदानगी से झेला था।
सारी दुनिया के लोग एक ओर थे।
'प्रकाश' एक ओर निर्भय दयानन्द अकेला था ॥

राजस्थानी लोकभाषा के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचारक :

पं. भगवतीप्रसाद अभय

ब्रिटिश भारत में आर्यसमाज की क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रचार करना अपेक्षाकृत सरल था, यदि हम इसकी तुलना राजस्थान के सामन्तवाद से ग्रस्त वातावरण से करें। बाईस देशी राजाओं द्वारा शासित १९४७ से पूर्व का राजस्थान राजशाही, सामन्तवाद तथा जमींदारी प्रथा के विविध पाशों में बंधा था। राष्ट्रीय चेतना को जगाने की बात तो दूर, धार्मिक तथा सामाजिक प्रगतिशील विचारों की अभिव्यक्ति भी सम्भव नहीं थी। ऐसी विषम परिस्थिति में भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के नगर नागौर के निवासी पं. भगवतीप्रसाद अभय ने राजस्थानी भाषा को माध्यम बनाकर जिस प्रकार काव्य तथा संगीत द्वारा राजस्थान के ग्रामनुग्राम, नगर-नगर में वैदिक नाद गुंजाया, वह अपने आप में अद्भुत था, अपूर्व था। यातायात तथा आवागमन के साधनों के अभाव में भी जाना कष्ट झेलकर इस लगनशील प्रचारक ने ऋषि दयानन्द की स्फूर्ति दायिनी विचारधारा को वीरभूमि राजस्थान के डगर डगर में प्रसारित किया वह धर्मप्रचारार्थ उसके समर्पण भाव का परिचायक है।

राजस्थानी तथा हिन्दी में समान रूप से सफल काव्य रचना करनेवाले पं. भगवती प्रसाद अभय का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला १५ सं.१९६२ वि. को राजस्थान के इतिहास प्रसिद्ध नागौर शहर में एक कट्टर रूढ़िवादी पुष्करण ब्राह्मण परिवार में पं. उदयकृष्ण व्यास के यहाँ हुआ। इनके पिता वल्लभमत के अनुयायी पुष्टिमार्गीय वैष्णव थे, किन्तु अभयजी की रुचि शिवपूजा में भी। इन्हें व्यवस्थित रूप से शिक्षा प्राप्त करने के अवसर तो मिले ही नहीं, किन्तु स्वरुचि से ही अभय जी ने साधारण हिन्दी, गणित तथा फलित ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया। इनकी रुचि संगीत तथा भजन गायन में प्रारम्भ से ही रही जो आगे चलकर भजनोपदेशक के रूप में उनकी जीवन यात्रा का सम्बल बनी। इसी बीच उनकी भेंट आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपदेशक पं. रामसहाय शर्मा से हुई और उन्हीं की प्रेरणा से वे उक्त सभा में भजनोपदेशक बनकर धर्म प्रचारार्थ भ्रमण करने लगे। १९७४ तक अभय जी ने देश में सर्वत्र घूमकर धर्म की धूम मचाई। २१ सितम्बर १९९५ को उनका निधन हो गया।

अभय जी की अनेक काव्यकृतियाँ प्रकाशित हुई हैं जिनमें से प्रमुख हैं - वसन्त विहार (तीन भाग), फागुन सुधार भजन, होली रे हेलो, धरती रो हेलो, अभय-भजनावली (चार भाग), अभय गीतांजलि (तीन भाग), राजस्थानी-रसधारा, श्रीकृष्ण सुदामा चरित, कथा कुंज, नागौर नगरदर्शन आदि। अभय जी की काव्य धारा बहुमुखी होकर प्रवाहित हुई है। एक ओर उन्होंने भक्ति, अध्यात्म और धर्म जैसे अनुभूति प्रधान विषयों को अपने काव्य में समाविष्ट किया है तो दूसरी ओर समाज सुधार, कुरीति-निवारण, राष्ट्र निर्माण, देश भक्ति तथा महापुरुषों के पावन चरितों की गाथाओं को भी स्वर दिया है। 'कथा कुंज' में उन्होंने कृष्ण सुदामा की मैत्री कथा, दानवीर कर्ण के भारत कथित उपाख्यान तथा गुजरात की एक लोककथा पर आधारित जसमा ओडन की सतीत्व रक्षा के प्रसंग को काव्य रूप प्रदान किया है। प्रसिद्ध कवि नरोत्तमदास कृत सुदामा चरित ब्रजभाषा की एक कमनीय काव्य कृति है। इसी से प्रेरणा लेकर अभय जी ने राजस्थानी में इस पौराणिक उपाख्यान को प्रस्तुत किया है। सख्य भाव की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति देनेवाले इस खण्ड काव्य की सरसता को अनुभव करने के लिए निम्न पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं -

सेवक रा मुख सूं सुण्यो विप्र सुदामा नाम।
मित्र प्रेम में मगन हो बोल्या श्री घनश्याम॥
प्यासे मित्र प्यारो सखा विप्र सुदामा राय।
धन्य घड़ी आयो अठे उठ्या श्याम हरषाय॥

द्वारिकाधीश कृष्ण से मिलते समय सुदामा के संकोच को कवि ने इस प्रकार अभिव्यक्ति दी -

मन में सोच्यो विप्र यूँ सुण गिरधर री बात।
इणरे लायक है नहीं चावल री सौगात॥

जब कृष्ण ने सुदामा द्वारा भेंट में लाए गए चावलों की दो मुट्ठियाँ चबा डालीं तो राजमहिषी रुक्मणी ने तीसरी मुट्ठी भरकर चावल फाँकने ने उन्हें रोका। कवि नरोत्तमदास ने इस भावपूर्ण प्रसंग को इस प्रकार व्यक्त किया था -

मुठि तीसरी भरत ही रुक्मणी पकड़ी बाँह।
नाथ तुम्हें कैसे भई सम्पति सों अनचाह॥

कवि अभय ने इस प्रसंग को इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

दो मुट्ठि भर खा गए चावल श्री यदुनाथ।

तीजी मुट्ठी जद भरी रुक्मणी पकड्यो हाथ ॥

राजस्थानी रसधारा (प्रथम भाग) में कवि ने धार के राजा मुंज और उसके भतीजे भोज की इतिहास प्रसिद्ध कथा को काव्य का रूप दिया है। राज्य के लोभ में आकर मुंज ने भोज को मरवाने का षड्यन्त्र किया था किन्तु मन्त्री के चातुर्य से राजकुमार भोज के प्राण बच गए। इस प्रसंग को लेकर संस्कृत की निम्न सूक्ति प्रसिद्ध है -

मान्धता महीपति च कृतयुगेऽलंकारभूतो गतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः ॥
अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयो याता दिवं भूपते।
नैकेनापि समं गता वसुमति, मुञ्ज त्वया यास्यति ॥

अभय ने इस संस्कृत पद्य का राजस्थानी रुपान्तरण इस प्रकार किया है -

सतयुग में हुआ चक्रवर्ती नृप मानधाता बलशाली।
धनराज खजानो अठे छोड़ गया धरती साथ ना चाली।
समंदर माथे पुल बाँध्यो मारयो रावण दुखदाई।
श्रीराम की विजय पताका दुनिया में फहराई
सारा जग ने जीतणवाला वीर मौत सूं हाररया।
राजपाट धन धरती तजकर खाली हाथ सिधार्‌या।

अब भोज की अन्तिम व्यंग्यात्मक उक्ति देखें -

पण चाचाजी आपरे साथे आ धरती जावे ली।
अभय आपरा यश ने सारी दुनिया ही गावे ली ॥

दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अभय भजनावली का प्रकाशन हुआ। इसमें कव्वाली, लावणी, भजन आदि काव्य रूपों के अतिरिक्त सवैया जैसे शास्त्रीय छन्दों का भी प्रयोग किया गया। आर्यसमाज के महत्त्व का निरूपण उन्होंने निम्न सवैया में किया है -

उस तनकी कौन बड़ाई करे जिस तन से किया शुभ काज नहीं।
वह नारी है निंदा के योग्य सदा, जिस नारी के नैनों में लाज नहीं।
समझो उस देश को नरक अभय जिस देश में राज सुराज नहीं।
उस नगरी की शोभा फीकी है जिस नगरी में आर्यसमाज नहीं।

अभय जी के खड़ी बोली काव्य में ईश्वरभक्ति, देश के अतीत गौरव का

गान, भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठाता महापुरुषों की कीर्ति गाथा, समाज सुधार तथा स्वदेशोत्थान आदि अनेक विषय आए हैं। उनके भक्ति काव्य में भक्त की दैन्य भावना तथा प्रभु के करुणामय स्वरूप की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। इसका उदाहरण है अभय जी का निम्न पद -

नाथ अब तो न देर लगाओ।
दीनबंधु करुणा के सागर दया दृष्टि दिखलाओ।
बढ़ते जाते हैं अन्यायी धर्म न जाता कहीं दिखाई।
दुख की घोर घटाएँ छाईं शान्ति सुधा बरसाओ॥

नागौर नगर दर्शन अभय जी की एक वर्णन प्रधान रचना है। इसमें इतिहास प्रसिद्ध नागौर नगर का हृदयग्राही चित्रण हुआ है। कवि स्वयं इस नगर का निवासी है, इसलिए उसका नागौर के प्रति विशेष स्नेह है। इस लघु काव्य में अभय जी ने नगर की प्राचीन और वर्तमान स्थिति, वहाँ के दर्शनीय स्थानों का चित्ताकर्षक वर्णन किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है -

खरो नगीनो ज्यू नागीणो चमक रयो जग माँई।
नागीणो नित को भलो कह कविजन महिमा गाई॥

तथा -

नागीणा की धरती नामी न रत्नां री खान।
जनम्यां है कई सन्त सूरमा देश भक्त विद्वान्॥
वीर शिरोमणि रणबंका राठौड़ अमर सरदार।
मुगलां को दरबार धुजायो चमकी अमर कटार॥

वस्तुतः अभय जी के काव्य में राजधानी की रत्नगर्भा धरती की सौंधी सुवास दिखाई पड़ती है। उनकी कविता में जो स्थानीय रंग उभरे हें उन्हीं के कारण यह काव्य लोकप्रियता की कसौटी पर खरा उतरा है। होली कें अवसर पर गाए जानेवाले मारवाड़ के प्रसिद्ध लोकगीत 'घूंसो बजे रे' की तर्ज पर अभय जी के गीत की पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं।

ब्रजमाधुरी को वाणी देनेवाले कवि :

गायक जोरवरसिंह सिंहकवि

ब्रजप्रदेश की ललित कलित ब्रजभाषा जिनकी मातृभाषा थी, जिन्होंने गायन तथा काव्य रचना में समान रूप से व्युत्पन्नता प्राप्त की थी, वे कुं. जोरावरसिंह सिंहकवि के नाम से लब्ध ख्याति थे। उनका जन्म मथुरा जिले के बरसाना ग्राम में हुआ जो पौराणिक मान्यता के अनुसार कृष्ण की प्रेयसी राधा का जन्मस्थान माना जाता है। कुछ काल तक अध्यापक रहने के पश्चात् वे उत्तरप्रदेंश के सहकारी विभाग में कार्यरत रहे। किन्तु आर्यसमाज की लगन के कारण सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर धर्मप्रचार के क्षेत्र में आ गये। भारत के अतिरिक्त आपने बर्मा, केन्या, युगाण्डा, तंजानिया तथा दक्षिण अफ्रीका में प्रचार किया। थाईलैण्ड आर्यसमाज द्वारा आमंत्रित होकर आपने वहां भी प्रचारार्थ समय दिया। आपकी पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी आर्य कन्या महाविद्यालय वडोदरा की स्नातिका थी तथा प्रचार में अपने पति के साथ निरन्तर सहयोग देती थीं। उनमें गायन तथा प्रवचन की अपूर्व क्षमता की।

सिंहकवि की कविता में शान्त, वीर, भक्ति आदि विभिन्न रसों का समावेश दिखाई देता है। यहां उनकी कतिपय काव्यकृतियों का सोदाहरण परिचय दिया जा रहा है। सिंह कवि के एक काव्य-संग्रह रणभेरी (प्रथम भाग) का प्रकाशन २०१२ वि. में हुआ। कवि द्वारा लिखित भूमिका के अनुसार इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ वीररस की हैं। युद्ध प्रयाण गीत भी काव्य की एक पृथक् विद्या है। जयशंकर प्रसाद का निम्न प्रयाण गीत कितना उत्साहजनक, बोधप्रद तथा देश के अतीत गौरव का आख्यान करनेवाला है, इसे सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो।
प्रशस्त पुण्य पन्थ हे, बढ़े चलो बढ़े चलो ॥ (चन्द्रगुप्त)

रणभेरी में भी कवि ने कुछ इसी प्रकार के प्रयाणगीत लिखे हैं। ये गीत युवा पीढ़ी के लिए तो प्रेरणादायी हैं ही, देश तथा समाज़ के लिए त्याग और बलिदान

की भावना भी इनमें सर्वत्र भरी है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

जो न किसी से रुकनेवाली।
जिसने खुद निज राह निकाली।
बन सरिता की गति मतवाली।
अपना मार्ग बनात चल तू।
आगे पैर बढ़ाता चल तू॥

इस श्रेणी के अन्य गीत हैं -

बिना किए विश्राम निरन्तर चले चलो।
देश के बहादुरों बढ़े चलो बढ़े चलो। आदि॥

सिंहकवित की धारणा है कि ''किसी भी प्रजा में प्रचलित गीतों से आप उस प्रजा के झुकाव का सहज ही में पता लगा सकते हैं। अपने कर्तव्यों को भूलकर विलासिता में डूबी हुई प्रजायें प्रेमी व प्रेमिका के विरह मिलन से ही राग मिलाया करती हैं तथा वीर जागरूक व उत्थानोन्मुखी प्रजाओं के लोग उच्च आदर्शों युक्त जोशीले गीत गाते हुए देखे जाते हैं। परन्तु प्रजाको किसी भी प्रवाह में प्रवाहित कर देनेवाले होते हैं उस देश को कवि। कवि को दूसरा विधाता माना गया है जो अपनी कविताओं द्वारा उस देश की प्रजा की विचारधारा की रचना करता है।'' इसी धारणा को रखनेवाले सिंहकवि ने 'कवि से' शीर्षक गीत में कवि को सम्बोधन कर उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराया है। उसकी मान्यता है कि कवि को प्रणय के स्थान पर क्रान्ति का गीत गाना चाहिए। महाकवि रामधारीसिंह दिनकर ने भी अपनी 'कस्मैदेवाय' शीर्षक कविता में कवि को क्रान्ति का आवाहन करने के लिए कहा था और पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तो स्पष्ट कहते हैं -

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल पुथल मच जाये।
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए॥

सिंहकवि की 'कवि से' शीर्षक कविता भी कुछ ऐसा ही उद्बोधन देती है -

कवि ऐसा गीत सुना दे।
जो सबको वीर बना दे।
होके सावधान आज, गाओ दीप राग कवि,

बुझा हुआ दीप फिर, देश का जलाया जाय।
सूखे जीवनों में करे-जीवन संचार नया,
मेघ राग गाके ऐसा मेघ बरसाया जाय ॥

इनकी एक अन्य काव्यकृति 'देश भक्त प्रताप' २०१८ वि. में प्रकाशित हुई। द्विवेदीकाल के कवियों ने भारतीय इतिहास के मध्यकाल के शूरवीर देशभक्तों गौरव एवं त्यागपूर्ण गाथाओं का प्रायः गुणानुवाद किया था। पं. श्यामनारायण पाण्डेय का 'हल्दीघाटी' महाकाव्य इसी कोटि की कृति है। सिंहकविं ने आलोच्य काव्य में मेवाड़ की स्वाधीनता के मंत्र द्रष्टा महाराणा की यशोगाथा को पद्यबद्ध किया है। महाराणा के जीवन के कुछ पहलुओं को उजागर करनेवाले प्रसंगों का निबंधन इस काव्य की विशेषता है। हल्दी घाटी की इतिहास प्रसिद्ध रणभूमि का भावस्फूर्त वर्णन इस काव्य का एक मार्मिक स्थल है।

है यह वही हल्दी घाटी।
जहाँ महाराणा प्रताप ने स्वतंत्रता का यज्ञ रचा।
जहाँ विदेशी अत्याचारी मुगलों से संग्राम मचा।
मुट्ठि भर मेवाड़ी सेना जहाँ जान पर खेल अड़ी।
मुगलों और रजपूतों के टिड्डीदल के साथ-साथ लड़ी।
है यही वही हल्दीघाटी।
और भी,
है पीला कर चुकी शत्रु को कभी जहाँ की पीली माटी।
और बनाये रखी तप बलिदान वीरता की परिपाटी।
गाजर मूली सी अरि सेना जहाँ राजपूतों ने काटी।
मिट्टी से जो नहीं, गई है लाशों और रक्त से पाटी।
है यह वही हल्दीघाटी।

कुं. जोरावरसिंह को विशेष ख्याति उनकी रचना 'पाकिस्तान-पच्चीसी' के कारण मिली। हिन्दी में पद्यों की संख्या का संकेत देनेवाले शतक, बावनी हजारा, सतसई आदि काव्य विधाओं का पर्याप्त प्रचलन रहा है। पाकिस्तान पच्चीसी में कवि ने २५ पद्य लिखे हैं। पाकिस्तान निर्माण के पूर्व भारत के राजनैतिक क्षितिज पर जो हलचल मची उसका उल्लेख इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हो चुका है। सभी देश भक्त व्यक्तियों और राजनैतिक दलों ने देश विभाजन का विरोध किया था,

किन्तु देश को बाँटकर लँगड़ा स्वराज्य भारतीयों के हवाले कर देने की अंग्रेजी कूटनीति तथा मुस्लिम साम्प्रदायिकता से उत्पन्न हिंसा और द्वेष को सीमातीत अवस्था तक ले जानेवाली मुस्लिम लीग की षड्यन्त्रपूर्ण चालों के परिणामस्वरूप देश के टुकड़े होकर ही रहे। आलोच्यकृति का निर्माण कवि ने देश विभाजन के दिनों में ही किया था। इस लम्बी कविता को कवि ने देश के विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक मंचों से गाया और उसकी श्रोतृ मण्डली में जहाँ जन साधारण रहते थे वहाँ अपने समाज के प्रबुद्ध नेता तथा हिन्दुओं के राजनैतिक हितों के संरक्षक हिन्दू महासभाई नेता भी होते थे। वीर सावरकर, डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी, डा. बी.एस. मुंजे, एल.बी. खोपटकर, बाबा साहब खापडे आदि हिन्दू महासभाई नेताओं तथा महाशय कृष्ण, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, कुं. चादकरण शारदा, महात्मा खुशहालचन्द्र (आनन्द स्वामी) आदि आर्यसमाजी नेताओं ने इस ओजस्वी काव्य को स्वयं कवि से सुनकर उसकी भूयसी प्रशंसा की थी। पाकिस्तान पच्चीसी की लोकप्रियता का इससे बढ़कर प्रमाण और क्या हो सकता है कि हिन्दी में लिखी इस कविता के उर्दू, मराठी, गुजराती तथा असमिया लिपियों में विभिन्न संस्करण निकले और स्वल्पकाल में ही इनकी ५० हजार प्रतियाँ छप गईं। जैसे लोकप्रिय फिल्मी गीत शीघ्र ही जनता का कण्ठहार बन जाता है उसी प्रकार पाकिस्तान पच्चीसी के पद्यों को भी अनायस ही लोकप्रियता मिल गई।

आलोच्य कविता की गेयता ही उसका प्रमुख गुण है। इसके प्रत्येक पद्य में कवि द्वारा भारत के विगत गौरवपूर्ण अतीत की किसी न किसी भव्य झाँकी को प्रस्तुत किया गया है। पच्चीसी का आरम्भ इस पद्य से होता है -

आर्यावर्त स्वदेश हमारा मानव आदिम संस्थान।
हम हैं उसके मूल निवासी आर्य पूर्वजों की सन्तान।
आदि सृष्टि में दिया हमें ही प्रभु ने पावन वैदिक ज्ञान।
और हमारी छाया में ही पाया जगने जीवन दल।
किसी तरह भी हम अपना खो सकते वो सम्मान नहीं।
अखण्ड हिन्दुस्तान कभी बन सकता पाकिस्तान नहीं॥

अवशिष्ट पद्यों में कृष्ण, महावीर, बुद्ध, चन्द्रगुप्त, अशोक, प्रताप, शिवाजी, बंदा वैरागी, लक्ष्मीबाई, हकीकत राय, दयानन्द, श्रद्धानन्द आदि लोकपूज्य महापुरुषों के महत्त्वपूर्ण कार्यों तथा देशहित के लिए किए गए उनके बलिदानों का वर्णन किया

गया है। कवि तो जनजागरण का वैतालिक होता है। देशहित के लिए नागरिकें को कर्तव्य प्रेरित करना तथा आनेवाले संघर्ष के लिए उन्हें सन्नद्ध करने की प्रेरणा देना ही उनका प्रमुख लक्ष्य रहता है। अन्ततः पाकिस्तान तो बन गया किन्तु कवि के आशावाद में कोई कमी नहीं आई। उन्होंने अब अखण्ड भारत पच्चीसी की रचना की तथा पाठकों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भारत पुनः अखण्ड होगा तथा अपने विगत गौरव को प्राप्त करेगा।

कैसे गायें गुणगान

ऋषिवर दयानन्द हम तेरा कैसे गायें गुणगान ?
भारत गाफिल ही सोता था, खाता आलस में गोता था,
निशिदिन नष्ट होता था, अपना बल-वैभव खोता था।
तूने ही डाली जान, कैसे गाये गुणगान॥ ऋषिवर॥१॥
अनाथ विधवा दुःख पाते थे, हम ही उनको ठुकराते थे।
उन्हें विधर्मी अपनाते थे, हिन्दू यों घटते जाते थे।
तुझको ही आया ध्यान, कैसे गायें गुणगान॥ ऋषिवर॥२॥
भारत बाग पड़ा था खाली, तू ही बनकर आया माली,
की सब पेड़ों की रखवाली, लाया उपवन में हरियाली।
करके निज बलिदान, कैसे गायें गुणगान॥ ऋषिवर.॥३॥
चौहद नला तमंचा छोड़ा, मुख सब विरोधियों को मोड़ा।
गढ़ पाखण्ड-दम्भ का तोड़ा, सिर अज्ञान असुर का फोड़ा॥
स्वयं किया विष पान, कैसे गायें गुणगान॥ ऋषिवर.॥४॥
जो ऋषि भारत में नहीं, तो भारत जग से मिट जाता।
हिन्दू यहाँ एक नहीं पाता, मैं ही कहाँ भजन ये गाता ?
खोता कहीं ईमान, कैसे गायें गुणगान॥ ऋषिवर.॥५॥
आओ ऋषि के गुण सब गाओ, ओम् ध्वजा के नीचे आओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ मानव जीवन का फल पाओ,
पाय 'सिंह कवि' ज्ञान, कैसे गायें गुणगान॥ ऋषिवर.॥६॥

गायक-प्रचारक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

(पूर्वनाम त्रिलोकचंद राघव)

श्रीराघव ने युवावस्था में ही भजनोपदेश के कार्य को अंगीकार कर लिया था। उनके गायन में माधुर्य था, स्वर में ओजस्विता थी वहां रोचक दृष्टान्तों के द्वारा उसे ग्राह्य बनाने की क्षमता भी थी। वे स्वयं काव्य रचना करते थे। धार्मिक विषयों के अतिरिक्त उन्होंने सामयिक राजनीति तथा सार्वजनिक प्रश्नों पर काव्य के माध्यम से चुटीली टिप्पणियां की हैं। एक अन्य विशेषता जो उनकी काव्य रचना में देखी गई, वह थी आयुर्वेद की शिक्षाओं को कविता के माध्यम से प्रस्तुत करना, जीवन के संध्या काल में वे आर्यसमाज हनुमान रोड़ में रहे तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग अधिष्ठाता का दायित्व निभाया।

पूर्वाश्रम में त्रिलोकचन्द राघव के नाम से प्रसिद्ध स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती का जन्म आषाढी पूर्णिमा १९७७ वि. को मथुरा जिले के ग्राम गिडोह में हुआ। वे कई वर्षों तक महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास टंकारा के तत्त्वावधान में धर्म प्रचार करते रहे। २६ दिसम्बर १९७६ को उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली। स्वामी स्वरूपानन्द को काव्य रचना का गुण नैसर्गिक रूप में प्राप्त हुआ है। अब तक उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

आर्यसमाज के उपदेशक होने के नाते स्वामीजी की कविता में धर्म, अध्यात्म, भगवद्भक्ति, समाज सुधार, देश-प्रेम और राष्ट्रीयता, महापुरुषों का कीर्तिगान जैसे अनेक विषय समाविष्ट हुए हैं। स्वामी जी की मातृभाषा ब्रज है अत: उन्होंने ब्रज में कुछ अत्यन्त सुन्दर भक्ति पदों की रचना भी की है। मन को उद्‌बोधन देनेवाला उनका निम्न पद हिन्दी के किसी भी भक्त-कवि के काव्य की तुलना में रखा जा सकता है -

रे मन अजहुँ समझन पायो।
विषय वासना के मन माँही ऐसो मन भटकायो।

मति मलीन भई लक्ष्य बिसार्‌यो सतमग पग न बढ़ायो।
तृष्णा के गहरे सागर में गोता खूब लगायो।

विषय कीच के कुंजर के सम अपने आप फँसायो।
केश भये सब श्वेत मृत्यु को जनु संदेश सुनायो।
देह भई सब खेह गेह को नेह न रंच हटायो।
अजहुँ चेत 'राघव' क्यों नाहक मानुष जन्म गँवायो।
सब तज भज अज अमर ईश को जिसने जगत रचायो॥

ऋषि दयानन्द की प्रशंसा में स्वामी स्वरूपानन्द ने अनेक सुन्दर कवित्त लिखे हैं। खड़ी बोली में इस प्रकार के सफल कवित्तों की रचना करना उनके काव्य कौशल का स्पष्ट उदाहरण है। इस तथ्य की पुष्टि निम्न पद्य से होती है -

शंकर ने बताया नारी नरक का दरवाजा, जिसे
विद्या पढ़ने पढ़ाने का कोई अधिकार ना।

तुलसीदास गोस्वामी ने नारी का अपमान किया,
कहा इसे कूट कूट डंडे दे दे मारना।

कहते थे कबीरदास नारी विष की बेल है,
सूरदास कहते इसका चित्र ना निहारना।

बिना दयानन्द मातृशक्ति को उठाता कौन,
करते गर जगत् में आप वेदों का प्रचार ना॥

स्वामी स्वरूपानन्द की कविता भाव पक्ष की दृष्टि से तो समृद्ध है ही, उसमें वर्ण्य विषयों तथा शैलियों की भी विविधता है। उन्होंने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अनेक गौरवमय आख्यानों को काव्यबुद्ध किया है। 'ठुकराया वीर' एक ऐसी ही मार्मिक ऐतिहासिक कथा है जिसमें बूंदी के राजकुमार श्यामसिंह की वीरतापूर्ण जीवनगाथा को पद्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'आदर्श बालक भोज' भी इसी कोटि की रचना है।

स्वामी स्वरूपानन्द की कविता का एक नया आयाम उनकी 'हँसता चल हँसाता चल' शीर्षक कृति में उभरा है। आजकल के कवि सम्मेलनों में जब कोई कविता पाठ करने के लिए मंच पर आता है तो अपनी रचना को प्रस्तुत करने के पहले वह श्रोताओं का मनोरंजन करने के लिए एक-दो हास्य रस के चुटकुले,

व्यंग्यात्मक मुक्तक अथवा रुबाई अवश्य पेश करता है। स्वामी जी ने इस प्रकार के चुटकुलों को सुन्दर पद्यों में रूपान्तरित किया है। उनका यह प्रयास मात्र पाठकों अथवा श्रोताओं के मनोरंजन अथवा हँसी-दिल्लगी के लिए ही नहीं है। उनकी ऐसी कविताओं में हमारी सामाजिक विसंगतियों तथा आचरणगत विडम्बनाओं पर तीव्र प्रहार किए गए हैं। इस दृष्टि से इन कविताओं में आर्यसमाज का सुधारवादी स्वर ही मुखर हुआ। 'कैसे नाम कैसे काम' शीर्षक मुक्तक में आचरण के प्रतिकूल व्यक्ति के नामों की विषमता को दर्शाया गया है -

नाम रखा सरदार सिंह मिल में चौकीदार।
भगतराम घूमा करे नित श्रृंगार बजार।
नित श्रृंगार बजार सुशीला देती गाली।
नाम है कूड़ेराम रहे बागों में माली।
कंगाली से दुखी बड़ी तंगी में माया।
होय तकाजा रोज सूद तक रहे बकाया॥

स्वामी स्वरूपानन्द को कुण्डलिया छन्द लिखने में विशेष नैपुण्य प्राप्त है। शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर (अथर्ववेद ३/२४/१५) इस अथर्ववेदीय सूक्ति को स्वामी जी ने निम्न प्रकार कुण्डलिया का रूप दिया है -

सौ हाथों से कमाओ करे वेद उपदेश।
सहस्त्र करों से दान भी करते रहो हमेश।
करते रहो हमेशा दानदाता कहलाओ।
दीन गरीब अनाथों के दुख दर्द मिटाओ।
जग में कोई न काम कठिन हो ऐसा वैसा।
मिले सफलता निश्चय पास में यदि हो पैसा।

उनके प्रकाशित काव्य ग्रन्थों में राघव गीत उद्यान, संगीत महोदधि, राघव पुष्पांजली, हँसता चल हँसाता चल, राघव गीतांजलि आदि प्रधान हैं। जैसे संस्कृत आयुर्वेद, ज्योतिष जैसे विज्ञानपरक विषयों के विषयों के ग्रन्थ भी श्लोकबद्ध हैं, उसी प्रकार स्वामी स्वरूपानन्द ने चिकित्सा विषयक अपना ग्रन्थ सरल चिकित्सा भी पद्य शैली में लिखा है।

दिवंगत आर्य भजनोपदेशक व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संकलन कर्ता - डा. सोमदेव शास्त्री

कतिपय दिवंगत आर्य भजनोपदेशकों का संक्षिप्त परिचय मैंने श्री हरिराम आर्य द्वारा लिखित "जागो और जगाते रहो" पुस्तक से तथा अन्य स्थानों से लिया है और परिचय के साथ में उनके प्रसिद्ध गीत या गीत का कुछ अंश भी दिया है। जिन भजनोपदेशकों की विस्तृत जानकारी नहीं मिली है उनके नाम-निवास स्थान आदि का उल्लेख किया गया है।

- साभार

१. स्वामी शंकरानन्दजी
२. स्वामी केवलानन्दजी
३. स्वामी विद्यानन्दजी
४. स्वामी नित्यानन्दजी
५. चौ. शीशरामजी आर्य
६. श्री महा.ईश्वर सिंहजी
७. श्री महा. बुद्धिधरजी
८. श्री महा. जौहरी सिंहजी
९. श्री महा. रामजी लालजी
१०. पं. तेजसिंहजी
११. श्री विजयसिंहजी विजय
१२. पं. शिवलालजी
१३. पं. बालमुकुन्दजी
१४. पं. बहोतरामजी
१५. पं. देशराजजी
१६. पं. नन्दलालजी
१७. पं. आशानन्दजी
१८. श्री पृथ्वीसिंहजी बेधड़क
१९. श्री कु. वीरेन्द्रजी वीर

स्वामी शंकरानन्दजी

स्वामी शंकरानन्दजी आर्य भजनापदेशक महर्षि दयानन्द के समय हुए है। ऋषि दयानन्द के व्याख्यान से पहले ये भजन गाते थे। इनका प्रसिद्ध भजन अधोलिखित है -

भजन

विधाता तू हमारा है तू ही विज्ञानदाता है।
विना तेरी दया कोई नहीं आनन्द पाता है॥

तितिक्षा की कसौटी से जिसे तू जांच लेता है।
उसी विद्याधिकारी को अविद्या से छुड़ाता है॥

सताता जो न औरों को न धोखा आप खाता है।
वही सद्भक्त है तेरा, सदाचारी कहाता है॥

सदा जो न्याय का प्यारी प्रजा को दान देता है।
महाराजा उसी को तू बड़ा राजा बनाता है॥

तजे जो धर्म को, धारा कुकर्मों की बहाता है।
न ऐसे नीच पापी को कभी ऊंचा चढ़ाता है॥

स्वयम्भू **'शंकरानन्दी'** तुझे जो जान लेता है।
वही कैवल्य सत्ता की महत्ता में समाता है॥

....

स्वामी केवलानन्दजी

स्वामी केवलानन्दजी का जन्म सन् १८७१ में ग्राम-करोली जिला-रेवाड़ी (हरियाणा) में हुआ। आपका पूर्वनाम केवलराम था। बाल्यकाल में गो सेवा और कृषिकार्य करते रहे। स्वामी श्रद्धानन्दजी के सम्पर्क में आने पर आप वैदिक धर्म के अनुयायी बने तथा सन् १९२५ में आपने संन्यास लिया और स्वामी केवलानन्दजी बन गये। आप इकतारा और खड़ताल लेकर भजन गाते और प्रचार करते। आप भजनों के माध्यम से मूर्तिपूजा, अनमेल विवाह, अन्धविश्वास, विधवा विवाह, दहेज विरोध, शुद्धि कार्य गोहत्या निषेध आदि विषयों पर प्रभावशाली ढंग से प्रचार करते थे। आपके रचित भजनों का प्रकाशन भी हुआ है। सन् १९४३ को आपका देहावसान हुआ। आपका रचित गीत अधोलिखित है -

"फूट का फल"

छूआछूत के भूत से हुई भारत में फूट।
इसी पापनी फूट ने लिया धर्म धन लूट॥
देश भारतवर्ष का बस फूट का खाना हो गया।
फूट से ही देश में यवनों का आना हो गया।
तोड़कर मन्दिर पुराने मस्जिदें बनवा लईं।
कहां हम तो बुत शिकन है ये बहाना हो गया॥
काशी विश्वनाथ शंकर डर के छूआछूत से।
छुपा हुआ कूप में कितना जमाना हो गया॥
जन्मभूमि रामचन्द्र की अयोध्या धाम थी।
मन्दिर गिरा मस्जिद बनी ये दिल दुखाना हो गया॥
मथुरा में केशव देव जी का पूज्य मन्दिर था बड़ा।
फोड़कर मस्जिद बनी नमाज खाना हो गया॥
अजमेर में एक जैन मन्दिर ढाई दिन का झोंपड़ा।
इस नाम से मशहूर था सो भी बिगाना हो गया॥
निलगिरी तप धाम था वहां बन गए हैं मकबरें।
इस निशाचारी फूट का भारत निशाना हो गया।
लेख अरबी में लिखे, उनकी दीवारों पर देख लो।
तोड़ा मन्दिर जिसने, उसका याद गाना हो गया॥
"**केवल**" कलम को कर रवाँ अब देश जागृत हो रहा।
भीरुता जाती रही बेडर जमाना हो गया॥ इस भारत....

....

स्वामी विद्यानन्दजी

आर्य भजनोपदेशक स्वामी विद्यानन्दजी का ग्राम झांसवाकला जिला-झज्जर (हरियाणा) में चैत्र शुक्ल द्वितीया विं. सं. १९६५ तदनुसार सन् १९०७ में हुआ। आपके पूज्य पिताजी का नाम तुलसीदास तथा माता का नाम सारलीदेवी था। आपकी शिक्षा ग्राम-झांसवा कला पिलानी जिला झुंझनु (राज.) तथा योगाश्रम हरिद्वार में हुई तत्पश्चात् आपने गुरुदत्त भवन लाहौर में पूज्य स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी के सानिध्य में आर्य सिद्धान्तों का शिक्षण प्राप्त किया तथा वहां से उपदेशक बनकर

वैदिक धर्म के प्रचार एवं राष्ट्रसेवा में संलग्न हो गये। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में आपने भाग लिया। आर्य जगत् प्रसिद्ध भजनोपदेशक स्वामी भीष्मजी से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आप सुमधुर स्वर में गीत गाते थे। आपके गीतों को सुनकर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। आपके द्वारा गाये जानेवाले लोकप्रिय गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है -

भक्तिगीत

दो दिन की जिन्दगानी रे प्राणी !
तू कर ले ना कोई शुभकाम ...
ईश्वर का स्मरण करले जिसने देह बनाई।
हाथ पैर और नस नाड़ी की सुन्दर कली जड़ाई।
लाई ऊपर चाम चाम। तू कर ले ना कोई शुभकाम ...
प्राणीमात्र की रक्षा कर ले, सभी बुराई छोड़।
काम क्रोध मद लोभ मोह से अपना मुखड़ा मौड़।
ईश्वर से नाता जोड़, सुबह शाम शाम ॥
तू कर ले ना कोई शुभकाम ...
मात पिता बन्धु सुत भगिनी और तेरी प्यारी दारा।
तू कर ले ना कोई शुभकाम ...
गाय भैंस और हाथी फोड़े एक दिन करें किनारा।
सब कुछ यहीं पर धरा रहेगा धन धाम धाम ॥
तू कर ले ना कोई शुभकाम ...
कर ले भलाई करे बड़ाई यह सारा संसार।
विद्यानन्द सत्य विद्या करता रहे प्रचार ॥
जा जा करके हर ग्राम ग्राम ॥ तू कर ले ना कोई शुभकाम ...

....

स्वामी नित्यानन्दजी

स्वामी नित्यानन्दजी का जन्म ग्राम किलोई जिला झज्जर (हरि.) सन् १८८७ में एक कृषक परिवार में हुआ। आपका पूर्वनाम न्योनन्दसिंह था। आप कृषि कार्य करते थे। आर्य भजनोपदेशक महाशय ईश्वरसिंह जी गलहोत के भजनोपदेशक को सुनकर आप इतने प्रभावित हुए कि कृषि कार्य छोड़कर आपने हारमोनियम बजाना

और भजन गाना सीखा। भजनो को गा गाकर आप हरयाणे के ग्रामीण क्षेत्र प्रचार कार्य करते रहे। आप एक निष्ठावान् ऋषिभक्त, अत्यधिक उत्साही एवं परिश्रमी आर्य भजनोपदेशक थे। हैदराबाद सत्याग्रह में आपने भाग लिया। आप पाखण्ड-अन्धविश्वास का निर्भीकतापूर्वक खण्डन करते थे। हरियाणे के प्रसिद्ध सन्त भगत फूलसिंह के साथ आपने कार्य किया। आपने अनेक आर्य समाजों की स्थापना में सहयोग किया। आपके १०९ भजनों का संग्रह दयानन्द मठ रोहतक (हरियाणा) से प्रकाशित हुआ। आपका २४-४-१९७७ को ९० वर्ष की आयु में देहावसान हुआ। आपका गीत अधोलिखित है -

"सच्चाधर्म"

सच्चा धर्म का रास्ता बताया है बहिन आर्यो ने।
करो मां बाप की पूजा, सिखाया है बहिन आर्यों ने॥
पूजना पत्थर ईटों का छुट पाया है बहिन आर्यों ने।
दिया करो दान नणदों को बताया है बहिन आर्यों ने।
घरो गऊ माता को दाना सुझाया है बहिन आर्यों ने॥
जो मस्टण्डों की पूजा जंचाया है बहिन आर्यों ने।
करो पति अपने की सेवा समझाया है बहिन आर्यों ने॥
भूखी मरती व्रत करती हटाया है बहिन आर्यों ने।
पूजना भइयां सैय्यद का मिटाया है बहिन आर्यो ने॥
खोलकर गुरुकुल कन्याओं को पढ़ाया है बहिन आर्यों ने।
हवन सन्ध्या **'नित्यानन्द'** से कराया है बहिन आर्यों ने॥

चौ. शीशराम आर्य

आपका जन्म सन् १८७८ में ग्राम-खाण्डा खेड़ी, जिला हिसार (हरियाणा) चौ. शादीराम के घर हुआ था। अपने दादा चौ. राजमल की प्रेरणा से चौ. शीशराम आर्य वैदिक पथ के पथिक बने। अपने पिता की इकलौती सन्तान शीशराम मधुर कण्ठ के धनी थे। शीशराम जी प्रारम्भ से ही रामायण और गीता सेजुड़ी गाथाओं का गायन करते थे। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा गांव से ही हासिल की। बाद में रोहतक के स्कूल में दाखिल कराया गया। उस समय बच्चों को बड़ी आयु में ही स्कूल भेजने का प्रचलन था, इसलिए शीशराम जी को भी बड़ी आयु में विद्यालय

भेजा गया।

आप कुशाग्र बुद्धि के धनी थे, इस कारण शीघ्र ही आपने मिडिल की परीक्षा पास कर ली। एक बार विद्यालय के मौलवी शिक्षक ने भगवान राम और सीता को लेकर कोई प्रतिकूल टिप्पणी कर दी, बालक शीशराम को यह नागवार गुजरी। उन्होंने विरोध किया तो मौलवी ने शीशराम के साथ बदसलूकी की। इससे शीशराम जी भी जोश में आ गए और मौलवी से उलझ पड़े। शीशराम ने ऐसे अध्यापक से पढ़ना अनुचित समझा, जो हमारे महापुरुषों और इतिहास पुरुषों के बारे में प्रतिकूल टिप्पणियां करता हो, इसलिए आपने स्कूल छोड़ दिया।

परिश्रम और कुशाग्र बुद्धि के कारण आपने हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी अंग्रेजी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करने लगे। इसी बीच आपका परिवार हिसार आर्य समाज के संस्थापक लाला लाजपतराय (आर्य समाज नागारी गेट, हिसार की स्थापना सन् १८८६ हुई) महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द आदि आर्य विद्वानों के सम्पर्क में आया, और चौ. शीशराम जी वैदिक विचारधारा और सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में जुट गए। इसके लिए आप भजन गाने लगे और उपदेश करने लगे। दिन में आप और आपके साथी खेती-बाड़ी करते और शाम को आसपास के गांवों में जाकर आय समाज का प्रचार करते थे।

आपका परिवार सम्पन्न था। निर्धन परिवारों के बालकों को पढ़ाने के लिए आपने अपने घर में ही विद्यालय खोल दिया था। उस युग में कमजोर वर्ग के लोगों को शिक्षा देना, वेदमंत्रों का उच्चारण सिखाना, गायत्री मंत्र और यज्ञोपवीत का अधिकार देना चौ. शीशराम आर्य का एकसूत्री कार्यक्रम था।

आपका यह पुनीत और क्रान्तिकारी कार्यक्रम पूरे क्षेत्र में वैचारिक क्रान्ति तो ला ही रहा था, आपंने घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करते थे। इनके प्रचार कार्यों की सुगन्ध प्रादेशिक सभा, लाहौर तक पहुंची।

चौ. शीशराम आर्य कई बार डॉ. रामजीलाल, पं. लखपतराय, बाबू चूड़ामणि आदि के साथ भी वेद प्रचारार्थ जाते थे। उन दिनों अनेक बार आर्यसमाज हिसार के प्रधान सेठ चन्दूलाल तायल की ऊंटगाड़ी का भी प्रचारार्थ प्रयोग किया जाता था। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, लाहौर ने चौ. शीशराम आर्य की ख्याति सुनकर इन्हें ४० रुपये मासिक वेतन पर भजनोपदेशक नियुक्त कर दिया। तब चौ.

शीशराम जी के पिता श्री शादीराम जी आर्य ने वेतन लेकर प्रचार करने से मना किया और कहा कि **बिना पैसा लिए ही अधिक से अधिक प्रचार करो**। जहाँ-जहाँ आर्य समाज का प्रचार करने हेतु जाने का आदेश आता, वहाँ-वहाँ चौ. शीशराम जी अपने खर्चे पर जाते थे। एक किसान की इससे बड़ी महानता और क्या हो सकती है। चौ. शीशराम जी लम्बे समय तक घूम-घूमकर आर्य समाज के शुद्ध विचारों का प्रचार करते रहे। आप आजीवन **पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के निःशुल्क प्रचारक रहे**।

श्री शीशराम जी आर्य ने हैदराबाद में सत्याग्रह में शामिल होने के लिए खाण्डाखेड़ी और आसपास के गांवों से एक सौ लोगों का जत्था भेजा था। श्री शीशराम जी वेदों के पक्के अनुयायी थे। भगवान श्री राम और श्रीकृष्ण आपके आदर्श थे। आपने आजीवन अपने हाथों से यज्ञोपवीत बनाए और इन्हें निःशुल्क बांटा। अपने एक सौ वर्षों के जीवन में आप अनेकानेक विद्वानों मनीषियों के सम्पर्क में आए और उनसे जहाँ जीवन की पद्धति सीखी वहीं शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान भी अर्जित किया। सन् १९४० में काला मोतिया के असर से आपके नेत्रों की ज्योति चली गई। फिर भी आपने हार नही मानीं और शेष जीवन में अपनी शक्ति, सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार निरन्तर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। ७ फरवरी १९७८ को आप अपने सांसारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए उस अनंत प्रभु के चरणों में सदा के लिए लीन हो गए।

चौधरी शीशराम जी 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'संस्कार विधि' की गहन व्याख्या में माहिर थे। आप मानते थे कि महर्षि दयानन्द का 'सत्यार्थ प्रकाश' सैद्धान्तिक ग्रन्थ है जबकि 'संस्कारविधि' व्यावहारिक है। चौ. शीशराम जी आर्य ने महर्षि दयानन्द की कल्पना के अनुरूप अपने परिवार का निर्माण करके अपने पुत्र मित्रसेन आर्य और पौत्रों को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त और संस्कारों की शिक्षा देकर वैदिक पथ का आदर्श पथिक बनवाया। शीशरामजी अपने परिवार के सभी सदस्यों को प्रतिदिन महर्षि के सिद्धान्तों की की शिक्षा देते और भजन सुनाते, आर्य समाज के कार्यों और उसकी जरूरतों से परिचित कराते। श्री शीशराम जी जितने जागरूक थे और उतनी ही उनकी सोच सही और सार्थक थी, इसका पता **चौ. मित्रसेन** जी के व्यक्तित्व और कृतित्वों को देखकर चलता है। जो आज वैदिक धर्म के प्रचार में तन-मन-धन से प्रयत्नशील है।

महाशय ईश्वरसिंह

आर्य भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंहजी आर्य का जन्म सन् १९१० में दिल्ली प्रदेश के ग्राम काकरोला में हुआ। आप का प्रचार क्षेत्र दिल्ली-हरियाणा तथा राजस्थान रहा है। आपके भजन महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों पर आधारित उपदेशात्मक और सुधारात्मक होते थे। स्वामी नित्यानन्दजी और कु. जौहरीसिंह आपके शिष्य थे। आपका प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है।

गीत

धन धन है भाग हमारे मिली मानस की काया है।
प्रभु की दया अपार है ये भारत देश हमारा है॥
ये देश स्वर्ग किनारा प्रभु ने इसे बसाया है।
धन धन प्रभु की माया जन्म आर्य घर में पाया॥
धन ऋषि दयानन्द आया सोता देश जगाया है॥
धन धन है वो नर नारी जो जनेऊ के अधिकारी।
आ रही धर्म की बारी धर्म चहुं दिशा में छाया है।
धन धन पिता महतारी जिन लड़के से लड़की प्यारी॥
बुला करके लोग सभा भारी वैदिक विवाह रचाया है।
धन धन है वह नगरी जिन्हें पकड़ी धर्म की डगरी।
वहां वहां हो रही उमगरी **ईश्वरसिंह** आया है॥

श्री महाशय बुद्धिधरजी

श्री महाशय बुद्धिधर का जन्म सन् १८९५ में ग्राम लुहाना-जिला रेवाड़ी (हरियाणा) में हुआ। अपने भजनों के माध्यम से आपने मूर्तिपूजा-कब्रपूजा, झुंठे व्रत-मृतक श्राद्धादि का खण्डन किया। आपके गीतों का संग्रह "अमृत गीता" के नाम से प्रकाशित हुआ आपके गीतों में कन्या विक्रय और पाखण्ड का अत्यधिक खण्डन मिलता है, तथा समाज सुधार के लिये प्रेरणा भी मिलती है। आपके प्रचार कार्य के समय आर्य भजनोपदेशकों और पौराणिक भजनोपदेशकों में भजनों के माध्यम से शास्त्रार्थ होते थे। कहीं कहीं तो पं. बुद्धिधर जी का अनेक पौराणिक भजनोपदेशकों से शास्त्रार्थ होता था और उसमे आप सदा विजय प्राप्त करते थे। आपके गीत की कुछ पंक्तिया अधोलिखित है -

"गीत"

विना भजन ब्राह्मण नहीं होता, गति को पाता है।
भगती करता नीच पुत्र हो वो ही स्वर्ग को पाता है॥
विप्र नहीं वेद पढ़े विषयों से चित्त हटाता है।
ऊंच कर्म करे बैठें बड़ों में नहीं कभी घबराता है॥
जन्म से कोई बड़ा न होंता कर्म प्रधान बताता है।
'बुद्धिधर' को वर्मा कहते अब शर्मा कहलाता है॥

....

महाशय जौहरी सिंह

महाशय जौहरीसिंह का जन्म ग्राम जसराणा जिला-सोनीपत (हरि.) के प्रसिद्ध वैद्य श्री जुरालाल के घर हुआ। आपकी शिक्षा ग्राम-जसराणा में हुई। महाशय ईश्वरसिंह के भजन सुनकर आप की इच्छा भजनोपदेशक बनने की हुई। तथा आपने भजनोपदेशक बनकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। सन् १९३९ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में आपने भगत फूलसिंह के नेतृत्व में प्रचार करके सैंकड़ों सत्याग्रही तैयार किए। सन् १९५७ में पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने खूब प्रचार किया और सत्याग्रह में सम्मिलित होकर एक महीना जेल में बिताया। आप एक कुशल वक्ता एवं अच्छे कवि थे। सैंकड़ो गीत व भजन आपने लिखे। आप के भजन "आदर्श-भजन-माला" शीर्षक से प्रकाशित हुए। आर्य समाज की सेवा और भजनोपदेशक के रूप में आपके प्रचार कार्य को देखकर गुरुकुल भैंसवाल ने आपको 'संगीताचार्य' की उपाधि से विभूषित किया। १६ जुलाई सन् १९८१ को आपका देहावसान हो गया। आपके द्वारा गाये जानेवाले प्रसिद्ध भजन की कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है -

भजन

बातें बताउ कुछ तिरे काम की, कुछ तिरे काम की....
अमल करेगा सुख पावेगा। ....
परमेश्वर है जग निर्माता, विश्वास करिये उसका भ्राता,
सन्ध्या किया कर सुबह और शाम की ....
मुक्ति मार्ग पावेगा .... ॥१॥
गायत्री गा शुद्ध हो आत्मा, कृपा करेंगे परम परमात्मा,
प्रेक्टिस कर ले प्राणायाम की ...
हार्ट फेल से बच जावेगा ....॥२॥

यदि आपका काबू में मन, सुन्दर तगड़ा हो तेरा मन,
आदत डालो नित्य व्यायाम की ...
चेहरे ऊपर रंग लावेगा ....॥३॥

पर उपकार कुछ करले सेवा,
सेवा से मिले आनंद मेवा,
सेवक की जिंदगी है आराम की ....
इससे तुझको जन घ्यावेगा .....॥४॥

मन, वचन, कर्म से तिर वैतरणी,
जौहरीसिंह करते शुभ करनी,
कीमत नहीं है कुछ तिरे चाम की ....
एक दिन अग्नि में जल पावेगा .... ॥५॥

महाशय रामजी लालजी

आर्य भजनोपदेशक महाशय रामजीलाल का जन्म सन् १९२० ग्राम बव्वा तहसील-नाहड़ जिला-रेवाड़ी (हरि.) में श्री भगत सालिगराम जी के यहां हुआ। आपके पिता कबीर पन्थी थे, एकतारे पर गाया करते थे। आपके पिता ने अपने गांव में बकरे की बलि की प्रथा को बन्द करा दिया। बव्वागांव स्वामी केवलानन्द जी के ग्राम करोली के निकट है। स्वामी केवलानन्दजी तथा समीपस्थ ग्राम लूखी के निष्ठावान् आर्य पं. सोहनलालजी व अन्य आर्यों के सम्पर्क में आने पर श्री रामजीलाल वैदिक धर्म के अनुयायी हो गये। यज्ञोपवीत धारण करने पर तथाकथित जाति के लोगों तथा ग्रामवासियों ने विरोध किया जिसका रामजीलाल ने संघर्ष करते हुए घोषणा की कि मैं ग्राम छोड़ सकता हूँ किन्तु यज्ञोपवीत नहीं उतारूँगा इस दृढ़ता के आगे गांववाले नतमस्तक हो गये तथा रामजीलाल धानक से महाशय रामजीलाल बन गये। गीत गाने की कला आपको पैतृक सम्पदा के रूप में प्राप्त हुई भजनों के माध्यम से आपने हरियाणे में आर्य समाज का बहुत प्रचार किया। आपके द्वारा गाये जानेवाले गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है -

गीत

आजादी के मैदान में कदम बढ़ाया करें।
आगे कदम बढ़ानेवाले ऊंची पदवी पाया करें॥
जिसने कदम बढ़ाया आगे वै सच्चे सरदार बने।
जिन्होंने अपनी जान लड़ा दी, आजादी के हकदार बने।

वीर बांकुरे बलि वेदीपर अपना शीष चढ़ाया करें।
आजादी के मैदान ....

जिसने पी आजादी की भंग, चढ़ गया जिसको पक्का रंग।
चन्द्रशेखर आजाद भगत लड़ते मरे आजादी का जंग ॥
देश धर्म के खातिर सीने में गोली खाया करें ....
आजादी के मैदान ....
जो करते परोपकार नहीं करते अपने पेट से प्यार।
रामजीलाल तेरा गाना सुनके चिमक रहे कौमी गद्दार ॥
तेरी के वे खो हलै भोटड़ी लगते ऊंट अरडाया करें ॥
आजादी के मैदान में ....

पं. तेजसिंह

आर्य भजनोपदेशक श्री पं तेजसिंहजी ग्राम पारसोल (उ.प्र.) के निवासी थे। आपने अपने भजनों के माध्यम से ऋषि दयानन्द का सन्देश घर घर तक पहुंचाया। आपके गीतों में उर्दू और व्रजभाषा का प्रभाव देखने को मिलता है आपके गीतों में भाव इतने स्पष्ट होते थे कि जिनको सुनकर श्रोता झूठ उठते थे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के समय आपने भजनों के माध्यम से निजाम के अत्याचारों से आर्य जनता को अवगत कराया। आपके भजन बहुत लोकप्रिय रहे हैं। आपके प्रसिद्ध भजन की कुछ पंक्तियां अधोलिखित है -

भजन

उम्मीं दे भारत अब तो आंखे खोल ॥ टेक ॥
अब तो आंखे खोल तेरे सोने में हजारों साल गये।
तूभी गया, तेरी भूमी गयी, तेरी भूमि के भूपाल गये ॥
तेरा सोना गया तेरी चांदी गई तेरे हीरे मोती लाल गये।
तेरी गाय भैंस व भेड़ बकरी हाथी घोड़े घुड़साल गये ॥
तेरी गंगा गई तेरी यमुना गई, तेरे कुए बावड़ी ताल गये।
सतलज व्यास ओ रावी चुनाव जेहलम के जांहो जलाल गये।

तेरे तन ढकने के वस्त्र गये, खाने पीने के माल गये।
पापन भूक के मरते हुए तेरे लाखों वृद्ध वो बाल गये।
लाखों के मारे भूक के बन्द हो गया बोल ॥ उम्मी दे ॥

इसलिए ए गाफिल भारत नींद से आख उधाड़ दे तू।
वर्ना इससे मरना अच्छा ऐसे जीवन को धिक्कार दे तू।
तेजसिंह तू दु:ख सहे है, सुख में लाखों करे किलोल ।।
उम्मी दे भारत ...

श्री विजयसिंहजी विजय

श्री पं. विजयसिंहजी विजय का जन्म १३ नवम्बर सन् १९२५ में उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के कोकेराग्राम में हुआ। सन् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेकर १७ वर्ष की आयु में जेल गये। श्री गोपीराम जी पथिक ने आपको आर्य समाज के प्रचारक बनने की प्रेरणा दी, अपनी ओजस्वी वाणी से सन् १९४६ से १९४९ तक मथुरा जिले में श्री ईश्वरी प्रसादजी प्रेम (महात्मा प्रेमभिक्षुजी) के साथ घूम घूम कर ६० आर्य समाजों की स्थापना की। सन् १९५० से १९९३ तक राजस्थान मुम्बई और मध्यभारत की आर्य प्रतिनिधि सभा के सफल भजनोपदेशक के रूप में कार्य करते रहे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया सन् १९९३ से आप स्वतंत्र रूप में प्रचार करते रहे हैं। आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई की ओर से आपको ''वेदोपदेशक'' के रूप में सम्मानित किया गया। आपके गीतों की कईं पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। १७ मई २००६ को आपका देहावसान हुआ। आपके द्वारा लिखित प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है।

''चेतावनी''

झूंठा जग का ठाठ पड़ा रह जायेगा।
कुछ धर्म कमा जो तेरे संग जायेगा।
मान दिया नहीं दान दिया जग में जिया तो व्यर्थ जिया।
ना तो सत्कार किया, ना किसी से प्यार किया।
चेत नहीं तो फिर पीछे पछतायेगा।। कुछ धर्म कमा......।।
बड़े बड़े विद्वान् गये, बलवान् गये धनवान् गये।
न संग मकान गये, नहीं निशान गये।
सोच बता क्या ? इसको तू ले जायेगा।। कुछ धर्म कमा.... ।।

दीन हुए बल हीन हुए जो, उनसे तू प्यार करले।
मुक्ति की चाह है तो प्यारे उपकार करले।
सुख देगा तो दुनियां में सुख पायेगा ॥ कुछ धर्म कमा.... ॥
हार नहीं, मन मार नहीं, चल अब तू कर वार नहीं।
सद्गुण को धार और अवगुण विसार यहीं।
सफल यात्रा तभी **'विजय'** गुण गायेगा ॥ कुछ धर्म कमा ... ॥

....

पं. शिवलालजी

पं. शिवलालजी का जन्म ग्राम-जाटी जिला-सोनीपत (हरियाणा) में सन् १९०१ में ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ। आपकी शिक्षा सेंट स्टीफन हाईस्कूल दिल्ली में हुई। आप रेल्वे मास्टर के रूप कार्यरत रहे। स्वाधीनता आंदोलन और वैदिक धर्म के प्रचार हेतु आपने रेल्वे विभाग की नौकरी से त्याग पत्र देकर गृह त्याग दिया। आप दिल्ली-तथा आसपास के क्षेत्र तुगलकाबाद, वल्लभगढ़-महरौली, मेरठ-गाजियाबाद आदि स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करते रहे। आपने आश्रम स्थापित करके संस्कृत पाठशाला प्रारम्भ की तथा आप विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाते रहे। यज्ञ एवं संस्कार कराना, देशवासियोंको स्वाधीनता की प्रेरणा देना, स्वयं गीतों की रचना करके हारमोनियम पर गाना तथा शिष्यों को स्वर-ताल-गान विद्या की शिक्षा देना आपका प्रमुख कार्य था। आपका जीवन बहुत ही त्याग एवं तपस्या से युक्त था। आपके प्रयत्न से दिल्ली के पिछड़े क्षेत्र में ५२ पाठशालाओं की स्थापना हुई। आप आर्य समाज के एक निष्ठावान् समर्पित विद्वान् एवं आर्य भजनोपदेशक थे। आपने अनेक भजनोपदेशकों का निर्माण किया। आपके निश्छल-निष्कपट जीवन का प्रभाव आपके शिष्यों के जीवन में भी दृष्टिगोचर होता है। आपके शिष्यों में **श्री पं. बेगराज जी आर्य** ग्राम भूड़िया जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.) चौ. **रघुवीर सिंहजी नरेला** (दिल्ली) चौ **अतरसिंहजी आर्य** नरेला (दिल्ली) **महाशय कंवलसिंह सैलानी** बदरपुर (दिल्ली) आदि प्रमुख है। आपके रचित गीत इस प्रकार है।

गीत

चार दिना की रौनक बन्दे कर ले कर ना।
फेर बुढ़ापा बैरी आवे दुःख पड़े भरना ॥
डाटें हैं भी डटती कोन्या दिल की झाल तेरी।

गई ज्वानी आया बुढ़ापा सुकडै खाल तिरी ।।
दो दिन आगे दो दिन पीछे घर ज्या चाल तिरी ।
रूप रंग की ताकत घट ज्या आये साल तिरी ।।
हाथ पांव तेरे काम करैं ना हो दूजे का शरणा ।।

फेर बुढ़ापा ...

इसी उमर में माता पिता तेरे भाई प्यार करैं ।
आव भगत और उठ बैठ सब रिश्तेदार करैं ।
कमा कमा के न्या लावे तो सब तकरार करैं ।
ब्याही बीर और बेटी बेटा घर ते बाहर करैं ।
बैठक में तेरी खाट घाल दे देखण दें घर ना ।।

फेर बुढ़ापा ...

तरह तरह रोग चोतरफा दे लेंगे घेटी ।
सारा कुणबा कहण लाग जा कब रांद करे तेरी ।
दो दिन आगे दो दिन पाछै काल करे तेरी ढेरी ।
बांध जूड़के तने उठा लें ना लावें देरी ।।

फेर बुढ़ापा ....

सेवा भक्ति और दान किया करके नुकसान तिरा ।
ठीक समझ के काम किया कर हो सम्मान तिरा ।।
समझावन का फर्ज मेरा सै आगे ध्यान तिरा ।
शिवलाल गुरु है न्यू जा कहिये अच्छा ज्ञान तिरा ।।
राजपाल रघुवीर सिंह अन्त में हो एक दिन मरना ।।

फेर बुढ़ापा .....

पं. बालमुकुन्दजी

पं. बालमुकुन्दजी जन्म ग्राम-बपुणियां जिला-झज्जर (हरि.) में सन् १८९० में हुआ । आप सहायक रेल्वे स्टेशन मास्टर थे । जलियां बाला बाग में अंग्रेज शासकों ने क्रूर हत्याकाण्ड किया जिसमें सैंकड़ो देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी । उस समय अंग्रेज शासन के विरुद्ध चारों ओर विद्रोह का वातावरण बन गया, अनेक व्यक्तियों ने ब्रिटिश शासन द्वारा प्रदत्त उपाधियां लौटा दी, सरकारी नौकरी छोड़ दी । उन्हीं देशभक्तों में बालमुकुन्दजी थे जिन्होंने सहायक रेल्वे स्टेशन मास्टर की नौकरी छोड़ दी और राष्ट्रीय जन जागरण में स्वामी श्रद्धानन्दजी के नेतृत्व

में चलाये जा रहे आन्दोलन में सक्रिय रूप से कार्य करने लगे। हारमोनियम बजाना सीखा और आपने भजनों के माध्यम से देशवासियों को वैदिक और राष्ट्रीय कर्तव्य अवगत कराया। आप एक सफल भजनोपदेशक थे भजनों के साथ साथ मनोरंजक दृष्टान्त और सारगर्भित व्याख्यान दो-दो, तीन-तीन घण्टे तक आप देते थे। आपके द्वारा गाया जानेवाला प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है -

गीत

भारत के वीरो उठो, खड़े हो मत ना डरो।
सुख का जमाना आ गय, क्यों मुफ्त में विदा भरो॥
भारत के वीरो उठो ...

सफेदपोशी जेलदारी ये सदारहनी नहीं।
जेल जाने की हो जरुरत, जेल खानो को भरो॥
भारत के वीरो उठो ...

एक दिन जालिम के संग हो जंग जर्मन की तरह
चलतों के कपड़े तार लिए देश में नंगे फिरो॥
भारत के वीरो उठो ...

लोभ के वश तुम हुए बहिन बेटी दुःख भरो।
देशसेवा पर बढ़ो ना पैर पीछे को धरो॥
भारत के वीरो उठो ...

गुलामी की जंजीरों से जकड़ी हुई माता पड़ी।
शेर हो क्यों बन्दरों से तुम डरो॥
भारत के वीरो उठो ...

पं. बहोतराम

आर्य भजनोपदेशक पं. बहोतराम का जन्म ग्राम-जुड़ोला, जिला-गुड़गांव (हरियाणा) के एक सामान्य किसान परिवार में हुआ। आपने हिन्दी-संस्कृत का अध्ययन किया। पुराणों का विशेष स्वाध्याय आपने किया था, पौराणिक पण्डितों को पुराणों पर चर्चा करके उन्हें निरुत्तर कर देते थे। भजनों के माध्यम से प्रचार के साथ साथ आप आसन-व्यायाम-संध्या-हवन करने का प्रातः सायं शिक्षण दिया करते थे। आप अपनी शिष्यमण्डली को लेकर प्रचारार्थ-भ्रमण करते रहते थे। जन सामान्य को यज्ञोपवीत धारण करने की प्रेरणा देते रहते थे। जीवन के अन्तिम दिनों में आपने संन्यास ले लिया था। आपके द्वारा लिखित गीत इस प्रकार है।

गीत

हिन्दुओं के ढंग कुढ़ंग सुना।
पूजे शेर कच्छ-मच्छ कंकर पत्थर और वृक्ष।
रह्याना आगा, पाछा बच,
कृष्ण राधा के संग सुनो ॥१॥ हिन्दुओं के...
निकले घर में काला नाग,
कहते धन्य हमारे भाग,
गूगा पीर आया जाग
कहें महाराज छिपालो अंग सुना ॥ हिन्दूओं के ....
देव है इनका बन्दर नचावे जिसे कलन्दर
पिटता है बाबा बजरंग सुना ॥
जिससे हो रहा देश तबाह।
'बहोतराम' इन्हें समझाओ
बिन छ़ानी पीली भंग सुनो ॥ हिन्दुओं के ...

पं. देशराज

पं. देशजराजी आर्य समाज मेरठ (उ.प्र.) पुरोहित का कार्य करते हुए, भजनोपदेशक के रूप में आर्य समाज का प्रचार करते रहे। उनके द्वारा और गाया जानेवाला प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है -

१. गीत

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं ॥
जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं ॥
हूँ शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊ मैं ॥ तेरे दर...
मेरे पापकर्म ही तुझसे प्रीति न करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं ॥
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं ॥ तेरे दर ...
हे नाथ ! तू वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते है ॥
छीटा दे दो ज्ञान का होश में आऊँ मैं ॥ तेरे दर...

जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर सँभालूँ मैं।
प्रेमपाश में बंधा आपके गीत प्रेम से गा लूँ मैं॥
जीवन प्यारे **देश** का सफल बनाऊँ मैं॥ तेरे दर ....

२. प्रभाती गीत

वेला अमृत गया आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।
झोलियां भर रहे भाग्यवाले, लाखों पतितों ने जीवन संभालें।
रंक राजा बने, भक्तिरस में सने कष्ट भागा॥ साथी सारे....
कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया आलसी बनके हीरा गवायां।
सौदा घाटे का कर हाथ माथे पे रख रोने लागा॥ साथी सारे....
धर्म वेदों का देखा न भाला, वेला अमृत गया न संभाला।
उलटी हो गयी गति करके अपनी क्षतिचोला त्यागा॥ साथी सारे....
देश अब भी न तूने विचारा, सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गन्दला पानी पिया बनके कागा॥ साथी सारे...

पं. नन्दलाल

पं. नन्दलाल नाम के तीन आर्य भजनोपदेशक हुए हैं। जिन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

पं. नन्दलालजी का जन्म सन् १९०१ जिला स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पूज्य पिताजी का नाम महाशय संतलाल तथा माता का नाम जीवनबाई था। उनके गीत यथार्थता से ओतप्रोत रहते थे।

पं. नन्दलालजी आर्य भजनोपदेशक हरियाणा और राजस्थान में प्रचारकार्य करते रहे हैं।

पं. नन्दलाल जी आर्य भजनोपदेशक ग्राम बहीन तहसील-पलवल-जिला-फरीदाबाद (हरि.) के निवासी है। नन्दलाल के रचित गीत अधोलिखित है

१. गीत

चांदी और नोटों के बदले विद्वान् खरीदे जाते हैं।
धनवान हुकूमत करते हैं, गुणवान खरीदे जाते हैं॥
है निराकार वह परमेश्वर, पर जयपुर के बाजारों में।
मिट्टी पत्थर संगमरमर के भगवान खरीदे जाते हैं॥

हरिद्वार के पण्डों को जाकर, देखो हर की पौड़ी पर।
आपस में करे इशारे और यजमान खरीदे जाते हैं॥
नन्दलाल गऊ वध होता है, गऊ मांस के बदले भारत के।
पौडर सुर्खी और सिनेमा के सामान खरीदे जाते हैं॥

२. गीत

जिस नर में आत्मिक शक्ति है, वो शीश झुकाना क्या जाने॥ टेक॥
जिस दिल में ईश्वरभक्ति है वो पाप कमाना क्या जाने॥

सन्ध्या हवन, ईश्वर भक्ति जो सुबह शाम नित करता है।
वह पत्थर की मूर्त के आगे, शीश झुकाना क्या जाने॥

दो काल प्रेम से जो प्राणी, ईश्वर का चिन्तन करता है।
भगवान् का है विश्वास जिसे, दुख में घबराना क्या जाने॥

माँ बाप की सेवा करता जो, उनके दु:खों को हरता जो।
वह मथुरा काशी हरिद्वार वृन्दावन जाना क्या जाने॥

जो खेला है तलवारों से और अग्नि के अंगारों से।
रणभूमि में जाकर पीछे वह कदम हटाना क्या जाने॥

धर्म से जिसको प्यार नहीं और जिसका श्रेष्ठ विचार नहीं।
जिसका सद्व्यवहार नहीं, वह **नन्दलाल** का गाना क्या जाने॥

३. भजन

नर नारी सब प्रातः भज लो प्यारे ओम् का नाम॥ टेक॥
ओम् नाम का पकड़ सहारा, जो है सच्चा पिता हमारा।
वो ही है मुक्ति का धान, भज लो प्यारे .... ॥१॥
कितना सुन्दर जगत रचाया, सूर्य-चाँद आकाश बनाया।
गुण गाता है जगत् तमाम, भज लो प्यारे ... ॥२॥
पृथिवी और पहाड़ बनाए, नदियाँ नाले खूब सजाए।
बिन कर कर्म करे निष्काम, भज लो प्यारे .... ॥३॥
ऋषि मुनियों ने ओम् को ध्याया, अन्त न इसका किसी ने पाया।
करते है इसको प्रणाम, भज लो प्यारे ... ॥४॥
मन अपने को शुद्ध बनाएँ, विषय-विकारों से बच जाएँ।
वेदों का यह ही फरमान, भज लो प्यारे .... ॥५॥
हीना जन्म गँवाओ ना तुम, **'नन्दलाल'** घबराओ ना तुम।
सन्ध्या करो सुबह और शाम, भजलो प्यारे ... ॥६॥

पं. आशानन्द जी

आर्य-समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित आशानन्द जी आर्य शाहदरा दिल्ली के निवासी थे। आप मैजिल-लालटेन के द्वारा स्लाइड दिखलाते थे और बीच-बीच में भजन गाते और व्याख्या करते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में आपने बहुत प्रचार किया। ग्रामीण-श्रोता बहुत रूचि से आपके भजनों को सुनते और लाभ उठाते थे। आपके द्वारा गाये जानेवाले गाय के विषय में प्रसिद्ध गीत की कुछ पंक्तियाँ अधोलिखित है -

गीत

गइया मइया करे पुकार, कहाँ गये वे आर्य-कुमार ॥ टेक ॥
राम-राज की भूमि में, चलती है मुझ पर तलवार।
योगीराज महाराज कृष्ण ने मुझको जब अपनाया था।
नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में दूध का प्याऊ लगाया था ॥
मक्खन घी सब खाते थे, रोग निकट नहीं आते थे।
जगत् गुरु कहाते थे, ज्ञान का था भारी भंडार ॥
गइया मइया .... ॥१॥
ऋषि दयानन्द स्वामीने जब मेरी सुनी कहानी थीं।
करुणानिधि ने गऊ करुणा में मेरी कथा बखानी थी ॥
दुःख मेरा नहीं सहते थे, नीर नयन से बहते थे।
रो रोकर वह कहते थे, नित कटती कई हजार ॥
गइया मइया ..... ॥२॥
आशानंद ने किया है निश्चय, जीवन भेंट चढ़ायेंगे।
बूचड़-खानों को तोडेंगे, गऊ-वध बन्द करायेंगे ॥
हमको दे, प्रभु शक्ति-दान, हमने रचा है यज्ञ महान।
बचा सकें गऊ मां के प्राण, धारा बहे यहाँ गऊरस की ॥
गइया मइया .... ॥३॥

श्रीपृथ्वीसिंह बेधड़क

आर्य भजनोपदेशकों में श्री पृथ्वीसिंह बेधड़क का नाम बहुत प्रसिद्ध है। आप ग्राम शिकोहपुर जिला मेरठ (उ.प्र.) के निवासी थे। संगीत रचना के साथ साथ

प्रचार के क्षेत्र में आपने बहुत ही यशस्विता प्राप्त की है। आप बहुत ही प्रभावशाली भजनोपदेशक थे। अपने गीतों के माध्यम में श्रोताओं को घण्टों तक बांधे रखते थे, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आन्दोलन के सार्वजनिक सम्मेलनों में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता था। आपके गीतों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। स्वतंत्रता के प्राप्ति के विषय में आपका तत्कालीन गीत बहुत ही प्रसिद्ध हुआ जिसकी कुछ पंक्तियां निम्नलिखित है -

१. स्वतंत्रता की वन्दना

आजादी देवी तू आ भारत की ओर ।
आवाहन कर रहे पुजारी यहां ३५ करोड़ ।।
राजा पृथ्वीराज के जमाने से तू रूढ गई ।
तब ही से तकदीर भारतवासियों की फूट गई ।।
फूट की बिमारी बढ़ी प्रेम डोरी टूट गई ।
माली की रखवाली बिन सर सब्ज बाग गये ।।
कोहिनूर हीरा गया मणिवाले नाग गये ।
जाग जाग जाग गये बाध बाध भाग गये ।।
घर में घुस गये चोर ।। आजादी देवी आ भारत ...
स्वामी दयानन्द ने तेरी रोज करी रखवाली ।
दादाभाई नौरोजी ने पहले तेरी नीव डाली ।।
तिलक और गोखले भी तेरे से गये है खाली ।
गांधी और पटेल ने भी जेल में चक्की चलाली ।।
मोती और जवाहर ने अपने घरों में आग लगाली
कहे **'पृथ्वीसिंह'** वीर भगतसिंह ने भी फांसी खाली ।
पता नहीं तू किस ओर ।। आजादी देवी तू आ भारत ....

२. 'छूआछूत'

जग में कितनी चीज अछूत सुनो बतलाते है ।।
भिरड़ ततैया शहद की मक्खी छूते चढ़ जा भूत ।
चीतें शेर भगेरे भेड़िये ये सब पशु अच्छूत ।।
छूते ही फाड़न आते है ।। ... जग में कितनी ....

अछूत वे हैं जो अग्निहोत्र सन्ध्या की करते टाल।
सबसे ज्यादा अछूत जग में वे पापी चाण्डाल ॥
बेच जो बेटी खाते हैं ॥ ... जग में कितनी चीज ...
उनको छूना कभी ना चाहिए जो कौमी गद्दार।
आपने भाइयों के ऊपर हैं जो करते अत्याचार ॥
आप क्यों इन्हें शीश झुकाते हैं ॥ .... जग में कितनी...
भंगी और चमारों को जो भाई कहें अछूत।
पृथ्वीसिंह बेधड़क लगेंगे उनके सर पर जूत ॥
देखना जो दिन आते हैं ॥ ... जग में कितनी चीज ...

कु. वीरेन्द्रजी वीर

श्री कुंवर वीरेन्द्रजी वीर, आर्य समाज के उच्च कोटि के भजनोपदेशक थे। इनका जन्म ग्राम संभालका जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में हुआ। आपके द्वारा रचित भजन आर्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। अपनी ओजस्वी वाणी से आपने आर्य समाज का बहुत प्रचार किया। अपने साथ प्रचार करनेवाले उपदेशकों का सदा उत्साह वर्धन करते रहते थे। आपके द्वारा गाया जानेवाला प्रसिद्ध गीत अधोलिखित है –

गीत

जवानो जवानी में चलना संभल के।
ये आती नहीं दुबारा निकल के ॥
कठिन है जवानी की मंजिल यह प्यारों।
कभी लड़खड़ा जाओ न कुछ दूर चलके ॥१॥

विषयरूपी रहजन हजारों मिलेंगे।
खबरदार कोई ले जाए न छलके ॥२॥

सुधर जाए जिससे परलोक ऐसा यतन कर।
जब आयेगी मृत्यु न जायेगी टल कर ॥३॥

'वीरेन्द्र' न दिल है लुटाने की वस्तु।
लुटाया यह जिसने रह गया हाथ मल के ॥४॥

दिवंगत आर्य भजनोपदेशक अवशिष्ट नामावली

१. **श्री पं. अमरनाथजी प्रेमी**
ग्राम - फज्जूपुर-दीनानगर, जिला - गुरुदासपुर (पंजाब)

२. **श्री अमर प्रेमीजी** ● जालन्धर (पंजाब)

३. **श्री ठाकुर अमरसिंहजी** ग्राम - नारंग, जिला - सिरमौर (हिमाचलप्रदेश)

४. **पं. अमरसिंहजी** ● ग्राम - सौंघल, जिला - करनाल (हरि.)

५. **श्री अमीचन्द मेहता** ● जि. बुलन्दशहर (उ.प्र.)

६. **स्वामी अमृतानन्दजी** ● भौजपुर, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

७. **श्री आर्यवीर ब्रह्मचारी** ● मुरादाबाद (उ.प्र.)

८. **श्री पं. आशारामजी धनुर्धर** ● आदर्शनगर - नजीबाबाद (उ.प्र.)

९. **श्री महाशय ईश्वर दयालुजी (क्षेत्र प्रचारक)** ● अलीगढ़ (उ. प्र.)

१०. **श्री महाशय ईश्वरसिंहजी** ● ग्राम - ककरोला, दिल्ली

११. **श्री स्वामी ऋतानन्दजी (पूर्वनाम ऋषिराम)**
धामपुर-बिजनौर (उ. प्र.)

१२. **महाशय ओमप्रकाशजी**
ग्राम - टटीरीमण्डी, जिला - बागपत (उ. प्र.)

१३. **श्री कण्टूराम बनजारेवाला** ● सहारनपुर (उ.प्र.)

१४. **श्री कांटूराम** ● ग्राम-बसवाखेड़ी, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

१५. **श्री पं. कपूरचन्दजी** ● औरंगाबाद, जिला - सहारनपुर (उ. प्र.)

१६. **श्री महाशय करतारसिंहजी** ● ग्राम-भवानीखेड़ा (हरियाणा) १४

१७. **श्री कर्मवीर जी आर्य** ● जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

१८. **श्री कान्तिचन्द्रजी प्रभाकर** ● ऊमरी-बिजनौर (उ.प्र.)

१९. **श्री काशीराम तिलीपुरा** ● जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

२०. **श्री किशोरीलालजी** • मथुरा (उ.प्र.)

२१. **श्री कृष्णपाल रंगीला** • ग्राम-नन्हेड़ा, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

२२. **श्री कृपाराम धनुर्धर** • जिला- हरिद्वार (उत्तरांचल)

२३. **श्री खुशहालसिंह** • ग्राम-बेहड़की सैदाबाद, जि. हरिद्वार (उत्तरा.)

२४. **चौ. खेमचन्दजी** • ग्राम - सोटा, जिला - मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

२५. **श्री ठा. गजराजसिंह** • अलीगढ़ (उ. प्र.)

२६. **श्री महाशय गजराजसिंह पथिक**
ग्राम - बागड़पुर, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.)

२७. **श्री गंगाराम भटौना** • जि. बुलन्दशहर (उ.प्र.)

२८. **श्री गंगाशरण** • सनौली, जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

२९. **श्री ठा. गंगासिंहजी** • बलिया (उ.प्र)

३०. **श्री गिरधारीलालजी "संगीतमर्मज्ञ"** • पटियाला (पंजाब)

३१. **श्री गुलाबसिंहजी** • शेरकोट-बिजनौर (उ.प्र.)

३२. **श्री गुलाबसिंहजी राघव** • दिल्ली

३३. **श्री गेंदारामजी** • सहारनपुर (उ.प्र.)

३४. **महाशय गेंदारामजी** • ग्राम-पिलखनी, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

३५. **श्री. चन्द्रकविजी** • मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

३६. **श्री चुन्नीलालजी भोगल** • नई दिल्ली

३७. **महाशय छुट्टनलाल त्यागी** • जिला-मेरठ (उ.प्र.)

३८. **श्री जगत्वीर सिंह स्नेही**
ग्राम-अरनिया खुर्द, जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

३९. **श्री जगदीश भूषणजी**
मुजफ्फरगढ़ (पंजाब) वर्तमान शाहदरा-दिल्ली

४०. **महाशय जबरसिंहजी**
ग्राम-ताजीपुर, जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)

४१. **श्री महाशय जयपाल जी** • आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना (बिहार)

४२. **श्री पं. जयनारायण जी** • ग्राम - पाई, जिला - करनाल (हरि.)

४३. **पं. जयप्रकाशजी आर्य धनुर्धर** • जिला - मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

४४. **श्री जयप्रकाशजी धनुर्धर** • रामपुर (उ.प्र.)

४५. **श्री महाशय जसपाल जी** • आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना (बिहार)

४६. **श्री चौ. जसवन्तसिंह** • ग्रा. दतियाना, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

४७. **श्री ज्ञानचन्दजी कर्मचन्दजी (चिमटा भजन मण्डली)**
सियाल कोट (पंजाब) वर्तमान पाकिस्तान

४८. **श्री ज्ञानेन्द्रप्रकाश** •ग्रा. चिन्ता की नगलिया, जिला-अलीगढ़ (उ.प्र.)

४९. **श्री महाशय ताराचन्दजी**
सियाल कोट (पूर्व-पंजाब) वर्तमान पाकिस्तान

५०. **श्री पं. तेजपालजी** • ग्राम - गंगोह, जिला - सहारनपुर (उ. प्र.)

५१. **पं. तेजभानजी आर्य** • सोनीपत (हरियाण)

५२. **पं. दयाचन्दजी** • ग्राम - सहोंजनी, जिला - मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

५३. **श्री ठा. दुर्गासिंहजी** • अलीगढ़ (उ. प्र.)

५४. **पं. देवकीनन्दनजी कवि** • अलीगढ़ (उ.प्र.)

५५. **महाशय देवेन्द्रजी तूफान** • ग्राम - डेटा (लघु) निकट पिसावा, जिला - अलीगढ़ (उ. प्र.)

५६. **श्री धर्मदत्तजी आनन्द** • लखनऊ (उ. प्र.)

५७. **महाशय धर्मदत्तजी** • आर्य समाज भोजपुर, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

५८. **श्री महाशय धर्मपालजी** •आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

५९. **श्री महाशय धर्मराजजी कांठ** • जिला - मुरादाबाद (उ. प्र.)

६०. **श्री धर्मप्रकाशजी प्रेम** •ग्राम-पो. नोजली, जि.मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

६१. **श्री धर्मवीर जी धर्मी (स्वामी मोदकानन्दजी)**
कलौन्दा, जि. गाजियाबाद (उ. प्र.)

६२. **श्री धर्मवीरजी (शिष्य दादा बस्तीराम)** • (हरियाणा)

६३. **चौ. धूमसिंहजी धूम "कविरत्न"**
ग्राम - समौली, जिला - मेरठ (उ.प्र.)

६४. **श्री महाशय ध्यानसिंहजी**
ग्राम-इलावास, पोस्ट रामपुरविदार, बिजनौर (उ. प्र.)

६५. **श्री ठाकुर नत्थासिंहजी** • जिला - अलीगढ़ (उ.प्र.)

६६. **चौ. नत्थासिंहजी** • ग्राम - बदरपुर, जिला - करनाल (हरि.)

६७. **श्री महाशय नन्दकिशोरजी**
ग्राम - जगाधरी, जिला - यमुनानगर (हरियाणा)

६८. **महाशय नन्दरामजी** • ग्राम-खैया, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.)

६९. **श्री नन्दराम (एम.एल.ए.)** • मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

७०. **श्री नन्दराम जी** • गाजियाबाद (उ.प्रं.)

७१. **श्री महाशय नन्दलालजी** • गाजीपुर (उ. प्र.)

७२. **महाशय नरदेवजी यादव** • जिला-मुरादाबाद (उ.प्र.)

७३. **श्री महाशय नरपतसिंहजी** • ग्राम-फीना, बिजनौर (उ.प्र.)

७४. **कुंवर नरेन्द्रजी** • आप पं. हरिदत्तजी शास्त्री तथा श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री के साथी रहे हैं।

७५. **श्री ठाकुर नवलसिंहजी**
ग्राम - मुजफ्फराबाद, जिला - सहारनपुर (उ.प्र.)

७६. **श्री निरंजन प्रसादजी** • जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

७७. **श्री पूरणचन्द** • ग्राम-सुसाड़ी, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

७८. **श्री पन्नालाल जी पीयूष** • उदयपुर (राज.)

७९. **श्री स्वामी प्रज्ञानन्द** • ग्राम-बसेड़ा, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

८०. **श्री प्रभुदयाल** • जिला-हिसार (हरियाणा)

८१. **श्री प्रभुदयालजी आर्य** • आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब

८२. **श्री पं. प्रह्लादजी** • उद्गीर, जिला - उस्मानाबाद (महा.)

८३. **श्री महाशय प्यारेलालजी** • ग्राम-भापड़ौदा, जिला-रोहतक (हरि.)

८४. **श्री फूलसिंह** • नकुड़, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

८५. **श्री पं. बलराजजी संगीतरत्न**
ग्राम-फिल्लौर, जिला जालन्धर (पंजाब)

८६. **श्री चौधरी बलवीरसिंहजी बेधड़क**
ग्राम - हापुड़, जिला - गाजियाबाद (उ. प्र.)

८७. **श्री महाशय बलवीर सिंहजी**
ग्राम - डौला, जिला - करनाल (हरि.)

८८. **श्री चौ. बलवीरसिंह** • ग्राम-भारसी, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

८९. **महाशय बसन्तलालजी** • ग्राम-बेरा, जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

९०. **श्री बालकृष्णजी** • मुजफ्फरगढ़ (पंजाब) वर्तमान शाहदरा-दिल्ली

९१. **महाशय बालकराम** • गढ़वाल उत्तराखंड

९२. **श्री बाबूरामप्रेमी (शिष्य अभयराम शर्मा)** • सहारनपुर (उ.प्र.)

९३. **श्री ब्रह्मानन्दजी** • ग्राम-बेलड़ा तह.सड़की, जि. हरिद्वार (उत्तरांचल)

९४. **पं. ब्रह्मानन्दजी** • ग्राम - सहोंजनी, जिला - मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

९५. **स्वामी बेधडकजी (खण्डन की पताका)**
ग्राम - धमतान, जिला - जीन्द (हरियाणा)

९६. **श्री पं. भगतरामजी** • ग्राम - अलाहर, जिला - यमुनानगर (हरि.)

९७. **श्री चौ. भंवरसिंह** • ग्राम-पुरबलियान, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

९८. **श्री कु. भद्रपाल जी संगीतज्ञ**
चण्डौली निकट साधु आश्रम अलीगढ़ (उ.प्र.)

९९. **श्री महाशय भोलूरामजी संगीतज्ञ**
ग्राम - अलाहर, जिला - यमुनानगर (हरियाणा)

१००. **चौ. मलखानसिंह** • ग्राम - सोटा, जिला - मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

१०१. **श्री महाशय महानन्द सिंह** • ग्राम बघई, जि. मिर्जापुर (उ.प्र.)

१०२. **श्री महाशय महावीर जी** • जीन्द (हरि.)

१०३. **श्री महावीरसिंह** • ग्राम-काबड़ौत -शामली (उ.प्र.)

१०४. **श्री ठा. महिपाल सिंहजी आर्य** • अलीगढ़ (उ.प्र.)

१०५. **श्री महाशय मंशीरामजी** •आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

१०६. **श्री मंगलसेन** • ग्राम-जलालपुर-हरिद्वार (उत्तरांचल)

१०७. **श्री महाशय मुखरामजी शर्मा** • ग्राम-फीना, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

१०८. **श्री मुन्नालालजी मिश्र** • हैदराबाद (आं.प्र.)

१०९. **श्री महाशय मुरलीधरजी** • बरेली (उ.प्र.)

११०. **श्री मुरारीलालजी बैचेन** • फरीदाबाद (हरियाणा)

१११. **श्री महाशय मूलचन्द जी** • अजमेर (राज.)

११२. **श्री पं. मेहरचन्दजी** • आर्यसमाज लुधियाना (पंजाब)

११३. **श्री मेलारामजी प्रसिद्ध गायक** • आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब

११४. **श्री डा. मोहनलालजी** • ग्राम-नटौर, जिला-बिजनौर (उ. प्र.)

११५. **श्री पं. मदनलालजी**

११६. **श्री पं. राजपालजी**

११७. **श्री चौ. रामकरणजी** • जीन्द (हरि.)

११८. **श्री पं. रामचन्द्रजी** • ग्राम-पुरकाजी, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

११९. **महाशय रामचन्द्रजी** • जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र)

१२०. **महाशय श्रीरामजी आर्य** • ग्राम-खैया, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र)

१२१. **श्री रामपतजी वानप्रस्थी** • ग्राम-आसन, जिला-रोहतक (हरियाणा)

१२२. **महाशय रामनाथजी** • ग्राम - बटाला, जिला - गुरुदासपुर (पंजाब)

१२३. **श्री राजाराम पुरोहित** • आर्य समाज शामली (उ.प्र.)

१२४. **श्री ब्र. रामलाल** ● ग्राम-अमरोहा, जिला-मुरादाबाद (उ.प्र.)

१२५. **श्री रामसिंह बेढब** ● ग्राम-दूधारखेड़ी, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

१२६. **श्री रामचन्द्रजी धीमान्** ● सहारनपुर (उ.प्र.)

१२७. **महाशय रामस्वरूपजी आजाद** ● ग्राम-फिरोजपुर, जिला-बुलन्द

१२८. **श्री रामस्वरूपजी मुसाफिर** ● चन्दोसी, जिला-मुरादाबाद (उ. प्र.)

१२९. **श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल** ● ग्राम-नन्हेड़ा, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

१३०. **श्री महात्मा लटूरसिंहजी** ● ग्राम - मऊ, जिला - मेरठ (उ. प्र.)

१३१. **श्री पं. लालसिंहजी आर्य** (पं. सत्यपालजी मधुर के पिता)
ग्राम - शाहजुड्डी, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

१३२. **श्री लालसिंह** ● ग्राम-हसनपुर, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

१३३. **श्रीमती विद्यावती जी** ● दानापुर-पटना (बिहार)

१३४. **श्री विन्देश्वरी प्रसादजी** ● वाराणसी (उ.प्र.)

१३५. **श्री विद्यारत्नजी आर्य** ● नजीबाबाद-बिजनौर (उ.प्र.)

१३६. **श्री पं. विश्वनाथ जी** ● जहीराबाद - हैदराबाद (आ. प्र.)

१३७. **श्री महाशय विश्वम्भर बुधवासीद** ● जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

१३८. **श्री विश्वम्भरदत्तजी शास्त्री** ● रामपुर (उ.प्र.)

१३९. **पं. वीरभानुजी** ● ग्राम-गंगघाड़ी, जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

१४०. **श्री वीरभान** ● मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

१४१. **श्री वीरेन्द्रजी** ● गाजीपुर (उ. प्र.)

१४२. **महाशय शम्भुदयालजी** ●ग्राम-दतियाना, जि. गाजियाबाद (उ.प्र)

१४३. **श्री ठाकुर शमशेरसिंहजी**
ग्राम-भदशाली, जिला-होशियारपुर (पंजाब)

१४४. **श्री पं. शिवकरणजी आचार्य**
ग्राम - डोहकी, जिला-भिवाजी (हरियाणा)

१४५. **दादा शिवनारायणजी** ● ग्राम - डौला, जिला - करनाल (हरि.)

१४६. **श्री महाशय शिवनाथ जी त्यागी**
सम्भल, जिला - मुरादाबाद (उ.प्र.)

१४७. **श्री शिवराजजी त्यागी** ● मुरादाबाद (उ.प्र.)

१४८. **श्री पं. शुगनचन्दजी** ● देहरादून (उत्तरांचल)

१४९. **श्री पं. श्यामजी शर्मा** ● आगरा (उ.प्र.)

१५०. **श्री पं. श्यामसिंहजी हितकर**
ग्राम - रणखण्डी, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

१५१. **श्री ठा. श्रवणसिंहजी**
ग्राम - चण्डोली, समीप साधु आश्रम अलीगढ़ (उ.प्र.)

१५२. **श्री महाशय सन्तरामजी**
ग्राम - कलासवाली, जिला सियालकोट (पंजाब) वर्तमान (पाकिस्तान)

१५३. **श्री स्वामी सम्पूर्णानन्दजी (लठधारी)** ● चरखी दादरी (हरियाणा)

१५४. **श्री पं. सरनामदत्तजी (शिष्य स्वामी भीष्मजी)**
ग्राम-सिरनी गोपालपुर, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

१५५. **श्री सीताराम आर्य** ● सहारनपुर (उ.प्र.)

१५६. **महाशय सुखदेवजी (पूर्वनाम शंकर)** ● जिला-बिजनौर (उ.प्र)

१५७. **श्री सुखलाल** ● स्याना, जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

१५८. **श्री महाशय सुखदासजी**
ग्राम - माजरा-रामपुर, जिला - सहारनपुर (उ. प्र.)

१५९. **श्री सूरतसिंहजी** ● ग्राम - डिगोली, जिला - सहारनपुर (उ. प्र.)

१६०. **श्री पं. सूरतसिंहजी** ● ग्राम - चूहड़पुर-अम्बाला (पंजाब)

१६१. **श्री सेवारामजी** ● जम्मू कश्मीर

१६२. **श्री सोहनलालजी संगीताचार्य** ● ग्राम-दयालपुरा करनाल(हरि.)

१६३. **श्री सौदागरमल** ● नकुड़, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

१६४. **श्री पं. हजारीलालजी** ● ग्राम-दीनानगर, जिला-गुरुदासपुर (पंजाब)

१६५. **श्री महाशय हरफूलजी (क्षेत्रियप्रचारक)**
ग्राम - मिर्जापुर, जिला - सहारनपुर (उ. प्र.)

१६६. **श्री हरस्वरूपजी** ● मेरठ (उ.प्र.)

१६७. **श्री महाशय हंसराज जी**

१६८. ग्राम-कलासवाली, जिला-सियालकोट (पंजाब) वर्तमान पाकिस्तान

१६९. **पं. हरिदत्त नादान** ● जिला-मेरठ (उ.प्र.)

१७०. **श्री महाशय हरिदत्तजी** ● ग्राम - दादरी, जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)

१७१. **श्री हरिदेवजी (एम.एल.ए.)**
ग्राम-बहड़ा सन्दलसिंह, जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

१७२. **श्री महाशय हरिसिंहजी**
ग्राम-बसेड़ा, पोस्ट - धामपुर, जिला - बिजनौर (उ. प्र.)

१७३. **श्री महाशय हरिसिंह जी गजब** ● ग्राम-रमाला, जि.बागपत (उ.प्र.)

१७४. **महाशय हरिलालजी आर्य** ● ग्राम-मंधार, जिला-यमुनानगर (हरि.)

१७५. **श्री महाशय हरिश्चन्द्रजी करनालवी**
ग्राम - रादौर, जिला - यमुनानगर (हरियाणा)

१७६. **श्री महाशय हरिश्चन्द्रजी मुल्तानी**
मुल्तान (पंजाब) वर्तमान पाकिस्तान

....

दयानन्द वचनामृत

जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

(सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

वर्तमानकालिक

आर्य भजनोपदेशक / भजनोपदेशिका

आर्य भजनगायक / भजनगायिका

आर्य भजनोपदेशक सहयोगी

संग्रहकर्ता :

श्री नरेशदत्त आर्य

मन्त्री - आर्य भजनोपदेशक परिषद् (दिल्ली)

आर्य भजनोपदेशक / भजनोपदेशिका



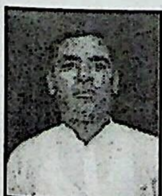
नाम	: श्रीमती अनुपमा गुप्ता	१
पति का नाम	: श्री राजीव गुप्ता	
जन्म	: ६-१०-१९६६	
प्रचार कार्य	: सन् २००० से	
स्थायी पता	: ५०/३१, बी बाग नौहरिया मल जैन, एम गली नजदीक, गुल मोहर होटल, लुधियाना पंजाब - १४१००१	
दूरभाष	: ०१६१-६५४९४२६ - २४४८७५५	
चलभाष	: ९८७६२३५७२५	



नाम	: अभयराम शर्मा	२
पिता का नाम	: सूरजभान शर्मा	
जन्म	: १८-२-१९२८	
प्रचार कार्य	: १०-७-१९४५ से	
स्थायी पता	: जिलाधिकारी निवास के पीछे, उत्तर प्रदेश	
दूरभाष	: ०१३२-२७१५६६७०	
चलभाष	: ९४१२५२५७५२	



नाम	: पं. अमरसिंह विद्यावाचस्पति	३
पिता का नाम	: श्री कन्हैयालाल जी	
जन्म	: २४-११-१९४९	
प्रचार कार्य	: सन् १९७१ से	
स्थायी पता	: आर्य समाज मन्दिर ब्यावर, राजस्थान	
दूरभाष	: ०९८२९५९१९८६/०९४१३६९४२२१	
चलभाष	: ०९३५२४१०८३६	



नाम	: अमरेश आर्य	४
पिता का नाम	: श्री सोमदत्त शर्मा	
जन्म	: ११-७-१९६९	
प्रचार कार्य	: सन् २००० से	
स्थायी पता	: ग्रा. चन्दैना कोली, पो. खास, जि.सहारनपुर (उ.प्र.) २४७५५४.	
चलभाष	: ०९४११६४८१८६	



नाम : चौ. अरुण कुमार आर्य ५

पिता का नाम : श्री जसवीर सिंह

जन्म : १-१-१९७४

प्रचार कार्य : सन् १९९७ से

स्थायी पता : ग्राम गगसौना, पो. फलावदा, जिला-मेरठ, (उ.प्र.)

चलभाष : ९७१९५२७४३८/९७५९२९४०३६



नाम : अशोक कुमार आचार्य ६

पिता का नाम : श्री केशव सिंह परमार

जन्म : १-१-१९७२

प्रचार कार्य : सन् १९९९ से

स्थायी पता : १४८/०८, सिनेमा रोड़ अम्बाह, जि. मुरैना, (म.प्र.)

चलभाष : ९४२५४१८८५५/९९७७८८७०९९ ९९७७८८७०९७



नाम : पं. आनन्दस्वरूप आर्य ७

पिता का नाम : श्री झुन्नालाल आर्य

जन्म : ११-२-१९४५

प्रचार कार्य : सन् १९८० से

स्थायी पता : ग्रा. न्यामतपुर, पो. कनकपुरी, ता.बहेड़ी, जन.बरेली (उ.प्र.) २४३ ५०५.

चलभाष : ९७१९९४६९६५/९४११०८८८६४

नाम : पं. आजाद सिंह आर्यवीर ८

पिता का नाम : स्व. श्री ताराचन्द जी

जन्म : १५-८-१९६५

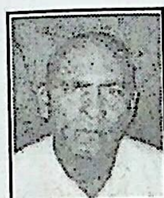
प्रचार कार्य : सन् १९९० से

स्थायी पता : वेद बिहार कालोनी, नवादा रोड, काजीपुरा, सहारनपुर घटक पास जाली फैक्ट्री, जि. सहारनपुर, (उ.प्र.).

चलभाष : ९७५९८६९१११९



नाम : पं. आर्येन्द्रकुमार वैदिक भूषण ९
पिता का नाम : नवरत्न आर्य
जन्म : ४-७-१९४६
प्रचार कार्य : सन् १९६२ से
स्थायी पता : आर्ष गुरुकुल एटा (उ.प्र.) २३३६६.
चलभाष : ९९१७३३५६७७/९८११२२७८१६



नाम : आशाराम आर्य १०
पिता का नाम : श्री शिवचरण
जन्म : ८-८-१९५६
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : ग्राम सीतादेई, पो.बाबूगढ़ छावनी, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) २४५ २०१.
दूरभाष : ०१२२-२३३३९६६
चलभाष : ०९३५८२०४३९७



नाम : उदयराज आर्य ११
पिता का नाम : श्री डालचन्द आर्य
जन्म : १-४-१९४७
प्रचार कार्य : २७ मार्च १९७८ से
स्थायी पता : मोहल्ला शह बाजपुर, शहलवान, बदायू (उ.प्र.)
चलभाष : ९७५८१०७९२४



नाम : पं. उपेन्द्रकुमार आर्य १२
पिता का नाम : श्री मोहल्लड़ सिंह
जन्म : १८-३-१९७०
प्रचार कार्य : सन् १९८६ से
स्थायी पता : मिल्क कालोनी, धनास म.न. ६०८. चण्ड़ीगढ (पंजाब).
चलभाष : ९८१५१९६७१९/९२१७९९३३४१



नाम : कुंवर उदयवीर आर्य १३
पिता का नाम : श्री स्व लालचन्दजी आर्य
जन्म : २-२-१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : ग्रा. पो. उसपार, जिला मथुरा, (उ.प्र.)
चलभाष : ०९७१९३०७८२५



नाम : ऋषिपाल आर्य १४
पिता का नाम : स्व. श्री सुरतसिंह आर्य
जन्म : १-१-६०
प्रचार कार्य : सन् १९९७ से
स्थायी पता : गांव-ओतरा-पोस्ट नानौता,
जिला-सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
चलभाष : ९७५९१०६५१६



नाम : ओम प्रकाश पांचाल १५
पिता का नाम : श्री रमेश चन्द पांचाल
जन्म : १३-१२-१९७८
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : कौन्डल, त. हथीन, जिला फ्लवल
(हरियाणा) १२११०३.
दूरभाष : ०१२७५-६८६५६६
चलभाष : ९८१३२४३५२७



नाम : ओम प्रकाश फ्रन्टियर १६
पिता का नाम : पं. प्रह्लाददत्त
जन्म : सन् १९२७
प्रचार कार्य : १६ वर्ष की उम्र से सन् १९४३
स्थायी पता : मन्दिरपास नगर, जमालपुर,
जि. गौतमबुद्ध नगर, (उत्तर प्रदेश)



नाम : ओमप्रकाश वर्मा १७
पिता का नाम : श्री प्रभुदयालजी
जन्म : १५-११-१९३०
प्रचार कार्य : सन् १९४६ से
स्थायी पता : ओम् विद्यामन्दिर यमुनानगर (हरि.)
दूरभाष : ९८१२६-१९४५४
चलभाष : ०१७३२-२३९९९०



नाम : ओमप्रकाश राघव १८
पिता का नाम : श्री महावीर सिंह
जन्म : २-४-१९४५
प्रचार कार्य : सन् १९७८ से
स्थायी पता : ग्रा. पो.दानगढ़,
जि.बुलन्द शहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९४५२०८३५५८

नाम : कड़कदेवार्य १९
पिता का नाम : श्री लाखन सिंह आर्य
जन्म : ८-५-१९४०
प्रचार कार्य : सन् १९६५ से
स्थायी पता : ग्राम-गिनौरानगली,
जि. बुलन्द शहर (उ.प्र.)
दूरभाष : ९५११८६१०६५
चलभाष : ९७५८५८९५६०

नाम : कपिलदेव शर्मा २०
स्थायी पता : मर्रा अमर, गहोली वाया
मंगलगढ़, समस्तीपुर (बिहार)
दूरभाष : ०६२७५-२२३६५१

नाम : कमल देव आर्य २१
पिता का नाम : श्री किशनलालजी
जन्म : सन् १९२०
प्रचार कार्य : सन् १९४६ से
स्थायी पता : गढ़ी, महाराम पो. अकोश, जिला मथुरा (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५६६१-२२४४६२/२२४८१६



नाम : कमल किशोर शास्त्री २२
पिता का नाम : बालेश्वर प्रसाद
जन्म : सन् १९७१
प्रचार कार्य : सन् १९९३ से
स्थायी पता : आर्य समाज मन्दिर बैरसिया, पो.बैरसिया, तह थाना बैरसिया, जि. भोपाल, म.प्र.
चलभाष : ०९९८११८४२६४



नाम : श्रीमती कमला शास्त्री २३
पति का नाम : श्री कुंवरपाल शास्त्री
जन्म : ०६-०६-१९७६
प्रचार कार्य : १-१-१९९४ से
स्थायी पता : आर्य समाज मन्दिर, एल ब्लॉक, हरिनगर, नई दिल्ली.
दूरभाष : ०९८१०१३४४३१/०९९७१५५७५६१



नाम : कमलेशकुमार आर्य २४
पिता का नाम : श्री दौलतराम जी
जन्म : १-९-१९३१
प्रचार कार्य : सन् १९५० से
स्थायी पता : निर्मलाश्रम, रविंद्र रंगमंच मार्ग, मदनगंज, किशनगढ़ (राजस्थान)
दूरभाष : ०१४६३-२४५७६९
चलभाष : ९८९८२०१८७४

नाम : श्री कप्तान सिंह २५
स्थायी पता : खुलावली, पो. हबीब गंज,
. जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५७२३-२२२७१३



नाम : कुंवर कर्मवीर आर्य २६
पिता का नाम : श्री महाराम सिंह
जन्म : २१-६-१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : ग्रा. सिकन्दरपुर (गड़वाड़ा), पो.रहमतपुर, जि. मुजफ्फर नगर (उ.प्र.).
चलभाष : ०९३१९५०६११६



नाम : कल्याण सिंह वेदी २७
पिता का नाम : स्व. श्री रामचन्द्र
जन्म : १०-६-१९५९
प्रचार कार्य : सन् १९८२ से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट मेहवड कला, निकट रुडकी, जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : ९७५८०४०७९३
चलभाष : ९७५८१०२९७७

२८
नाम : कल्याण सिंह
स्थायी पता : ग्राम रवाना पो. गन्धौर, जि. बिजनौर (उ.प्र.)
चलभाष : ०१३४५-२८४१०८



नाम : कुलदीप आर्य २९
पिता का नाम : श्री धर्मवीर सिंहजी
जन्म : ५-०२-१९८०
प्रचार कार्य : सन् १९९९ से
स्थायी पता : ग्राम छाछरी, पो. उलेटा, जिला बिजनौर (उ.प्र.)
चलभाष : ०९४११२९९४६७



नाम : पं. कृष्णदेव आर्य ३०
पिता का नाम : श्री रामलाल आर्य
जन्म : ७-६-१९५२
प्रचार कार्य : सन् १९६५ से
स्थायी पता : ग्राम व पत्रालय बॅल्ली वाया शाही जिला-बरेली (उ.प्र.) २४३ ५०५.
चलभाष : ९९१७५६१५९७

नाम : श्री कृष्ण मुनि (किशन लाल) ३१
पिता का नाम : श्री देवी राम
जन्म : ३-१-१९४२
प्रचार कार्य : सन् १९६२ से
स्थायी पता : ग्रा. उबरा, पो. खजुरिया श्रीराम, जि. बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ९९१७९९२३५२/९७५९१०३३८७



नाम : मा. कृष्णलाल आर्य ३२
पिता का नाम : श्री बनवारी लाल
जन्म : १५-९-१९५३
प्रचार कार्य : सन् १९६९ से
स्थायी पता : ग्राम इस्लामनगर, डा.कलसौरा, जिला करनाल, (हरियाणा),
चलभाष : ०९४१६८२१०४६



नाम : केशवदेव शर्मा ३३
पिता का नाम : श्री राधेश्याम शर्मा
जन्म : २१-८-१९६६
प्रचार कार्य : सन् १९८१ से
स्थायी पता : आर्य समाजर, सुमेरपुर, जि. पाली, राजस्थान.
दूरभाष : ०२९३३-२५८१४९
चलभाष : ०९४१३४२५४३५



नाम : कैलाश 'कर्मठ' ३४
पिता का नाम : स्व. श्री सूरजभान
जन्म : ५-७-१९७६
प्रचार कार्य : सन् १९९२ से
स्थायी पता : आर्य समाज बड़ा बाजार, १ मुन्शी सदरुद्दीन लेन, कलकत्ता ७.
दूरभाष : ०३३-२२६९६२९९/२२६९९६२४९
चलभाष : ९८३१३४०९१४



नाम : श्री खजानसिंह ३५
पिता का नाम : श्री अमर सिंह
जन्म : सन् १९१४
प्रचार कार्य : सन् १९३८ से
स्थायी पता : गाव पारसौल, जि. गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७६११२१५४७

नाम : खेम सिंह आर्य ३६
पिता का नाम : स्व. श्री खुशीराम
जन्म : ३-३-१९३२
प्रचार कार्य : सन् १९७२ से
स्थायी पता : ग्रा. चिरवाडी, पो. कटेसरा जि. पलवल, हरियाणा.
चलभाष : ०९८१३६५७२२२

नाम : गजराज प्रेमी ३७
स्थायी पता : गडीना तहसील मवाना,
जिला मेरठ (उ.प्र.)

नाम : गिर्राज सिंह आर्य ३८
जन्म : सन् १९६०
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट ब्यारा, जिला-आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९७९९३६३९१६



नाम : धनश्याम प्रेमी ३९
पिता का नाम : पं. बाबुलालजी
जन्म : १०-३-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९७१ से
स्थायी पता : ग्राम-मुस्तफाबाद, पो. जान सठ,
जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) २५१३१४.
चलभाष : ०९९२७७२८७१०



नाम : घासीराम आर्य ४०
पिता का नाम : श्री साबन सिंह
जन्म : ५-४-१९४२
प्रचार कार्य : १५-७-१९५७ से
स्थायी पता : ग्राम-हंजरी, पो. केदारपुर मोहड़ी,
तह. धामपुर बिजनौर (उ.प्र.)
दूरभाष : २४६७६१
चलभाष : ९९१७६४८१११



नाम : चौ. चतर सिंह ४१
पिता का नाम : श्री सोहन लाल
जन्म : ४-४-१९४३
प्रचार कार्य : सन् १९८७ से
स्थायी पता : मु. पो. मानपुर, तह. हथीन,
जिला-पलवल (हरियाणा) १२११०६.
चलभाष : ०१२७५-६८७९७०/९८१२३८००२९



नाम : चन्द्रदेव शास्त्री ४२
पिता का नाम : श्री नन्दूलाल शर्मा
जन्म : २६-३-१९६९
प्रचार कार्य : सन् १९९६ से
स्थायी पता : रोहनियाँ, पो. मुड़िया नवी बक्स,
जि. बरेली (उत्तर प्रदेश)
चलभाष : ९४१०४६२७५६



नाम : पं. चन्द्रदेव शास्त्री ४३
पिता का नाम : श्री मंगतू राम शर्मा
जन्म : १-३-१९५०
प्रचार कार्य : सन् १९७३ से
स्थायी पता : म.नं. २३८ जवाहर कालोनी गुरुद्वारा रोड
एन.आई.टी.फरीदाबाद (हरि.) १२१००५
दूरभाष : ०१२९-२२३८५३१
चलभाष : ९९१०९७८७६९



नाम : चन्द्रभानु आर्य ४४
पिता का नाम : श्री हरज्ञान सिंह
जन्म : सन् १९३०
प्रचार कार्य : सन् १९५१ से
स्थायी पता : ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जींद - १२६१०२ (हरि.)
चलभाष : ९२५३३०८८४०



नाम : जगत् वर्मा ४५
पिता का नाम : श्री शिवपालजी
जन्म : ६-१२-१९६४
प्रचार कार्य : सन् १९८९ से
स्थायी पता : द्वारा प्रिन्स जनरल स्टोर्स, सेक्टर ३, तलवाड़ा, जिला-होशियारपुर, (पंजाब) १४४२१६.
चलभाष : ९८१५०३११३१/०१८८३-२३६८७४



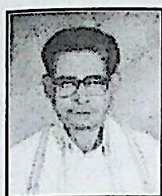
नाम : जबरसिंह खारी ४६
पिता का नाम : श्री भूलेराम
जन्म : १-७-१९५३
प्रचार कार्य : सन् १९८३ से
स्थायी पता : ग्राम चांदसमन्द वाया खतौली, जि. मुज़फ्फरनगर (उत्तरप्रदेश)
चलभाष : ०९७५९३८६१२३/९७५९७९८५९८



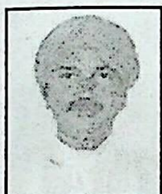
नाम : जितेन्द्र देव आर्य ४७
पिता का नाम : मिहि लाल आर्य
जन्म : ३-१-१९८०
प्रचार कार्य : सन् १९९८ से
स्थायी पता : न्यामतपुर, पो.कनकपुरी, तहसील बहेड़ी, जि. बरेली (उ.प्र.) २४३५०५.
दूरभाष : ०५८२२-२६२१५१
चलभाष : ९७१९२२८८०७



नाम : पं. जयप्रकाश शर्मा ४८
पिता का नाम : स्व. श्री टीकाराम शर्मा
जन्म : सन् १९४२
प्रचार कार्य : सन् १९६०से
स्थायी पता : मौ. मुडिया पिस्तौर केशवनगर बाजपुर, जि. उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : ०५९४९/२८३७३३
चलभाष : ९७५८६०८११४



नाम : ज्ञानप्रकाश शर्मा ४९
पिता का नाम : स्व. श्री ईश्वरीप्रसाद शर्मा
जन्म : ५-१-१९५०
प्रचार कार्य : सन् १९६८ से
स्थायी पता : ग्रा. सेरुआ, धर्मपुर, पो. लदावली, जि.मुरादाबाद (महानगर), उ.प्र. २४४ ५०२.
चलभाष : ०९४१०२८२३५५/३३२७६०७८२२



नाम : टीकमसिंह आर्य ५०
पिता का नाम : स्व. श्री तुलजी सिंह
जन्म : १४-४-१९५९
प्रचार कार्य : सन् १९९२ से
स्थायी पता : तीवड़ी जलालपुर रोड, बिजनौर (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७५४००२७/९५१०८४७०२९



नाम : ठाकुरप्रसाद मिश्र ५१
पिता का नाम : राघोप्रसाद मिश्र
जन्म : १२-१२-४६
प्रचार कार्य : सन् १९७८ से
स्थायी पता : ग्रा. पो. वमिपारी (फर्रखपुर), जि. वहराइच, (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : ०५२५५/०२६३४१६
चलभाष : ९४५४५४२३००

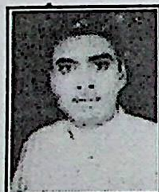


नाम : पं. ताराचन्दजी वैदिक तोप ५२
पिता का नाम : श्री पं. भेरुप्रसादजी
जन्म : सन् १९८०
प्रचार कार्य : सन् २००५ से
स्थायी पता : पं. ताराचन्द वैदिक भवन, रेवाड़ी रोड़, नारनौल १२३००१ (हरियाणा)

नाम : तेज वीर सिंह ५३
पिता का नाम : श्री उदय सिंह आर्य
जन्म : सन् १९७४
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : अर्जुन नगर, निकट अमित स्कूल, काबड़ी रोड़, पानीपत (हरियाणा).
चलभाष : ९३५४०००५२२



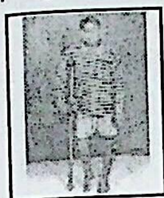
नाम : त्रियुगी नारायण आर्य ५४
पिता का नाम : स्व. श्री सुमेश्वर प्रसाद पाठक
जन्म : १-७-१९३८
प्रचार कार्य : सन् १९७१ से
स्थायी पता : मु. खरैया पोखरा, वशारतपुर, जि. गोरखपुर, उत्तर प्रदेश.
चलभाष : ९४५०५६७५५३



नाम : दयानन्द सत्यार्थी ५५
पिता का नाम : स्व. श्री तिलक प्रसाद आर्य
जन्म : १-१-१९६०
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : बठौना (टोला कल्याण गंजबंगराहा), पो. काँचा वाया विद्यावती नगर, जि. समस्तीपुर बिहार ८४८५०३.
चलभाष : ०९४३०४८९२८२



नाम : दिनेश दत्त आर्य ५६
पिता का नाम : स्व. श्री हरकेश दत्त आर्य
जन्म : १०-५-१९६२
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : ए-२/३७९, हर्ष विहार, शाहदरा दिल्ली ११००९३.
चलभाष : ०९३१२४२३१३५/०९८१८२९२९३५

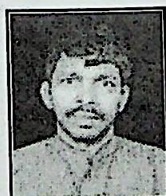


नाम : पं.देव शर्मा (विकलांग) ५७
पिता का नाम : जयप्रकाश शर्मा
जन्म : १०-६-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : मौ. मुड़िया पिस्तौर, केशव नगर बाजपुर, जिला उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : ०५९४९-२८३६३३
चलभाष : ९७५१०४९४८६



नाम : महाशय देवीसिंह आर्य ५८
पिता का नाम : श्री धनसिंह जी आर्य
जन्म : १९-४-१९५०
प्रचार कार्य : सन् १९७५ से
स्थायी पता : ग्राम-पो. अकवरपुर, ता.छाता, जिला-मथुरा (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५६६२२४१६८५
चलभाष : ९३५९२१०९५०

नाम : देवेन्द्र आर्य ५९
पिता का नाम : स्व. रोशनलाल आर्य
जन्म : सन् १९४१
प्रचार कार्य : सन् १९७० से
स्थायी पता : ऊंचा गांव नशीरपुर शादाबाद हाथरस (उ.प्र.)
चलभाष : ०५६६१-२४४१३८



नाम : श्री धनंजय शास्त्री ६०
पिता का नाम : श्री नेगीराम आर्य
जन्म : ५-७-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९८९ से
स्थायी पता : दयानन्द परिसर, आर्यनगर दुर्ग (छ.ग.)
दूरभाष : ०७८८-२३२२२२५
चलभाष : ०९९९३८४२८०२



नाम : धनीराम बेधडक ६१

पिता का नाम : श्री मुन्शीराम जी

जन्म : १०-५-१९४५

प्रचार कार्य : सन् १९८१ से

स्थायी पता : ग्राम-सीहरी, पो.पुन्हाना, जि.नूँहमेवात, हरियाणा.

चलभाष : ९९९१२१६०२२ / ९४१६२३६३८९



नाम : धर्मप्रकाश शास्त्री ६२

पिता का नाम : सत्यव्रत जी वानप्रस्थी

जन्म : ४-३-१९७२

प्रचार कार्य : सन् १९९२ से

स्थायी पता : डी.ए.बी. पब्लिक स्कूल, एन.आई.टी. कॅम्पस, आदित्यपुर, जमशेदपुर (झारखंड)

चलभाष : ९९३४१७८६६२



नाम : धूमसिंह शास्त्री ६३

पिता का नाम : श्री धीरेन्द्र सिंह

जन्म : १२-१०-१९६६

प्रचार कार्य : सन् १९९२ से

स्थायी पता : आर्य समाज मन्दिर विशारवा एन्कलेव, पी.यू. ब्लाक पीतमपुरा, दिल्ली ११००३९.

दूरभाष : ९८९११४२६७३

चलभाष : ९८९११४२६७३



नाम : नरदेव आर्य ६४

पिता का नाम : श्री सिरिया राम जी

जन्म : १५-५-१९४५

प्रचार कार्य : सन् १९६४ से

स्थायी पता : ग्रा.पो. बछामड़ी (नोंह), जि. भरतपुर, राजस्थान ३२१ ००१.

दूरभाष : ०५६४४-२३३१५४

चलभाष : ०९४६०९११७७७



नाम : नरेश दत्त आर्य ६५
पिता का नाम : स्व. श्री बलदेव सहाय
जन्म : ३१-१-१९५७
प्रचार कार्य : सन् १९७३ से
स्थायी पता : महर्षि दयानन्द चौक, बहादरपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) २४६ ७२१.
दूरभाष : ०१३४१-२४०७१२
चलभाष : ०९४११४२८३१२

नाम : पं. नरेश निर्मल ६६
पिता का नाम : पं. भजनलाल आर्य
जन्म : १२-२-१९६०
प्रचार कार्य : सन् १९८५ से
स्थायी पता : दयानन्द नगर (बड़ौत रोड), बुढाना जिला-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
चलभाष : ०९४११०३४१२६/०९४१०६५११४३



नाम : स्वामी नारदानन्द सरस्वती ६७
गुरु का नाम : स्वामी इन्द्रवेश सरस्वती
जन्म : सन् १९२४
प्रचार कार्य : सन् १९७७ से
स्थायी पता : ग्राम नगला किस्स, पोस्ट अलीगंज, जि. एटा (उ.प्र.) २०७ २४७.
चलभाष : ९४१५४३२३१७



नाम : पं. नारायणसिंह आर्य ६८
जन्म : ६-१-१९५०
प्रचार कार्य : सन् १९७९ से
स्थायी पता : ग्रा. पीथनवास डा. गढी, बोलनी, जि. रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ०९८६८६५६७३३



नाम : डा. निष्ठा विद्यालंकार ६९
पिता का नाम : श्री जयराम सिंह 'त्यागी'
जन्म : १०-०५-१९७६
प्रचार कार्य : अगस्त १९९६ से
स्थायी पता : म.न. २९९, म.द.वेद विद्यापीठ,
दूल-भूल, कानपुर शहर - २०९३०७
दूरभाष : ०५१२, २१५ ४५ २९
चलभाष : ०९७९३१८००२७, ९९५६०७४७८५
९९३६४३२७७०, ९९३६२८८८९९



नाम : निरञ्जन सिंह आर्यवीर ७०
पिता का नाम : श्री मेहरवानसिंह सिन्धु
जन्म : १-१-१९५३
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : बछलौता, बाबूगढ़, जिला-
गाजियाबाद (उ.प्र.) २४५ २०१.
दूरभाष : ०१२२-२९५१५५७

नाम : नेमप्रकाश आर्य ७१
पिता का नाम : स्वामी ब्रह्मानन्द
जन्म : १-११-१९५५
प्रचार कार्य : सन् १९८४ से
स्थायी पता : सी ८/२७, संजय गांधी पुरम,
फैजाबाद रोड, लखनौ (उ.प्र.) २२६०१६
दूरभाष : ०५२२-६४५१४६६
चलभाष : ९७९३६३४६७५

नाम : श्रीमती पुष्पा शास्त्री ७२
पति का नाम : श्री. सुरेन्द्र सिंह यादव
जन्म : ५-८-१९६९
प्रचार कार्य : सन् १९८४ से
स्थायी पता : ८५ माडल टाउन रेवाडी,
जि. रेवाडी, हरियाणा
दूरभाष : ०१२७४-२२५६७७
चलभाष : ०९४१६०६३६७७



नाम : प्रणवमिश्र आर्य ७३
पिता का नाम : लक्ष्मीनारायण
जन्म : १८-१०-१९६६
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : ग्राम व पो. कासमपुर, तहसील बेहट, जिला सहारनपुर, उ.प्र. २४७१२१.
चलभाष : ९७५८१४१०४८/९७५९७५४७९८



नाम : श्री प्रतापसिंह आर्य ७४
पिता का नाम : श्री फूलचन्द आर्य
जन्म : ३-३-१९७९
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : ग्राम व पो. कासमपुर, तहसील बेहट, जिला सहारनपुर, उ.प्र. २४७१२१.
चलभाष : ०९९१७१२२६८०



नाम : श्रीमती प्रभा शास्त्री ७५
पति का नाम : श्री. भानुप्रकाश शास्त्री
जन्म : सन् १९७३
प्रचार कार्य : ३-६-१९९३ से
स्थायी पता : निकट त्रिमूर्तिभवन, संजय नगर, इज्जत नगर, बरेली, उ.प्र. २४३१२२
चलभाष : ९४११९१७३०९/९४१२३७६५९२

नाम : श्री प्रभातकुमार आर्य ७६
पिता का नाम : दिलीपकुमार आर्य
जन्म : १-६-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९९१ से
स्थायी पता : आर्य समाज रुद्रपुर, जिला उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड
चलभाष : ९४१२९४६३११



नाम : फतेह सिंह आर्य ७७
पिता का नाम : स्व. श्री नन्दा सिंह
जन्म : सन् १९२३
प्रचार कार्य : सन् १९४२ से
स्थायी पता : ग्रा. पो. कौराली, जि. फरीदाबाद, हरियाणा १२१ १०१.
चलभाष : ९९९सन् १९०८९४१



नाम : डा. बदनसिंह आर्य ७८
पिता का नाम : श्री तेजसिंह आर्य
जन्म : १८-७-१९५७
प्रचार कार्य : १५-३-१९९२ से
स्थायी पता : ग्रा. व पो. गुनसारा, जि. भरतपुर, (राज.)
चलभाष : ९४५७४४३०२४



नाम : बेगराज आर्य ७९
पिता का नाम : श्री चौ. मक्खन सिंह
जन्म : सन् १९२६
प्रचार कार्य : सन् १९४५ से
स्थायी पता : ग्रा. भूडिया पो. बझेड़ा कला गाजियाबाद (उ.प्र.) २४५ १०१.
दूरभाष : ०१२२-२३४६०२७/९४१२२२५५९०



नाम : ब्रह्मानन्द आर्य ८०
पिता का नाम : स्व. श्री मंगलसिंह
जन्म : अप्रैल १९५१
प्रचार कार्य : सन् १९६२ से
स्थायी पता : गाँव-पो. बरला जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश २५१ ३०७.
दूरभाष : ९७१९३२३१०५



नाम : स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ८१
पिता का नाम : पं. मूलचन्द आर्य (तिवारी)
जन्म : १६-६-१९२९
प्रचार कार्य : सन् १९४८ से
स्थायी पता : आर्य समाज कुठिला, पो.आ. बेहटा गोकुल, जि.हरदोई (उ.प्र.) २४१ १२५.
दूरभाष : ०५८५३-२६७५०५

नाम : ब्रह्मपाल सिंह आर्य ८२
पिता का नाम : कालुराम आर्य
जन्म : सन् १९६५
प्रचार कार्य : सन् २००७ से
स्थायी पता : रामराज मोहल्ला आर्यनगर, पो.-बहसुमा, जिला-मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९९९७६२९८११/९८९७७९०८९२



नाम : पं. भानुप्रकाश शास्त्री ८३
पिता का नाम : श्यामलाल आर्य
जन्म : ३-२-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : निकट त्रिमूर्ति भवन, संजय नगर, पो.इज्जतनगर, जि.बरेली, .प्र.२४३१२२
चलभाष : ९४११९१७३०९/९४१२३७६५९२



नाम : भूपेन्द्र सिंह ८४
पिता का नाम : श्री ठा. मंगल सिंह आर्य
जन्म : ५-११-१९३८
प्रचार कार्य : सन् १९७५ से
स्थायी पता : महाराणा प्रतापनगर, जादौन कम्पाऊंड, धनीपुर, ब्लाक रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१३५९४९८२



नाम : पं. मंगल देव आर्य ८५
पिता का नाम : पं. चिरंजीलाल गौड
जन्म : २४-११-१९४७
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : मु.पो. जुरहरा जिला भरतपुर (राजस्थान)
दूरभाष : ९९८२३३८९४६



नाम : महीपाल सिंह सैनी ८६
पिता का नाम : श्री शान्ति प्रकाश
जन्म : २५-५-१९५७
प्रचार कार्य : सन् १९७४ से
स्थायी पता : ग्राम-मेहवड़ खुर्द (नागल),
डा. मेहवड़कला, ता.रुड़की,
जि. हरिद्वार उत्तराखण्ड़
चलभाष : ०१३३२-३१०२५३/२७२३२०



नाम : श्रीमती मनोरमा आर्या ८७
पति का नाम : स्व. श्री. महेन्द्रपाल शर्मा
जन्म : सन् १९४८
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : ग्राम पो पी नंगला, पो. बढौली
जि.अलीगढ़ (उ.प्र.) २०२२८६
चलभाष : ९४५७००६३७९/९४११२१०५१६



नाम : मामचन्द पथिक ८८
पिता का नाम : स्व. श्री सुरजा सिंह
जन्म : सन् १९२१
प्रचार कार्य : सन् १९५३ से
स्थायी पता : आर्य सदन इकबालपुर,
जिला-हरिद्वार, उत्तराखण्ड.
चलभाष : ९९६८२३३८६६



नाम : श्रीमती मिथिलेश शास्त्री ८९
पति का नाम : श्री तेजपालसिंह शास्त्री (प्रधानाचार्य)
जन्म : ०१-११-१९६७
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : जे. ३७०, शिवालिकनगर, बी. एच. ई. एल., रानीपुर, हरिद्वार (उत्तराखंड)
दूरभाष : ०१३३४-२३५१५७
चलभाष :०९४११३७३५३९/०९४१११२१६८३



नाम : पं. यशदेव 'हितैषी' ९०
पिता का नाम : श्री प्रेमशंकर आर्य
जन्म : २०-७-१९७०
प्रचार कार्य : सन् १९९१ से
स्थायी पता : ग्रा. जंगवाजपुर, पो. हरदासपुर, वाँया रामनगर तहसील, आँवला, जि.बरेली, उ.प्र. २४३३०३.
चलभाष : ०९७५८५१९३८५



नाम : साध्वी यशोदा ९१
पिता का नाम : श्री भगवानदास सक्सेना
जन्म : ३१-१२-१९७३
प्रचार कार्य : सन् १९९६ से
स्थायी पता : साध्वी यशोदा आर्या, ग्रा. पो. सरेली, जनपद बदायूँ, उ.प्र. २९३६४१
चलभाष : ९७१९९३९६९१



नाम : युगल किशोर ९२
पिता का नाम : श्री राम
जन्म : १५-१-१९५८
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : कुठिला पो. बेहटा गोकुल हरदोई (उ.प्र.)२४१ १२५.
दूरभाष : ०५८५३-२६७५१०
चलभाष : ९९३६९८९६२२



नाम : योगेश दत्त आर्य ९३
पिता का नाम : श्री विश्वम्भरदत्त शर्मा
जन्म : ६-११-१९५९
प्रचार कार्य : सन् १९८३ से
स्थायी पता : ग्राम-टीप, पत्रालय-खिरनी, जिला-बिजनौर, (उ.प्र.)
दूरभाष : ०१३४२-२८५०२८
चलभाष : ०९४१२११८२८८



नाम : रघुनाथ देव ९४
पिता का नाम : स्व. श्री मलखान सिंह
जन्म : १-७-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : लडसिया अलीगंज जि. एटा (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५७४०-२५८०२४
चलभाष : ९४१०८०४५६८



नाम : महाशय रणवीर सिंह बेधडक ९५
पिता का नाम : स्व. श्री लालसिंह
जन्म : २३-३-१९४०
प्रचार कार्य : सन् १९६० से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट भैसी, जिला-मुज्फ्फरनगर (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४११८१२१२०/९८३७७०२०६६/ ९३५९७७३९६२



नाम : श्री रमेशचन्द निश्चिन्त ९६
पिता का नाम : स्व. श्री साधुराम जी आर्य
जन्म : १८-३-१९३८
प्रचार कार्य : सन् १९६२ से
स्थायी पता : ग्राम उसण्ड, पोस्ट, खास, जिला सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
चलभाष : ९७१९७२०९३४



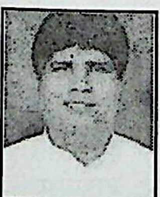
नाम : पं. रमेशचन्द स्नेही ९७
पिता का नाम : श्री हरिकिशन शर्मा
जन्म : १०-३-६४
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : ग्रा.-पो. खेडी मुबारिकपुर तह.लकसर, जि. हरिद्वार (उत्ताराखण्ड) २४७६६३.
दूरभाष : ९३५९५८९२७९
चलभाष : ९८३७९९९२१२



नाम : श्री रविन्द्र कुमार आर्य ९८
पिता का नाम : स्व. श्री मेघनाथ सिंह
जन्म : १३-०७-१९७८
प्रचार कार्य : सन् २०००७ से
स्थायी पता : ग्राम अध्याना, पो. खास, नकुड़, जिला सहारनपुर, उ.प्र. २४७३४२.
चलभाष : ९४१२६४८३०५/९४५६४९३१७३



नाम : पं. राकेश शास्त्री ९९
पिता का नाम : श्री बहादुरसिंह
जन्म : ४-२-१९८१
प्रचार कार्य : सन् २००३ से
स्थायी पता : ग्रा. रानीपुर, पो.अघार, जि.मैनपुरी, उ.प्र.
चलभाष : ९८९९०४४०१०/९८३७७५२७९४



नाम : पं. राकेश कुमार १००
पिता का नाम : पं. मनिषी देवजी शास्त्री
जन्म : १७-११-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९८७ से
स्थायी पता : ३४३६ सेक्टर ७०, मोहाली (पंजाब)
दूरभाष : ०१७२-२२१७४३३
चलभाष : ०९८१५२१४६११



नाम : राकेश आर्य १०१
पिता का नाम : स्व. श्री शिवराजसिंह
जन्म : १-२-१९४२
प्रचार कार्य : सन् १९७० से
स्थायी पता : आर्य सदन, पंजाब बैंक के सामने, चाँदपुर (बिजनौर) उ.प्र. २४६ ७२५.
दूरभाष : ०९४१००७१८२८
चलभाष : ०९८३७६०६७३१



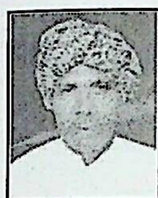
नाम : राजवीर सिंह आर्य १०२
पिता का नाम : श्री इतवारीलाल आर्य
जन्म : सन् १९५९
प्रचार कार्य : सन् १९८१ से
स्थायी पता : ग्राम-महतौली, पो. केन्दुकी, वाया देवबन्द-जनपद-(सहारनपुर)
चलभाष : ०९९२७५२७४१०/०९७५९१६०५९४



नाम : पं. राजवीर शास्त्री १०३
पिता का नाम : स्व. श्री खमानी राम
जन्म : सन् १९-१२-१९७०
प्रचार कार्य : सन् १९८५ से
स्थायी पता : गाँव बझेड़ा, पो. दीवाहमीदपुर, जि.अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९३५०२१९७४५
चलभाष : ९८६८४७०३०६

नाम : राजेश १०४
पिता का नाम : स्व. अमर प्रेमी
जन्म : १०-११-१९५८
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : ३१८ शहीद भगतसिंह नगर, बाईपास मार्ग,जालन्धर (पंजाब)१४४ ००८.
दूरभाष : ०१८१-२४९१६१३
चलभाष : ९४१७३८१०८३/९२१६५५३७७०

नाम : राम अवतार आर्य १०५
जन्म : सन् १९३०
प्रचार कार्य : सन् १९७० से
स्थायी पता : कोछोड, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)
चलभाष : ०५७१-२७६२७१४



नाम : रामगोपाल आर्य १०६
पिता का नाम : श्री हरी सिंह आर्य
जन्म : १-५-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९९८ से
स्थायी पता : ग्रा. गढ़ी-मनसुख, पो. माँट, जिला मथुरा, (उ. प्र.)
चलभाष : ९८३७०२४२८८



नाम : रामचन्द्र शर्मा १०७
पिता का नाम : स्व. श्री पूरनप्रसाद शर्मा
जन्म : ७ जून १९४७
प्रचार कार्य : सन् १९६१ से
स्थायी पता : छांछरी मोड, पो. उलेढ़ा, जि. बिजनौर, उत्तर प्रदेश, २४६ ७०१.
चलभाष : ०९४१२५६८६०१

नाम : राम निवास आर्य १०८
जन्म : १३ अप्रैल १९६५
प्रचार कार्य : सन् १९८३ से
स्थायी पता : न्यू भाटिया कालोनी, काबड़ीरोड़, पानीपत, हरियाणा
चलभाष : ९४१६४३७३१७



नाम : पं. रामरख आर्य १०९
पिता का नाम : श्री सन्तुराम
जन्म : सन् १९६०
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : गांव गुजरानी, डा. खास,
जिला भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३१०१९३७

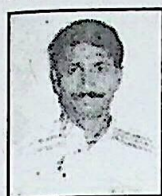


नाम : रामसेवक आर्य (प्रज्ञाचक्षु) ११०
पिता का नाम : शिवपाल आर्य
जन्म : सन् १९५५
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : ग्राम-मोहर, पोस्ट-अतरइया,
जिला-हमीरपुर (उ.प्र.)

नाम : स्वामी रुद्रवेश १११
गुरु का नाम : स्वामी भीष्मजी
जन्म : सन् १९४५
प्रचार कार्य : सन् १९६२ से
स्थायी पता : वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर,
हरिद्वार (उत्तरा.)



नाम : रुवेल सिंह आर्य ११२
पिता का नाम : श्री सही राम
जन्म : १२-२-१९४३
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : रानीपुर कला, पो.मुगलवाली, व्हाया
विलासपुर, जि.यमुनानगर (हरियाणा)
दूरभाष : ९९९२४१५६१०
१७३५-२५९३१७ (घर)



नाम : श्री लाखनसिंह आर्य ११३
पिता का नाम : श्री गुनधारीलाल जी
जन्म : १-१-१९५६
प्रचार कार्य : १-६-१९९० से
स्थायी पता : ग्रा.माल, पो.सेरसा, जिला मथुरा (उ.प्र.)
चलभाष : ०९८३७५२२३९३



नाम : विक्रमदेव आर्य ११४
पिता का नाम : सोमदेव वानप्रस्थी
जन्म : मई १९४३
प्रचार कार्य : सन् १९७५ से
स्थायी पता : सरकथल माघो-पत्रालय मौजमपुर, सूरज, जिला-बिजनौर (उ.प्र.) २४६ ७६१.
दूरभाष : ९२१९९७६२९१/९४११२२६४१२



नाम : श्रीमती विजयावती आर्य ११५
पति का नाम : ब्रह्मदेव ठाकुर
जन्म : १३-४-१९४६
प्रचार कार्य : सन् १९८०
स्थायी पता : गुमटी २, मंगल बाजार मुंगेर, बिहार ८११२०१.
दूरभाष : ०६३४४-२२१६२७
चलभाष : ९४७०८८९३३०



नाम : डा. विधानचन्द्र आर्य १४५
पिता का नाम : श्री कल्पनाथ
जन्म : ३१-१२-१९५७
प्रचार कार्य : २१-५-१९९० से
स्थायी पता : ग्रा. शाहपुर औराव, पो. रामनगर, जि.अम्बेडकर नगर, उ.प्र. २२४ १८१.
चलभाष : ९९८४०२६२४५

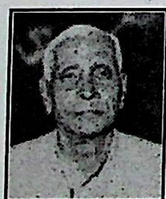


नाम : पं. विमल देव अग्निहोत्री १४६
पिता का नाम : श्री चन्द्रपाल सिंह आर्य
जन्म : २५-०५-१९७२
प्रचार कार्य : सन् १९९२ से
स्थायी पता : ग्रा.बौण्डा, पो. मुड़िया, नबीबक्श, ता.बहेड़ी, जिला-बरेली (उ.प्र.)



नाम : वीरदेव आर्य १४७
पिता का नाम : श्री सालिक राम
जन्म : २९-७-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९७४ से
स्थायी पता : ग्राम नगरिया खाता पो. मिलक जिला-रामपुर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७१९२७५११८

नाम : श्री वीरपालसिंह १४८
पिता का नाम : श्री लालसिंह
स्थायी पता : मकान नं. ११९६ सेक्टर ३, शास्त्री नगर, मेरठ (उ.प्र.)



नाम : वृजपाल शर्मा कर्मठ १४९
पिता का नाम : पं. किशनलाल शर्मा
जन्म : १५-१०-१९३४
प्रचार कार्य : सन् १९५९ से
स्थायी पता : ग्रा. कम्हेड़ा, पो. तुगलकपुर, जिला-मुजफ्फरनगर, उ.प्र. २५१३१०.
दूरभाष : ०१३१-२४७०००७
चलभाष : ०९३१२५२४५४५



नाम : वृजपाल शर्मा १५०
पिता का नाम : श्रीराम शर्मा
जन्म : सन् १९६२
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : ग्रा. छांछरी, पो. उलेढा, जनपद बिजनौर, उत्तर प्रदेश २४६७०१.
दूरभाष : ९७६१९७५८३०



नाम : पं. वेदपाल आर्य १५१
पिता का नाम : स्व. श्री गंगासिंह जी
जन्म : १-७-१९३०
प्रचार कार्य : सन् १९५० से
स्थायी पता : खुखुलगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
चलभाष : ०९७९२४११४५२



नाम : वेदपाल आर्य १५२
पिता का नाम : श्री महावीर सिंह
जन्म : ११-०५-१९७०
प्रचार कार्य : सन् १९९२ से
स्थायी पता : ग्रा.पो. सिनौली, जिला बागपत, उ.प्र. २५०६११.
चलभाष : ०९७५८०५६८२७



नाम : वेदप्रकाश आर्य १५३
पिता का नाम : श्री नेतराम आर्य
जन्म : ३०-७-१९४५
प्रचार कार्य : सन् १९९८ से
स्थायी पता : ग्राम-बाजूहेड़ी, पो. महेवड़ (कला), जि. हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत.
चलभाष : ९७५९१७८१३६



नाम : वेद व्यास १५४
पिता का नाम : श्री रामानुग्रजी
जन्म : १२-८-१९५६
प्रचार कार्य : सन् १९७६ से
स्थायी पता : आर्य समाज पंजाबी बाग, एक्सटेंशन १३१२२, नई दिल्ली २४.
दूरभाष : ०११-४२४६४५५
चलभाष : ०९८७१५९८३८२



नाम : श्रीमती शकुन्तला देवी आर्या १५५
पति का नाम : अशोक कुमार शर्मा
जन्म : सन् १९५६
प्रचार कार्य : सन् १९८३ से
स्थायी पता : म.न. ४५४ गली, पुराना हस्पताल, नजफ गढ़, नई दिल्ली - ४३.
दूरभाष : ९२५०८८५१४५



नाम : आचार्य शंकर मित्र वेदालंकार १५६
पिता का नाम : स्व. श्री याद राम सिंह
जन्म : सन् १९७३
प्रचार कार्य : सन् १९९३ से
स्थायी पता : बंगला मोती हरनामपुर पो. किस रौली, तहसील कासगंज जिला एटा. (उ.प्र.)
चलभाष : ९४५४५४२३००



नाम : पं.शिवपाल आर्य १५७
पिता का नाम : स्व. श्री मलिखान सिंह तोमर
जन्म : ७-१२-६७
प्रचार कार्य : सन् १९८४ से
स्थायी पता : ग्राम. लड़सिया पो. अलीगंज,जि.एटा, उत्तर प्रदेश २०७२४७.
दूरभाष : ०५७४०-२५८०२४
चलभाष : ९४११२३५७२३



नाम : स्वामी शिवानन्द १८५
गुरु का नाम : स्वामी नारदानन्दजी
जन्म : १-१-१९६२
प्रचार कार्य : सन् १९८३ से
स्थायी पता : ग्राम. परतापुर, पोस्ट कलान, जि. शाहजहांपुर (उ.प.)
चलभाष : ९९१७३८१९२३/९१९३३७८५५

नाम : शोभा राम प्रेमी १८६
पिता का नाम : श्री पं. ज्ञानचन्दजी
जन्म : सन् १९१५
प्रचार कार्य : सन् १९३८ से
स्थायी पता : आरोग्य आश्रम पंचशील गली नं. १, गढ़रोड, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ०१२१-२७६५३४७



नाम : श्री श्यामवीर राघव १८७
पिता का नाम : स्व. श्री मूलचन्द राघव
जन्म : १२-१२-१९६०
प्रचार कार्य : सन् १९८६ से
स्थायी पता : ई-३/६०४, सेक्टर १८, रोहिणी, दिल्ली ८५.
दूरभाष : ९८१८११८२१८
चलभाष : ९८६८३६४५०३



नाम : श्रीपाल आर्य १८८
पिता का नाम : भगवान सिंह
जन्म : १९-१-१९३७
प्रचार कार्य : सन् १९६० से
स्थायी पता : आर्य भवन-खेड़ा हटाना जि.बागपत(उ.प्र.)
दूरभाष : ०१२३४/३१४१४९



नाम : श्री सतीश सत्यम् शास्त्री १८९
पिता का नाम : श्री रामनिवास शास्त्री
जन्म : २-५-१९८४
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : ग्राम मोनीपुरा, पो. रामघाट,
जि. बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१६६०५७९१/९९६८१८५४२५



नाम : सतीश सुमन आर्य १९०
पिता का नाम : श्री महा. सुखपाल आर्य
जन्म : २-१-१९६२
प्रचार कार्य : सन् १९८५ से
स्थायी पता : ग्रा. अजमतगढ़, पोस्ट मूसापुर,
जिला-मुजफ्फर नगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : ९८९७३०२३५२



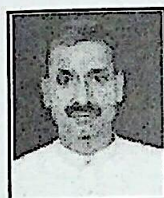
नाम : संतकुमार आर्य १९१
पिता का नाम : भरत आर्य
जन्म : सन् १९२०
प्रचार कार्य : सन् १९६५ से
स्थायी पता : ग्राम-सुन्दरी रोड, पोस्ट-झंझा,
जिला-जमुई (बिहार) ८११३०८.
चलभाष : ०९११९४८०८१५/९०९७३६८७८८
९९३९६५९११४



नाम : श्रीमती सन्तोष बाला आर्या १९२
पति का नाम : श्री मंगल सिंह
जन्म : ०२-०८-१९५१
प्रचार कार्य : सन् १९९२ से
स्थायी पता : म.नं. १६४/११ मोहल्ला, कृष्णपुरा
राणा गली नजदीक आर्यसमाज मन्दिर,
गन्नौर जि.सोनीपत-हरियाणा १३११०१.
दूरभाष : ०१३०-२४६२७५५/९८१३०२८८७५



नाम	: सत्यदेव 'स्नातक' 'आर्यरत्न'	१९३
पिता का नाम	: श्री महाशय श्रीरामजी आर्य शास्त्री	
जन्म	: फरवरी १९२९	
प्रचार कार्य	: सन् १९४४ से	
स्थायी पता	: ४६१/५, जागृति विहार, मेरठ २५०००४.	
चलभाष	: ९४५६२२९१४९	



नाम	: सत्यदेव शास्त्री	१९४
पिता का नाम	: स्व. जानकीप्रसाद शर्मा	
जन्म	: १५-७-१९६८	
प्रचार कार्य	: सन् १९९५ से	
स्थायी पता	: सत्यदेव शास्त्री, देशवीर शिशु मन्दिर, फर्रखपुर, तह.फरीदपुर, जिला-बरेली, (उ.प्र.) २४३५०३	
चलभाष	: ९८३७९६०७९५/९८९७१०१९२८	



नाम	: सत्यपाल पथिक	१९५
पिता का नाम	: श्री लालचन्द	
जन्म	: १३-३-१९३८	
प्रचार कार्य	: सन् १९६० से	
स्थायी पता	: ७० ए, गोकुलनगर, मजीठा रोड़, अमृतसर, १४३ ००१ (पंजाब)	
दूरभाष	: ०१८३-२४२६७२९/९८१५२६०६०५	



नाम	: सत्यपाल मधुर	१९६
पिता का नाम	: स्व. श्री लाल सिंहजी	
जन्म	: ३१-८-१९४२	
प्रचार कार्य	: सन् १९६४ से	
स्थायी पता	: बी-११, कुँवरसिंह नगर, नॉगलोई, दिल्ली ४१.	
दूरभाष	: २५२२३७२९	
चलभाष	: ९८९१३५१३७५	



नाम : सत्यपाल सरल १९७
पिता का नाम : श्री सीताराम जी आर्य
जन्म : २-५-१९४८
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : २४६, नयी बस्ती पार्क रोड,
देहरादून (उत्तराखण्ड) २४८ ००१.
दूरभाष : ०१३५-२६२९३११
चलभाष : ९४११३९४५८८/०९९९७१६९५००



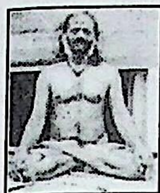
नाम : सत्यप्रकाश आर्य १९८
पिता का नाम : श्री शिवधर आर्य
जन्म : १३-१-१९५३
प्रचार कार्य : २२-६-१९७८ से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट, ब्यापुर, वाया-दानापुर कैन्ट
पटना (बिहार) ८०१ ५०३.
दूरभाष : ०६११५-६४५५१४
चलभाष : ९३०४१६४३७०



नाम : पं. सुरेश शास्त्री १९९
पिता का नाम : पं. कृष्णकान्त पाण्डेय
जन्म : ९-९-१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९८५ से
स्थायी पता : आर्य समाज से.१९,
म.नं.१०७३/१९,फरीदाबाद (हरीयाणा)
दूरभाष :०१२९-२२२३२२८/९८१८१२९५९५
चलभाष : ९९११४१२०३१/ ९३१३३५५०६०



नाम : सत्यवीर आर्य २००
पिता का नाम : श्री शहामलसिंह
जन्म : १०-०९-१९६२
प्रचार कार्य : सन् १९९७ से
स्थायी पता : सौजनारानी डा.गजरौला, वाया-
ऊँचागाँव,बुलन्दशहर उ.प्र. २०२ ३९८.
चलभाष : ९७५८७३४११३

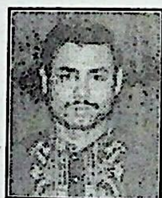


२०१

नाम : स्वामी सर्वानन्दजी
गुरु का नाम : होलस मस्करी
जन्म : सन् १९१४
प्रचार कार्य : सन् १९३५ से
स्थायी पता : ग्राम-खेड़ा खद्दान, व्हाया-पिपलिया मण्डी, जिला-मन्दसौर (उ.प्र.)
चलभाष : ०९८९३८४५२०७

२०२

नाम : सहदेव आर्य
पिता का नाम : जाहरसिंह आर्य
जन्म : सन् १९८७
प्रचार कार्य : सन् २००५ से
स्थायी पता : ग्राम-सुक्ती छेडा, पोस्ट-जारमई, जिला- एटा (उ.प्र.)
चलभाष : ९७२०४१९३१८/९९५८२७५७३०



२०३

नाम : सहदेव शास्त्री
पिता का नाम : श्री मणिन्द्र नाथ
जन्म : २३-३-१९७३
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : ई-३३,दयालपुर, ३३ फुटा रोड,ग.नं.९, सम्पर्क आर्य समाज नयाबांस,दिल्ली ६.
दूरभाष : ०११-२३९५१२१७
चलभाष : ९८११२५४९०३



२०४

नाम : सहदेव बेधड़क
पिता का नाम : श्री सुखवीर सिंह
जन्म : १-१-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९७० से
स्थायी पता : ग्रा. पो. शिकोहपुर, जि.बागपत उ.प्र.
दूरभाष : ०१२१-२२३८८१९
चलभाष : ९८३७५७७४२३



नाम : सुखपाल विश्वकर्मा २०५
पिता का नाम : श्री धनीराम विश्वकर्मा
जन्म : २-१-१९५९
प्रचार कार्य : सन् १९८८ से
स्थायी पता : ग्राम कम्हेडा, डा. गंगोह, त. नकुड़ जिला-मुजफ्फरनगर,(उ.प्र.) २४७ ३४१
दूरभाष : ०१३३१-२३४२३३
चलभाष : ०९७६१४७६८६६



नाम : कुँवर सुखपाल आर्य २०६
पिता का नाम : श्री शंकरलाल आर्य
जन्म : १-१-१९३०
प्रचार कार्य : सन् १९५२ से
स्थायी पता : २८८ रामपरी, रुड़की रोड, शहर मुजफ्फर नगर, उ.प्र. २५१ ००१.
चलभाष : ९८९७५८४२६९



नाम : सुखदेव शास्त्री २०७
पिता का नाम : स्व. श्री सुरजीत सिंह राणा
जन्म : २६-१२-१९६४
प्रचार कार्य : सन् १९९४ से
स्थायी पता : ग्राम-ध्रुवपुर, पो. पदमपुर सुखरौ कोटद्वार, जि.पौडी गढवाल उत्तराखण्ड २४६१४९.
चलभाष : ९८३७४३५०४२



नाम : श्रीमती सुदेश आर्या २०८
पति का नाम : आचार्य भगवान देव वेदालंकार
जन्म : ०२-०८-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९८८ से
स्थायी पता : ९४ ए, विकासनगर, फेस ३, उत्तम नगर, नई दिल्ली ५९.
दूरभाष : २५३७४६२७ / ९२५०९०६२०१
चलभाष : ९८१०४४८२५२/९२१२७५३७५६



नाम : सुभाषचन्द्र आर्य २०९
पिता का नाम : श्री सुलतानसिहं आर्य
जन्म : १५-८-१९६६
प्रचार कार्य : सन् १९९८ से
स्थायी पता : ग्रा.पो. आहुलाना, तह. गोहाना, जिला-सोनीपत (हरियाणा) १३१३०८.
चलभाष : ९४१६८११३१३/९८१३२६७१८०



नाम : श्रीमती सुमन आर्या २१०
पति का नाम : पं. अनिलकुमार आर्य
जन्म : १५-०१-१९६८
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : सिरहा सिरोपट्टी, पो. इल्मासनगर, थाना-खानपुर, जि.समस्तीपुर (बिहार)
चलभाष : ०९४३००७७५१८



नाम : सुरेन्द्र सिंह आर्य २११
पिता का नाम : श्री फूल सिंह आर्य
जन्म : २८-१२-१९५४
प्रचार कार्य : सन् १९९८ से
स्थायी पता : बाबूपुर तहसील देवबन्द, जि. सहारनपुर (उ.प्र.) २४७ ५५४.
चलभाष : ९०१२६५६६९८



नाम : सुरेन्द्र पाल आर्य २१२
जन्म : सन् १९४४
प्रचार कार्य : सन् १९६८ से
स्थायी पता : ४९०, आहुजा नगर, नारा रोड, जरी पटका नागपुर (महा.) ४४००१४
दूरभाष : ०७१२-२६३३४३६
चलभाष : ९९७००८००७४

नाम : सूरज गुलाटी २१३
पिता का नाम : श्री नारायण सिदास
जन्म : ५-४-१९४६
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : डी-१/७०, सै. ११, रोहिणी, दिल्ली ८६.
चलभाष : ०११-४२९५८०६८/९८१८३९७८२४



नाम : स्वामी सुरेन्द्रानन्द २१४
गुरु का नाम : स्वामी मुनीश्वरानन्दजी
जन्म : १-६-१९५२
प्रचार कार्य : सन् १९७० से
स्थायी पता : गुप्ता डेन्टिस्ट गली नं. ५, मेन मार्केट भजनपुरा, शहादरा दिल्ली.
चलभाष : ९७१९३९०२०९/९४११०४०४३६



नाम : सेवकराम आर्य २१५
पिता का नाम : अंजोरसिंह
जन्म : ३-४-१९४६
प्रचार कार्य : सन् १९७४ से
स्थायी पता : वार्ड ५५, पो. मोहननगर, बघेरा, जि. दुर्ग (छ.ग.)
दूरभाष : ०७८८-२३२२२२५
चलभाष : ९७१९३९०२०९/९४११०४०४३६

नाम : सोमदेव शर्मा २१६
पिता का नाम : खुशीराम शर्मा
स्थायी पता : गांव-पोस्ट-बनैल, जिला-बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश
चलभाष : ९४१०४०३६५७



२१७

नाम : हरदेव शास्त्री
पिता का नाम : स्व. श्री हरनरायण लाल आर्य
जन्म : १६-८-१९६४
प्रचार कार्य : सन् १९८७ से
स्थायी पता : ग्राम पृथ्वीपुर नवदिपा, पो. मुडिया भीकमपुर वाया सेंथल (रे.स्टे.) जि.बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ०९७२०४०१३८८

२१८

नाम : हरिश्चन्द्र आर्य
स्थायी पता : दयानन्द मठ, घन्डरा, हिमाचल प्रदेश
चलभाष : ९८०५१९३९३३

नाम : हीरालाल आर्य
जन्म : सन् १९४५
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : बेरछा, ज़ि. शाजापुर (म.प्र.) ४६५११०.
चलभाष : ०७३६३-२३५३८३



नाम : हुकमचन्द आर्य
पिता का नाम : स्व. श्री फकीरचन्द आर्य
जन्म : ३-५-१९४७
प्रचार कार्य : सन् १९६६ से
स्थायी पता : ग्रा. लेहड़,पो. घेड, तह. देहरा, गोपीपुर, जि.कांगड़ा, (हिमाचल प्रदेश) १७७१२९
दूरभाष : ०१९७०-२०६०१२
चलभाष : ९८१७०४०६४५

आर्य भजन गायक/गायिका

१



नाम : कु. अञ्जली आर्या
पिता का नाम : श्री धनीराम आर्य
जन्म : १०-४-१९८८
प्रचार कार्य : सन् २००६ से
स्थायी पता : निकट रेलवे कालौनी फुरलक रोड, प्रकाशनगर, नई कॉलनी, कस्बा-घरौंडा, जि. करनाल, हरियाणा.
चलभाष : ०९७२८४०७०९१/९७१९५६६९४६

२



नाम : कु. अर्चना प्रिय आर्या
पिता का नाम : श्री सत्यप्रिय आर्य
जन्म : ३१-१-१९८६
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : गाँव-ऊँचागाँव, पो.नसीरपुर, तहसील सादाबाद, जि. मथुरा/हाथरस २८१३०८.
दूरभाष : ०५६६१-२४४०४२
चलभाष : ९७१९६०१०८८/०९७१९९१०५५७.

३

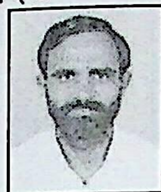


नाम : श्रीमती अयोध्या आर्या
पिता का नाम : श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार
जन्म : सन १९५३
प्रचार कार्य : सन् १९७४ से
स्थायी पता : मु.पो. पन्थ बरखेड़ा, व्हाया-पिपलिया मण्डी, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)

४



नाम : कुमारी आकाँक्षा
पिता का नाम : श्री रविन्द्र बाबू शर्मा (शिक्षक)
जन्म : १०-८-१९९३
प्रचार कार्य : सन् २००६ से
स्थायी पता : ग्रा. पो. सकरावा, जि. कन्नौज २०९७४७.
दूरभाष : ०५६९१-२६६५६
चलभाष : ९९१८३५२५६४



नाम : आचार्य ओमव्रत आर्य ५
पिता का नाम : श्री हरस्वरूप सिंह आर्य
जन्म : १५-९-१९७९
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : ग्राम-पो. असावरी, बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश.
दूरभाष : ०९७५८९६७९५७
चलभाष : ०९४११६१४१३३



नाम : श्री कंचन आर्य ६
पिता का नाम : स्व. श्री बाबुराम
जन्म : २९-११-१९६०
प्रचार कार्य : सन् १९९६ से
स्थायी पता : गायत्री सत्संग सभा, २०८-बी, प.बिहार, एक्सटेंशन, नई दिल्ली ६३.
दूरभाष : २५२१७०५८
चलभाष : ०९८६८७१७०३८



नाम : कु. कविता चौधरी ७
पिता का नाम : लक्ष्मण सिंह
जन्म : १५-७-१९७९
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : २३ वीं जनकपुरी महोली रोड, मथुरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१०६१९५४७



नाम : श्रीमती कविता आर्या ८
पति का नाम : कुलदीप आर्य
जन्म : ५-९-१९८०
प्रचार कार्य : सन् २००७ से
स्थायी पता : ग्राम छाँछरी, पो. उलेटा, जि. बिजनौर उत्तर प्रदेश २४६ ७०१.
चलभाष : ०९४११२९९४६७

नाम : श्री कुलदीप आर्य ९
पिता का नाम : श्री श्याम सिंह
जन्म : २५-२-१९८६
प्रचार कार्य : सन् २००५ से
स्थायी पता : ग्रा.-पो. उलेढ़ा, जि. बिजनौर, उत्तर प्रदेश २४६७०१.
चलभाष : ०९४१२३४६११७



नाम : श्री तृषपाल आर्य १०
पिता का नाम : श्री महावीर सिंह
जन्म : ०५-११-१९८२
प्रचार कार्य : सन् २००८ से
स्थायी पता : ग्रा.-पो. सिनौली, जि. बागपत, उ.प्र. २५०६११.
दूरभाष : ०१२३४-२३७३२३
चलभाष : ०९९१७४८५९३२



नाम : कु. धर्मरक्षिता आर्या ११
पिता का नाम : श्री उमाशंकर आर्य
जन्म : १६-१-१९९०
प्रचार कार्य : सन् २००४ से
स्थायी पता : आर्य सदन, पुरानी बाजार, भागीरथी पथ, तेघड़ा बेगूसराय, बिहार ८५११३३.
चलभाष : ९९३४४४८२५८/९९०५४१६८९९



नाम : श्री धीरेन्द्रदत्त आर्य १२
पिता का नाम : श्री नरेशदत्त आर्य
जन्म : २९ अगस्त १९८५
प्रचार कार्य : सन् २००३ से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट बहादरपूर, जिला-बिजनोर (उ.प्र.)
दूरभाष : ०१३४१-२४०७१२
चलभाष : ०९४११४२८३१२



नाम : सुश्री नैनश्री प्रज्ञा १३
पिता का नाम : श्री नरसिंह सिंह
जन्म : ०५-०५-१९८६
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : जी १/१/, फेस-१, बुद्ध विहार, दिल्ली ८६.
दूरभाष : ०११-२०३१८०८२
चलभाष : ९८७१२८८४४४



नाम : श्री प्रभाकर गुप्त १४
पिता का नाम : पन्नालाल गुप्त
जन्म : २१-१२-१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९९० से
स्थायी पता : बी २९/००१ सर्राफ चौधरी नगर, ठाकुर कम्पले बस, कान्दीवली (पूर्व),
दूरभाष : ०२२-२८५४३५८४
चलभाष : ०९८२११२६३२८२



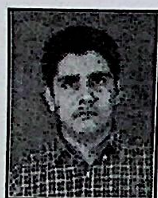
नाम : श्री बाबूराम आर्य १५
पिता का नाम : श्री बुधपाल आर्य
जन्म : ५-६-१९५८
प्रचार कार्य : सन् १९९७ से
स्थायी पता : ग्रा. पो. सरेली ... नि. बदापू (उ.प्र.)
चलभाष : ९७१९३९९७७९



नाम : पं. बालकिशन आर्य १६
पिता का नाम : पं. रामशरण आर्य
जन्म : सन् १९५८
प्रचार कार्य : सन् २००१ से
स्थायी पता : आर्य प्रतिनिधी सभा, १५ हनुमान रोड़, दिल्ली
दूरभाष : ०११-२३३६०१५०
चलभाष : ९८१०७७८००२



नाम : श्री भूपेन्द्रसिंह आर्य १७
पिता का नाम : टीकमसिंह आर्य
जन्म : १-१-१९८३
प्रचार कार्य : सन् २००२ से
स्थायी पता : तीबड़ी जलालपुर रोड बिजनौर (खास)
दूरभाष : ९९२७५४००२७
चलभाष : ९४१०८४६०२९



नाम : योगेश कुमार आर्य १८
पिता का नाम : सन्दीप आर्य
जन्म : २८-१-१९९१
प्रचार कार्य : सन् २००० से
स्थायी पता : फरहीन सोसायटी, बी-१,
वाकोला पाइप लाइन, सान्ताक्रुज(पूर्व),
मुम्बई - ४०० ०५५.



नाम : श्री राजेश कुमार आर्य १९
पिता का नाम : श्री देवसिंह आर्य
जन्म : २७-८-१९७६
प्रचार कार्य : सन् २००६ से
स्थायी पता : गाँव-पोस्ट - शेखपूर-वाया-दानपुर,
जिला बुलन्द शहर.
चलभाष : ९८७३३५९७७३

नाम : कु. वन्दना प्रिय आर्य २०
पिता का नाम : श्री सत्यप्रिय आर्य
जन्म : १०-११-१९९०
प्रचार कार्य : सन् २००५ से
स्थायी पता : ऊँचागाँव, पो. नसीरपुर, तहसील सादाबाद,
जि. मथुरा/हाथरस २८१३०८.
दूरभाष : ०५६६१-२४४०४२
चलभाष : ९७१९६०१०८८/९७१९९१०५५७

नाम : श्री विजयानन्द आर्य २१
पिता का नाम : श्री चन्द्रसेन
जन्म : २८-३-१९५७
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : बि. नं. ८०, रेल्वे रोड, फिरोजपुर केन्ट, पंजाब १५२००१.
दूरभाष : ०१६३-२२४७५४७

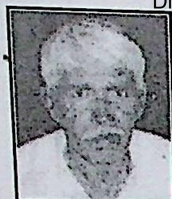


नाम : श्री वीरेन्द्र मिश्रा २२
पिता का नाम : स्व. श्री रामकल्प मिश्रा
जन्म : ४ दिसम्बर १९६६
प्रचार कार्य : सन् १९९४ से
स्थायी पता : ३०३, उत्तरा, गगन विहार कॉम्प्लेक्स, अचोले रोड, नालासोपारा (पू.), मुम्बई.
चलभाष : ९२२६३७६१५६/९२२४१९५२६६२



नाम : शान्तिदेवी आर्या २३
पिता का नाम : स्व. हीरालाल आर्य मुसाफिर
जन्म : सन् १९५०
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : मु.पो. पन्थ बरखेड़ा, व्हाया-पिपलिया मण्डी, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९३००३८२३१८

नाम : शान्तिदेवी आर्या २४
पति का नाम : श्री हीरालाल आर्य
जन्म : सन् १९४९
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : मु.पो. बेरछा, जिला-शाजापुर (म.प्र.)



नाम : श्री सत्यपाल आर्य २५
पिता का नाम : श्री राम आर्य
जन्म : १५-४-१९६६
प्रचार कार्य : सन् १९८६ से
स्थायी पता : मुरादपुर निजामपुर (गाजियाबाद)
दूरभाष : ०१२२-२३४१२०१



नाम : श्री संजीव रूप आर्य २६
पिता का नाम : स्व. श्री रमेशचन्द्र आर्य
जन्म : १३-८-१९६९
प्रचार कार्य : सन् १९९९ से
स्थायी पता : ग्राम-पोस्ट गुधनी, बदायूँ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९९९७३८६७८२/९३१९०७५९७१
चलभाष : ९४११००९९०६



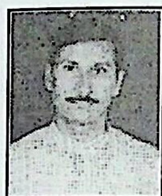
नाम : श्री सुरेश श्रोत्रिय २७
पिता का नाम : श्री हरि शंकर श्रोत्रिय
जन्म : २-४-१९५८
प्रचार कार्य : सन् १९८२ से
स्थायी पता : एम. जी. ४१ जवाहर नगर,
रतलाम म.प्र. ४५७ ००१.
दूरभाष : ०७४१२-२४२७८२
चलभाष : ९३०१२३०४६०



नाम : श्रीमती सुलभा शास्त्री २८
पति का नाम : श्री विजयपाल शास्त्री
जन्म : २०-१-१९८३
प्रचार कार्य : सन् २००३ से
स्थायी पता : शफियाबाद लोटी, ता. हापुड़,
जि. गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९३२१४८८५६०



नाम : श्रीमती स्नेहलता आर्य २९
पति का नाम : श्री अजयपाल सिंह
जन्म : १-७-१९७८
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : मकान नं. २०२, सेक्टर नं. ४५, फरीदाबाद, हरियाणा
चलभाष : ९८१८५५६७३१



नाम : श्री हरी ओम सरल (नन्द किशोर)
पिता का नाम : श्री सालिग राम जी
जन्म : सन् १९७० ३०
प्रचार कार्य : सन् २००६ से
स्थायी पता : ग्रा.पो.देवगढ़, ता.बागली, जि.देवास, म.प्र.
दूरभाष : ०९९९३९८४५९०
चलभाष : ०९४०६६६८७०६



नाम : रुक्मणी आर्य ३१
पिता का नाम : श्री गिरीश चन्द्र जैसवाल
स्थायी पता : साई आवास, पटेल नगर, दशहरा बाग, बाराबंकी (उ.प्र.)
चलभाष : ९३३५६४६५८९/९८३९८२६७३६



नाम : सियाराम निर्भय
जन्म : १३-१०-१९३३
प्रचार कार्य : सन् १९६३ से
स्थायी पता : खेताड़ी मोहल्ला, पो. आरा(भोजपुर), बिहार - ८०२३०१.
दूरभाष : ०६१८२-२४१९४९

भजनोपदेशक सहयोगी



नाम : श्री अभयराम आर्य १
पति का नाम : श्री राम दयाल
जन्म : सन् १९६२
स्थायी पता : ग्रा. अकबरपुर, पट्टी, पो. अमरोहा, जिल्हा - जे. पी. नगर, (उ.प्र.)
चलभाष : ०९७६१०३५१३०



नाम : श्री. अमित दत्त २
पिता का नाम : श्री. सुरेश दत्त आर्य
जन्म : सन् १९८६
प्रचार कार्य : १-१-२००४ से
स्थायी पता : ग्रा.पो. बहादरपुर, जि. बिजनौर, उ.प्र.
दूरभाष : ०१३४१-२४०७१२
चलभाष : ९४५७४०९५९१



नाम : श्री दीपचन्द आर्य ३
पति का नाम : स्व. श्री. सुरजसिंह
जन्म : १-१२-१९५१
प्रचार कार्य : सन् १९७१ से
स्थायी पता : आर्य सदन, इकबालपुर, जनपद, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
चलभाष : ९०१२३५५७८८



नाम : श्री भीष्म आर्य ४
पिता का नाम : श्री शान्ति स्वरूप
जन्म : १३-८-१९७५
प्रचार कार्य : १७-०५-१९८७ से
स्थायी पता : ग्रा.पो. बहादरपुर, जि. बिजनौर, (उ.प्र.)
चलभाष : ०९७६०१२५२१९



नाम : श्री मोहनलाल आर्य ५
पति का नाम : रामसहाय
जन्म : सन् १९३४
प्रचार कार्य : सन् १९६४ से
स्थायी पता : ग्रा. फिरोजपुर, पो. खास,
जि. बुलन्दशहर, उ.प्र.-२०३१४१
चलभाष : ०९७५८४७४६८०

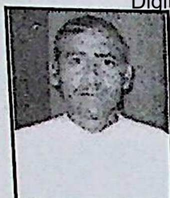
नाम : श्री राजकुमार ६
पिता का नाम : श्री रघुनाथ
स्थायी पता : ग्रा. नरसिंहपुर, पो. ज्ञानसठ,
जि. मुजफ्फरनगर, उ.प्र.
चलभाष : ९२१९७५५७६०



नाम : श्री लेखराज शर्मा ७
पिता का नाम : श्री राधेश्याम
जन्म : २१/८/१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९८८ से
स्थायी पता : सैनी मोहल्ला, जुरहरा, जि. भरतपुर,
राजस्थान
चलभाष : ९८२८७९०८०२



नाम : वेदपाल आर्य ८
पिता का नाम : श्री कालू सिंह आर्य
जन्म : सन् १९६६
प्रचार कार्य : सन् १९८० से
स्थायी पता : बहेडा, जि. मुजफ्फर नगर, उ.प्र.
दूरभाष : ०१३९६-२६५१६९



नाम : श्री. सुभाष आर्य ९
पिता का नाम : श्री. धर्मप्रकाश आर्य
जन्म : अगस्त १९६४
स्थायी पंता : ग्रा.नोजली, पो. नोजल,
जि. मुजफ्फरनगर, उ.प्र.-२४७७७७
चलभाष : ०९७५९३५६४४९



नाम : श्री सुभाषचन्द्र राही १०
पिता का नाम : पं. कुँवर सुखपाल आर्य
जन्म : १५-७-१९६५
प्रचार कार्य : सन् १९९५ से
स्थायी पता : २८८ रामपुरी रुड़की रोड,
मुजफ्फर नगर, उ.प्र. २५१००१.
दूरभाष : ९८९७५८४२६९
चलभाष : ९७६०८९५६७१

दयानन्द वचनामृत

विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्य मत (अर्थात् एकता) हो जाय। विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है।

(सत्यार्थ प्रकाश-अनुभूमिका
एकादश समुल्लास)

दयानन्द वचनामृत

परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुतसा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहितता ईर्ष्या-द्वेष-विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं जैसे मद्य मांस का सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचारितादि दोष बढ़ जाते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश
एकादश समुल्लास)

देव दयानन्द की पीड़ा

विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

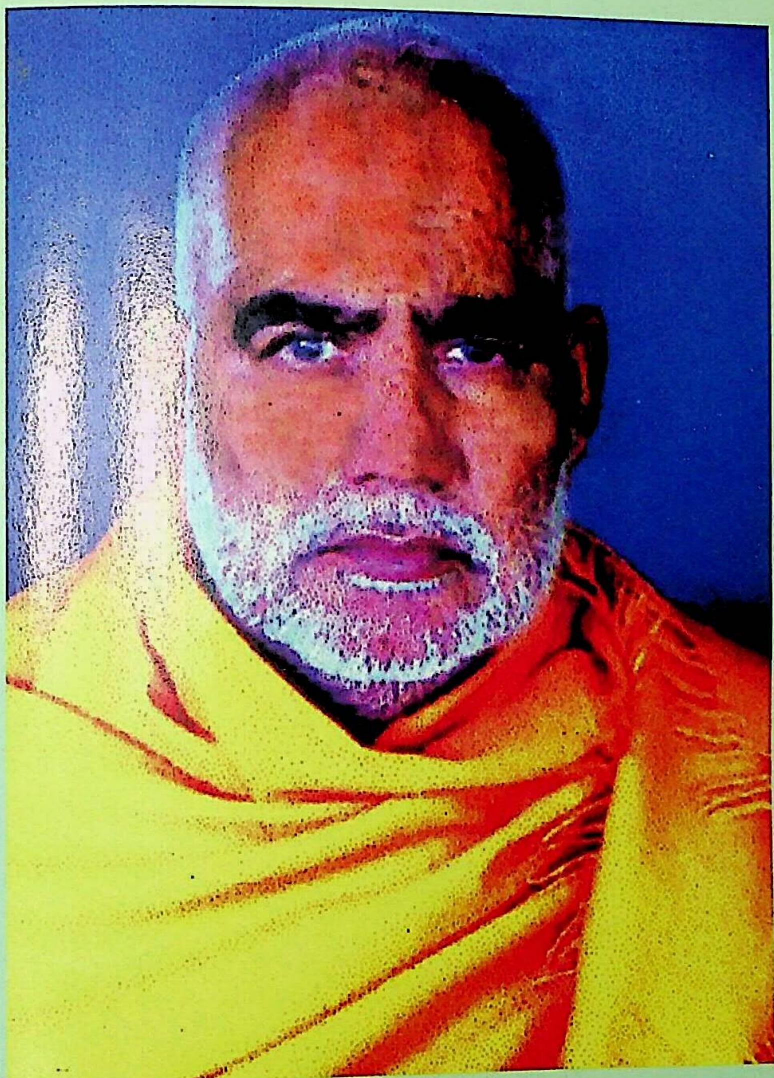
आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया। परन्तु अब तक भी यह रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डूबा मारेगा। उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास)

॥ ओ३म् ॥

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएँ !



स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती

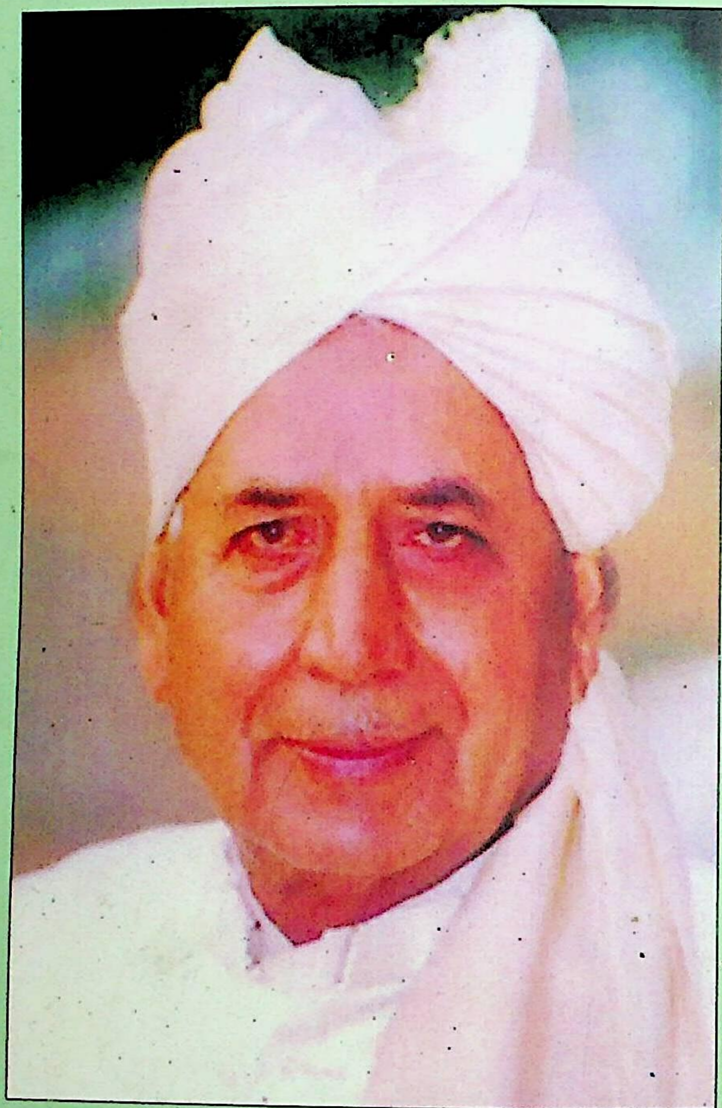
अध्यक्ष

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८)

॥ ओ३म् ॥

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन (२००८) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएँ !



चौधरी मित्रसेन आर्य

अध्यक्ष

परममित्र मानव निर्माण संस्थान, सिन्धु भवन, सेक्टर १४,

रोहतक (हरियाणा)